प्रस्तावित कामराज योजना से भाजपा में मचा हड़कंप

चीन सुधरेगा नहीं, चौकन्ना रहना होगा

नीरज ने लिखा स्वर्णिम इतिहास

सकरनी वॉलगार्ड
WALL PUTTY
Contact: 9810018032
SAKARNI PLASTER INDIA PVT. LTD.

हिन्दी साप्ताहिक

रविवार

दिल्ली

RNI No. DELHIN/2012/44214

मूल्यः 5/-

वर्ष : 12 अंक : 12 पृष्ठ : 16 नई दिल्ली रविवार 3 सितंबर से 9 सितंबर, 2023

अब सूर्य पर भारत फतेह से दुनिया चमत्कृत होगी

ललित गर्ग

चंद्र अभियान की ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय सफलता के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एक नया इतिहास गढ़ने एवं एक और मैदान फतेह करने को तत्पर है और सूरज का अध्ययन करने के लिए संभवतः दो सितंबर, 2023 'आदित्य-एल 1' यानी सूर्य मिशन के प्रक्षेपण की तैयारी कर रहा है। 'आदित्य-एल 1' अंतरिक्ष यान को सौर कोरोना (सूर्य की सबसे बाहरी परतों) के दूरस्थ अवलोकन और एल-1 (सूर्य-पृथ्वी लैग्रेंजियन बिंदु) पर सौर हवा के यथास्थिति अवलोकन के लिए बनाया गया है, इस मिशन की मदद से स्पेस में मौसम की मोबिलिटी, सूरज के तापमान, सोलर स्टॉर्म, एमिशन और अल्ट्रावॉयलेट रेज के धरती और ओजोन लेयर पर पड़ने वाले प्रभावों की स्टडी की जा सकेगी, जिससे मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को सकारात्मक मोड़ देने में सुविधा रहेगी। यह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम

शेष पृष्ठ 6 पर

नकारात्मक राजनीति की पराकाष्ठा

सुशील दीक्षित विचित्र

राहुल गांधी का अडाणी प्रलाप अब जुगुप्सा पैदा करने लगा है । हर मामले में अति करने से नकारात्मक वातावरण बनता है लेकिन राहुल गांधी समझते हैं कि देश के उद्योगपतियों पर हमले करके मोदी को कठघरे में खड़ा कर सकते हैं लेकिन है हर बार कुछ ऐसा होता है कि राहुल अपने बयानों को ले कर खुद न केवल उपहास के पात्र बन जाते हैं बल्कि खुद ही उस कठघरे में खड़े हो जाते जिसमें वे मोदी और उनकी सरकार को खड़ा करना चाहते हैं। अडानी के मामले में भी ऐसा ही है। राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने 2021 में अडानी को सोलर प्लांट लगाने के लिए 1600 हेक्टेअर जमीन दी । इस बारे में पूछे जाने पर राहुल गोलमोल जबाब देते हैं और अगले ही पल फिर अडानी या अंबानी समूह पर हमला करने निकल पड़ते हैं।

लद्दाख में की गयी रैली में भी लद्दाखियों को राहुल यही समझाते नजर आये कि मोदी उनकी जमीने अडानी को दे देंगे । यह बयान राहुल

शेष पृष्ठ 2 पर

'वन नेशन,वन इलेक्शन' सुधार या किसी एक पार्टी की जीत का बनेगा आधार

संदीप ठाकुर

पूरे देश में एक साथ चुनाव। मोदी सरकार ने अपने इस सपने को आकार देने का प्रयास शुरू कर दिए हैं। इसकी संभावनाओं का तलाशने के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अगुवाई में एक समिति का गठन कर दिया गया है। भारतीय इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि देश के प्रथम नागरिक को सरकार द्वारा कोई काम सौंपा गया हो। समिति को जल्द से जल्द रिपोर्ट सौंपने को कहा गया है। ऐसे में सवाल यह है कि आखिर यह एक देश, एक चुनाव क्या है? इससे देश को क्या फायदा होगा? क्या चुनाव आयोग इसके लिए तैयार है?

इस प्रक्रिया में कितना समय लगेगा? क्या तमाम राजनीतिक दल इसके लिए तैयार होंगे? देश भर में एक साथ चुनाव के लिए क्या हमारे पास संसाधन हैं? कमेटी का मकसद दलों, नेताओं के साथ आम लोगों से भी सलाह मशविरा करना है। इसके बाद एक ड्राफ्ट तैयार किया जाएगा। जिसको आधार बना सरकार कानून बनाने के लिए आगे बढ़ेगी और संसद में बिल लेकर आएगी।

शेष पृष्ठ 4 पर

जी-20 नेताओं को आकाश को छूते भारत को दिखायेंगे

आर.के. सिन्हा

आगामी 9-10 सितंबर को राजधानी में जी-20 देशों का शिखर सम्मेलन उस समय आयोजित हो रहा है, जब भारत को अलग-अलग क्षेत्रों में अभूतपूर्व सफलतायें मिल रही है। बेशक, चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग भारतीय अंतरिक्ष की दुनिया में एक गर्व का क्षण है। सैकड़ों वैज्ञानिकों की मेहनत का फल देश को अंततः मिल गया है। चंद्रयान 3 को अंतरिक्ष में पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया गया है। चंद्रयान 3 की कामयाबी से सारा देश गर्व महसूस कर रहा है। इसी तरह से जैवलिन थ्रो में नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतकर देशवसियों को गौरव के फिर से क्षण दिये। वे शायद पहले भारतीय खिलाड़ी हैं जिनसे देश सिर्फ गोल्ड की ही उम्मीद करता

है। वे सारे देश के नायक बन चुके हैं। शायद इसीलिये नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप का गोल्ड मेडल अपने नाम कर लिया। उन्होंने 88.17 मीटर तक जैवलिन फेंका। वे इस तरह वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। नीरज की प्रेरणा के चलते हमारे दो अन्य जैवलिन थ्रोअर क्रमशः किशोर जेना पांचवें और डीपी मनू छठे नंबर पर रहे। खेलों में एथलेटिक्स को सबसे अव्वल स्थान प्राप्त है। खेलों की जननी है एथलेटिक्स। उसी एथलेटिक्स में भारत के हिस्से में ओलंपिक खेलों या वर्ल्ड चैपियनशिप में एकाध बार को छोड़कर कभी कोई बड़ी सफलता नहीं लगी थी। नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक खेलों में जेवलिन थ्रो में

शेष पृष्ठ 5 पर

जी-20 शिखर-सम्मेलन: रूसी दृष्टीकोण

नीलम महाजन सिंह

भारत की राजधानी, नई दिल्ली, जी-20 शिखर सम्मलेन की मेजबानी के लिए तैयार है। इसी बीच एम्बेसडर डेनिस अलीपोव, रूस के भारत में राजदूत ने बहुत भावुकतापूर्ण, रूस की अंतर्राष्ट्रीय विदेश नीति का वर्णन किया है। भारत से डेनिस अलीपोव का दशकों लंबा अनुभव है। डेनिस अलीपोव कैरियर राजनयिक और 'समर्पित भारत विशेषज्ञ' हैं। डेनिस अलीपोव को भारत में रूसी राजदूत नियुक्त किया गया, क्योंकि आने वाले समय में रूस की अन्तरराष्ट्रीय नीति को व्याख्यानवित करने का जटिल कार्य उन्हें सौंपा गया है। वे करिअर डिप्लोमैट् हैं। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, इस सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे। रूसी राजदूत की जुझारू अभिव्यक्ति ने उस रेखा का संकेत दिया है जो उनका पक्ष जी-20 शिखर सम्मेलन में आदान-प्रदान के दौरान अपनाएगा, जहां रूसी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव करेंगें। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने इस सप्ताह की शुरूआत में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत की व शिखर-सम्मेलन में भाग लेने में असमर्थता व्यक्त की क्योंकि वे यूक्रेन में चल रहे 'विशेष सैन्य अभियान' में व्यस्त हैं। रूसी राजदूत डेनिस अलीपोव का कहना है कि 'बाली घोषणा' की भाषा, जिसमें यूक्रेन का एकपक्षीय उल्लेख था, को नई दिल्ली में जी-20 देशों की बैठक में 'सही रूप से व्याख्या करनी होगी'। जी-20 शिखर सम्मेलन से एक सप्ताह पहले, डेनिस अलीपोव ने बहुपक्षीय मंच पर यूक्रेन संकट को सामने लाने के पश्चिमी देशों के प्रयासों के खिलाफ दृढ़ता से कहा कि जी-20 की परंपरा को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक मुद्दों को नहीं उठाया जाना चाहिए। 'दुर्भाग्य से, जी-20 में भारत की अध्यक्षता ने कुछ देशों पर बहुत मजबूत दबाव का अनुभव किया है, जिन्होंने रूस की राय में जी-20 के एजेंडे को हाईजैक कर लिया है व यूक्रेनी संकट को शीर्ष मुद्दों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहे हैं। जी-20 को वैश्विक आर्थिक मुद्दों व वित्तीय संकट पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, लेकिन पिछले साल इस समूह के कुछ सदस्यों द्वारा जी-20 के भीतर राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने का निर्णय लिया गया था, जो रूस को स्वीकार नहीं है। विदेशी संवाददाता क्लब (एफसीसी) में मीडिया से बातचीत के दौरान राजदूत डेनिस अलीपोव ने कहा, अगर किसी बात पर आम सहमति नहीं बनती है, तो बिना सहमति वाले मुद्दों को हटा दिया जाना चाहिए क्योंकि जी-20 में राजनीतिक मुद्दों पर कभी चर्चा नहीं हुई है। रूसी राजदूत ने कहा कि भले ही जी-20 के अधिकांश सदस्य किसी आइटम का समर्थन करते हों और रूस जैसे कुछ सदस्य उससे असहमत होकर दूर खड़े हों, फिर ऐसा आइटम जी-20 के एजेंडे में नहीं रखना चाहिए। 2022 की बाली घोषणा का ज़िक्र करते हुए उन्होंने रूस की अस्वीकृति व्यक्त की व कहा, 'पश्चिम देशों को, बाली के पैरा को बदलने के लिए खुलापन रखना चाहिए, किंतु वे इसे बनाए रखना चाहते हैं' । अलीपोव ने इस बात पर प्रकाश डाला कि रूस 'न्यायसंगत और समान अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था' का समर्थन करता है जैसा कि 'ब्रिक्स और एससीओ समूहों' (BRICS & SCO) के हालिया विस्तार में परिलक्षित होता है। 'भारत का दबदबा बहुत तेजी से बढ़ा है व अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है। इसे वैश्विक राजनीति, संयुक्त राष्ट्र के संबंध में अपनी वैध आवाज व्यक्त करनी होगी। रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UN Security Council) में भारत की पूर्ण सदस्यता का लगातार समर्थन किया है। ऐसे सभी हालिया घटनाक्रम; ब्रिक्स व एससीओ में; जी-20 में ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करते हैं,' राजदूत अलीपोव ने कहा। अलीपोव ने जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए समर्थन व्यक्त किया और कहा कि रूस को उम्मीद है कि शिखर सम्मेलन सफल होगा और अभी तो पीएम नरेंद्र मोदी सरकार ने यूक्रेन युद्ध के समाधान के लिए कोई शांति प्रस्ताव नहीं रखा है। उन्होंने राष्ट्रपति जेलेंस्की के 10-सूत्रीय फॉर्मूले को 'अल्टीमेटम के एक सेट के अलावा कुछ नहीं' कहकर खारिज कर दिया, जिसका रूस समर्थन नहीं करेगा। नाटो व यूरोपियन यूनियन (NATO & EU) ही राष्ट्रपति जेलेंस्की का दुरुपयोग कर अपना हित पूरा कर रहे हैं। एम्बेसडर डेनिस अलीपोव ने दुःख व्यक्त किया कि जब रूस में स्कूल के बच्चों की निर्ममता से हत्या हुई और बच्चों की कब्रें बनाई गईं तब अनेकानेक देश संवेदनहीनता से देखते रहे। रूस के अनेक सैनिक व नागरिकों ने अपनी जानें गवाई हैं। जी-20 की सफलता काफी हद तक उन लोगों की सद्भावना पर निर्भर करती है जो एजेंडे में सर्वसम्मति के मुद्दों पर जोर देते हैं। राजदूत अलीपोव ने कहा, 'हमने जी-20 में भारत द्वारा सामने रखे गए एजेंडे की प्राथमिकताओं का दृढ़ता से समर्थन किया है और हमें उम्मीद है कि नतीजे भारत द्वारा सामने रखे गए एजेंडे को प्रतिबिंबित करेंगें'। अलीपोव ने नई दिल्ली व चीन (बीजिंग) दोनों के मास्को के साथ संबंधों का बचाव किया व उन्हें स्वस्थ बताया। ये तर्क दिया कि उनका देश भारत और चीन के बीच शत्रुता की स्थिति में भी भारत के साथ संबंधों को नहीं छोड़ेगा, तो उन्होंने कहा, 'हम अपने संबंधों का त्याग कभी नहीं करेंगें। किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम के मामले में भारत व चीन के बीच, चाहे वह किसी भी तरह का विकासक्रम हो।' अलीपोव ने कहा, 'रूस को भारत द्वारा की गई कोई बात पसंद नहीं आ सकती है या भारत रूस के अंदर होने वाली घटनाओं से खुश नहीं हो सकता है, लेकिन भारत-रूस संबंध कभी भी किसी भी भू-राजनीतिक परिवर्तन से प्रभावित नहीं हुए हैं।' गलवान घटना के बाद भारत, चीन के बीच बातचीत 'बहुत जटिल' हो गई है, राजदूत अलीपोव। यह भारत व चीन का द्विपक्षीय मुद्दा है, जिसमें रूस हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। अलीपोव ने जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए समर्थन व्यक्त किया व कहा कि रूस को उम्मीद है कि शिखर सम्मेलन सफल होगा व साथ ही यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने यूक्रेन युद्ध के समाधान के लिए कोई शांति प्रस्ताव नहीं रखा है। उन्होंने राष्ट्रपति जेलेंस्की के 10-सूत्रीय फॉर्मूले को 'अल्टीमेटम के एक सेट के अलावा और कुछ नहीं' कहकर खारिज कर दिया, जिसका रूस समर्थन नहीं करेगा। रूस विश्वशक्ति है परंतु भारत के साथ सर्वदा रूस ने दोस्ती निभाई है। लेखिका के प्रश्न पर कि व्लादिमीर पुतिन, महिलाओं में बहुत प्रिय हैं व दिल्ली नहीं आने पर भारतीय महिलाओं का मन उदास है! इस पर अलीपोव बहुत खिलखिला कर हँसे और कहा कि 'अभी आप मेरे व सर्गेई लावरोव से ही प्रसन्नता रखिये, राष्ट्रपति पुतिन अवश्य भारत आयेंगे'! अन्तरराष्ट्रीय कूटनीति एक जटिल विषय है तथा इसके समीकरण बदलते रहते हैं। भारत रूस मित्रता जिन्दाबाद! जी-20 के सभी देशों का भारत में स्वागत व अभिनंदन है।

"राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, इस सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे। रूसी राजदूत की जुझारू अभिव्यक्ति ने उस रेखा का संकेत दिया है जो उनका पक्ष जी-20 शिखर सम्मेलन में आदान-प्रदान के दौरान अपनाएगा, जहां रूसी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव करेंगें। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने इस सप्ताह की शुरूआत में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत की व शिखर-सम्मेलन में भाग लेने में असमर्थता व्यक्त की क्योंकि वे यूक्रेन में चल रहे 'विशेष सैन्य अभियान' में व्यस्त हैं।

(वरिष्ठ पत्रकार, राजनैतिक विश्लेषक, अंतरराष्ट्रीय सामयिक विशेषज्ञ, दूरदर्शन व्यक्तित्व, मानवाधिकार संरक्षण सॉलिसिटर व परोपकारक)

नकारात्मक राजनीति की पराकाष्ठा

पृष्ठ 1 का शेष

की राजनीतिक बुद्धि का थमार्मीटर है । इससे पता चलता है कि वे अपने बयानों से अपने ही लोगों को संकट में दाल देते हैं । तब ऐसे बयानों की लीपापोती करते हुए उनके सिपहसालार उन पंडितों की भूमिका में दिखाई पड़ते हैं जो विद्योत्तमा के सवालों पर कालीदास के मूर्खतापूर्ण इशारों की पांडित्यपूर्ण व्याख्या करते थे । अगर अडानी को अपने राज्य में परियोजनाएं देना पाप है तो ऐसा पाप कांग्रेस की अधिकांश राज्य सरकारें कर चुकी हैं और कर रही हैं । राजस्थान की गहलोत सरकार ने अडानी समूह को सोलर प्लांट लगाने के लिए 1600 हेक्टेअर जमीन दी । यह जमीन मुख्यमंत्री गहलोत ने अपनी अलमारियों से निकाल कर नहीं दी बल्कि उन्हीं किसानों की दी जिनकी जमीन मोदी सरकार द्वारा छीनने का आरोप राहुल देश भर में लगाते घूम रह हैं । छत्तीगढ़ की कांग्रेस सरकार ने तो अडानी समूह के लिए राज्य के दरवाजे दोनों हाथों से खोल दिए । समूह को नौ कोल माइंस आवंटित की गयीं । इसके अलावा तीन पावर प्लांट और तीन सीमेंट फैक्ट्री भी अडानी समूह के खाते में है । कर्नाटक में सरकार बनाने के तुरंत बाद राज्य के उद्योग मंत्री ने घोषणा की कि कर्नाटक के दरवाजे अडानी के लिए लिए खुले हैं । केरल में समूह के पास विझिंजम बंदरगाह है इसे मिला कर राज्य में अडानी समूह ने 7400 करोड़ का निवेश किया है । बंगाल में अडानी समूह का 35 हजार करोड़ रुपए का , आंध्र में 60 हजार करोड़ , उड़ीसा में 57 हजार करोड़ का , तमिलनाडु में 4500 करोड़ का निवेश है । गौतम अडानी का कहना है कि उनका बिजनेश देश के 22 राज्यों में फैला है जिसमें सभी पर बीजेपी का शासन नहीं है ।

यह भी एक तथ्य है कि अडानी या अम्बानी समूह के लिए किसने देश के दरवाजे खोले ? राजनीतिक आलोचक भी यह सवाल उठा रहे हैं कि अडानी या अंबानी ग्रुप पिछले नौ साल में ही नहीं बढ़ा । दोनों को मनमोहन सिंह की उस आर्थिक नीति के तहत लाया गया था जिसका आज भी कांग्रेसी गुणगान करते नहीं थकते । अब राहुल एन्ड कम्पनी की आँखों में इसलिए चुभ रहे हैं कि उनकी सत्ता नहीं है जिससे उनमें भारी ईर्ष्या है और इसी ईर्ष्या के तहत वे भारत के अर्थतंत्र , सुरक्षा तंत्र , न्याय तंत्र सभी पर प्रहार करते घूम रहे हैं । इसी भावना के तहत कभी वे किसानों को भड़काते हैं कि तुम्हारी जमीने मोदी छीन कर अडानी को दे देंगे और कभी लद्दाखियों को भड़काते हैं की तुम्हारी जमीने छीन ली जायेंगी । इन मिथ्या आरोपों से राहुल गांधी कांग्रेस को भले ही कोई लाभ पहुंचाने में असफल रहे हों लेकिन उन्होंने अर्थव्यवस्था को

हमेशा हानि पहुंचाने की कोशिश की और रक्षा मामलों में शत्रु देशों की भाषा बोली । ऐसे हमले करते समय वे भूल जाते हैं कि राफेल मामले में अनर्गल आरोपों के लिए उन्हें अदालत से माफी भी मांगनी पड़ी थी ।

मोदी पर कैसे भी आरोप लगाने के लिए राहुल गांधी स्वतंत्र हैं लेकिन आरोप लगाते समय उन्हें कांग्रेस का विगत भी याद रखना चाहिये । जिस लद्दाख में राहुल गांधी निर्भय हो कर भाषण दे रहे हैं वहां यदि आज शांति है तो धारा 370 हटने के कारण । इस धारा को हटाने का कांग्रेस विरोध कर चुकी है । राहुल गांधी की ओर से यह भी कहा जा चुका है कि केंद्र में कांग्रेस की सरकार आयी तो धारा 370 फिर लागू कर दी जाएगी । कांग्रेस के शासनकाल में राजनीतिक रैलियां करना कल्पना से भी परे था । अपने दस साल के शासन काल में राहुल गांधी ने लद्दाख जाने का एक बार भी साहस नहीं किया । तब लद्दाख भारत से कटा हुआ राज्य था। धारा 370 के कारण लद्दाख भारत में होते हुए भी नहीं था । यही स्थिति कश्मीर की थी जहां भारत के पैसों पर पाकिस्तान परस्त अलगाववादियों और आतंकवादियों के समर्थकों को पाला जाता था और जहां भारत की बात करना मृत्यु दंड दिए जाने वाला गुनाह हुआ करता था। इसलिए जनता को भड़काने बरगलाने वाली कोशिशे बेकार हैं । राहुल गांधी को ऐसी राजनीति से परहेज करना चाहिए था लेकिन लगता नहीं कि वे ऐसा कुछ करेंगे । ऐसा करते रहने का एक बड़ा कारण यह है भी है कि कांग्रेस के पास न कोई मुद्दा है और न ही कोई कार्य योजना । कांग्रेस के थिंक टैंक की भी यही स्थिति है । खांटी मोदी विरोध से वह आगे नहीं बढ़ पा रहा है । यह भी कहना गलत नहीं होगा कि थिंक टैंक की थिंकिग राहुल गांधी की थिंकिंग को ही फॉलो करती है । वह उनकी सोंच से बाहर नहीं जा सकता इसलिए कांग्रेस शासित राज्यों में अडानी को निरंतर भारी भारी ठेके भी दिए जा रहे हैं और सवाल उठने पर कांग्रेसी ही अडानी मामले में ही जेपीसी की मांग करने लगते हैं ।

राहुल गांधी ऐसा तब भी करते हैं जब कि पिछले नौ वर्षों में नकारात्मक राजनीति करते उन्हें पराजय ही मिली । जिन राज्यों में कांग्रेस नौ साल पहले लीड रोल में होती थी वहाँ आज क्षेत्रीय दलों की पिछलग्गू वाली स्थिति में है । यही है नौ साल का वह हासिल जो मोदी पर व्यक्तिगत हमला कर के पाया गया है । बेहतर होता कि राहुल गांधी लद्दाखियों को यह बताते कि उनके विकास के लिए वे और उनकी कांग्रेस क्या कर सकती है । उन्हें वे योजनायें बताते जो उनके क्षेत्र की बेहतरी और जीवन स्तर को ऊँचा उठाने वाली होती । इससे ही वे पार्टी का भला कर सकते हैं ।

प्रस्तावित कामराज योजना से भाजपा में मचा हड़कंप

गोपेंद्र नाथ भट्ट

भारतीय जनता पार्टी की प्रस्तावित कामराज योजना से भाजपा में हड़कंप मचा हुआ है और कई नेता अपने भविष्य को लेकर चिन्ता में पड़ गए है। राजस्थान में पिछलें विधान सभा चुनाव में प्रदेश में सबसे अधिक वोटों से चुनाव जीतें भाजपा के कद्दावर नेता और पूर्व विधान सभा अध्यक्ष नब्बे वर्षीय कैलाश मेघवाल ने हाल ही एक बयान दिया कि मैंने अपने राजनीतिक जीवन में कभी पार्टी से टिकट नही माँगा लेकिन जब भी मुझे टिकट दिया गया तों मैं हमेशा चुनाव जीता। कुछ दिनों पहलें भी उन्होंने बयान दिया था कि मैं इस बार नब्बे हजार मतों से चुनाव जीत कर दिखाऊँगा।

भाजपा का शीर्ष नेतृत्व इन दिनों पाँच प्रदेशों में होने वाले विधान सभा चुनावों के साथ ही अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा आम चुनावों पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहा है तथा इसके लिए पार्टी कामराज योजना की तर्ज पर आजादी के सौ वर्ष पूरे होने पर 2047 तक का रोड मेप बना कर युवाओं को आगे लाकर संसद में उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाने की दिशा और रणनीति के आधार पर गम्भीरता से काम कर रही है। इस रणनीति के अन्तर्गत भाजपा कई फार्मूला तय कर आगे बढ़ना चाहती है।

इन फार्मूला के आधार पर पार्टी का शीर्ष नेतृत्व पार्टी में सत्ता पर लम्बे समय से काबिज नेताओं और अपने विरोधियों पर लगाम लगा कर उन्हें मार्ग से हटाने की नीति पर भी काम कर रहा है। पार्टी का मानना है कि देश में 65 प्रतिशत युवा है और बार-बार एक ही व्यक्ति अथवा घराना के लोगों के चुने जाने से संगठन में काम करने वाले युवा और कार्यकर्ता अपनी बारी का इंतजार करते-करते बूढ़े हो जाते है और उनमें निराशा के भाव आते हैं,इसलिए पार्टी में एक फार्मूला बनाना जरुरी है ताकि पार्टी और समाज के हर वर्ग के योग्य व्यक्तियों को समान अवसर मिलें।

पिछलीं आठ अगस्त को नई दिल्ली में भाजपा की संसदीय समिति की बैठक में यह संकेत दिए गए कि आने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा 150 नए उम्मीदवारों को टिकट दिया जा सकता है और इसमें युवाओं को तरजीह दी जायेंगी । साथ ही दो से अधिक बार चुनाव जीत चुके सांसदों को अब चुनाव नही लड़वा कर संगठन में भेजा जाएगा और राज्यसभा में भी अस्सी प्रतिशत सांसद विषय विशेषज्ञ यानि एक्सपर्ट होंगे।अपवाद को छोड़ कर दो बार सांसद रह चुके नेताओं को अब राज्य सभा में नही भेजा जायेगा।

भाजपा में इन दिनों युवाओं को प्रतिनिधित्व देने की इन चचाओं के चलते कई सांसद और विधायक जो कि दो बार या इससे अधिक बार चुनाव जीत चुके हैं गहरी चिन्ता में आ गए है। भाजपा इन सभी वरिष्ठ नेताओं को संगठन में जिम्मेदारी देने का मानस बना रही है। इसके अलावा कुछ को राज्यपाल बनाए जाने की भी संभावना जताई जा रही है।पार्टी कई सांसदों की अच्छी छवि नही होने के कारण 2024 के लोकसभा के चुनाव में पार्टी को होने वाले नुकसान की आशंका को ध्यान में रखकर उन्हें चुनाव नहीं लड़ाने का फैसला भी लें सकती है ! भाजपा के

“ भाजपा का शीर्ष नेतृत्व इन दिनों पाँच प्रदेशों में होने वाले विधान सभा चुनावों के साथ ही अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा आम चुनावों पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहा है तथा इसके लिए पार्टी कामराज योजना की तर्ज पर आजादी के सौ वर्ष पूरे होने पर 2047 तक का रोड मेप बना कर युवाओं को आगे लाकर संसद में उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाने की दिशा और रणनीति के आधार पर गम्भीरता से काम कर रही है। इस रणनीति के अन्तर्गत भाजपा कई फार्मूला तय कर आगे बढ़ना चाहती है।

अंदर खाने राजनीतिक सूत्र बताते है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह,राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और संगठन महामंत्री बीएल संतोष की टीम ने इस बार मौटे तौर पर यह मानस बना लिया है कि वर्ष 2023 के विधानसभा और वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में अधिकांश नए लोगों को उतारा जाना चाहिये। हालाँकि इस कारण कई दिग्गजों के सामने टिकट की समस्या पैदा हो जाएगी । यह भी कहा जा रहा है कि राजस्थान, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ सहित अन्य कई प्रदेशों में अधिकांश सांसदों के टिकट काटे जा सकते हैं । सूत्रों के अनुसार विधानसभा में भी यदि यही नीति अपनाई गई तो बहुत सारे ऐसे नेता भी चुनाव मैदान से बाहर हो जाएंगे जो कि आने वाले दिनों के लिए कई सपने पाले हुए हैं। मौजूदा लोकसभा में भाजपा कर दो सांसदों की उम्र 80 से 90 के मध्य है। वही 110 सांसद ऐसे हैं जिनकी उम्र 60 से 70 के बीच है और 13 सांसद ऐसे हैं जिनकी उम्र 30 से 40 के मध्य है। भाजपा के 135 लोकसभा सदस्य पहली बार और 97 लोकसभा सदस्य दूसरी बार चुनाव जीते हैं।कुछ सांसद तो ऐसे हैं जो कि आठ बार भी चुनाव जीते हुए हैं । इसमें मेनका गांधी, संतोष गंगवार और डॉ वीरेंद्र कुमार आदि ने सात बार चुनाव जीते हैं। भाजपा में 6 बार चुनाव जीतने वालों में पंकज चौधरी, अनंत हेगड़े, रमेश जिगाजिनगी, फग्गन कुलस्ते, वीएस प्रसाद, बृजभूषण शरण सिंह, राधामोहन सिंह, मनसुख वासवा आदि शामिल है।

इसी प्रकार पाँच बार चुनाव जीतने वालों में जी एस बासवराज, निहालचंद चौहान, रावसाहेब दानवे, जय प्रकाश, एस वाई नायक, जुअल ओराम, प्रह्लाद पटेल, राव इंद्रजीत सिंह, साक्षी महाराज, भानुप्रताप वर्मा, राम कृपाल यादव आदि शामिल है। पार्टी में चार बार चुनाव जीतने वालों में रमा देवी, संजय धोत्रे, पीसी गौडर, एसपीएस बघेल, डीवीएस गौड़ा, प्रह्लाद जोशी, छेदी पासवान, आरपी रूडी, अरविंद शर्मा, जीएम सिद्देश्वरा, दुष्यंत सिंह, गणेश सिंह, केवी सिंह, राकेश सिंह, सुशील सिंह, वीरेंद्र सिंह, संगीता सिंहदेव, अनुराग ठाकुर, राजेश वर्मा आदि शामिल है। इसके अलावा तीन बार चुनाव जीतने वालों में राजेंद्र अग्रवाल, सुभाष बहेरिया, सुदर्शन भगत, सीएस दरबार, निशिकांत दुबे, वरुण गांधी, संजय जयसवाल, दर्शना जरदोश, एनवी खाचडिया, नलिन कतील, रामशंकर कठेरिया, अर्जुन मेघवाल, पीसी मोहन, जगदंबिका पाल, कमलेश पासवान, डीएम पटेल, एलबी पटेल, सीआर पाटिल, बीवाई राघवेंद्र, अशोक रावत, किरेन रिजीजू, एमआरएल शाह, पशुपति सिंह, यूपी सिंह, किरीट सोलंकी, नरेंद्र सिंह तोमर, एससी उदासी आदि नेता गण शामिल है। भाजपा का मानना है कि इन वरिष्ठ सांसदों को पार्टी के संगठन,मार्ग दर्शक मण्डल अथवा राजकीय लाभ के पदों आदि के साथ ही राज्यों के राज्यपाल और निगम बोर्ड आयोगों के अध्यक्ष बना उनकी सेवाएँ ली जा सकती है ताकि युवाओं को संसद और विधान सभाओं आदि में अधिक प्रतिनिधित्व दिया जा सकता हैं!

शोषित वर्ग की आवाज बुलंद करना लेखन का प्रथम दायित्व

तनवीर जाफरी

कलम के सिपाही के नाम से प्रसिद्ध तथा कहानीकार के रूप में भारतीय समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि -'लिखते तो वे लोग हैं जिनके अंदर कुछ दर्द है,अनुराग है.लगन है विचार है, जिन्होंने धन और भोग विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है वह क्या लिखेंगे ? मुंशी प्रेमचंद देश की स्वाधीनता से 11 वर्ष पूर्व ही 8 अक्टूबर 1936 को मात्र 56 वर्ष की आयु में ही इस दुनिया को अलविदा कह गए थे। उनके दौर के पराधीन भारत में निश्चित रूप से लेखनी की जरूरतें कुछ और ही रही होंगी। परन्तु उस समय भी उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से देश के शोषित,वंचित व पीड़ित वर्ग की आवाज बुलंद करने की पूरी कोशिश की। उनकी कहानियों की मार्मिकता उसकी भाषा व शैली ऐसी होती थी कि कोई भी सहृदयी पाठक उन्हें पढ़कर अश्कबार हो जाया करता था। लेखन तो आज भी हो रहा है और मुंशी प्रेमचंद के समय से कई गुना अधिक लेखक आजकल सक्रिय हैं। परन्तु वर्तमान लेखन प्रायः पक्षपात पूर्ण,विद्वेष पूर्ण,पूंजीवाद को बढ़ावा देने वाला,सत्ता की चाटुकारिता करने वाला तथा लेखन जैसे पवित्र व ईमानदाराना पेशे को भी धन और भोग विलास का माध्यम बनाने वाला बनकर रह गया है। पहले जहाँ लेखक एक अलग वर्ग हुआ करता था वहीँ आजकल प्रधानमंत्री से लेकर सत्ता से जुड़ा शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो जो लेखक बना न बैठा हो। सब का एक ही काम है। या तो प्रधानमंत्री के कसीदे पढ़ना या सत्ता का

गुणगान करना। आश्चर्य तो इस बात का है कि जिनलोगों के पास प्रधानमंत्री,मंत्री व राजयपाल जैसे पदों की जिम्मेदारी हो और जनता के करोड़ों रुपए उनपर खर्च होते हों उन्हें लेखन का समय आखिर मिलता ही कैसे है ? परन्तु यह सब कुछ इसी एकमात्र उद्देश्य के तहत किया जा रहा है ताकि सत्ता व सत्ताधीशों के गुणगान के शोर शराबे में शोषित,वंचित व पीड़ित वर्ग की आवाज को दबाने का प्रयास किया जाये। वास्तविक व जिम्मेदाराना लेखन की जरूरतों को महसूस करते हुये ही शायद मुंशी प्रेमचंद ने लखनऊ में 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के स्थापना सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। उनका मानना था कि ' साहित्यकार का मकसद केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है- उसका दरजा इतना न गिराइये। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सचाई है.' उनके दौर में भी साम्प्रदायिकता, नफरत फैलाने और देशवासियों को धर्म व जाति के नाम पर बाँटने का काम कर रही थी। वे इन खतरों के विराट स्वरूप से भी शायद उसी समय बाखबर भी थे। तभी वे स्वराज के रास्ते में साम्प्रदायिक नफरत को बहुत बड़ी बाधा मानते थे। प्रेमचंद साम्प्रदायिकता को समाज का एक ऐसा कोढ़ समझते हैं जो अपना छोटा सा दायरा बना कर सभी को उससे बाहर निकाल देती है.' उस दौर में प्रेमचंद की बातें आज कितनी प्रासंगिक हैं उनके इन विचारों से पता चलता है। वे कहते थे कि 'साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है. उसे अपने असली रूप में निकलते शायद लज्जा आती है, इसलिए वह संस्कृति का खोल ओढ़कर आती है। हिन्दू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है, मुसलमान अपनी संस्कृति को। दोनों ही अभी तक अपनी-अपनी संस्कृति को अछूती समझ रहे हैं। यह भूल गए हैं, कि अब न कहीं मुस्लिम संस्कृति है, न कहीं हिन्दू संस्कृति और न कोई अन्य संस्कृति। 'अब संसार में केवल एक ही संस्कृति है, और वह है आर्थिक संस्कृति ...'इसी तरह संस्कृति और धर्म के घालमेल को लेकर भी उनका मत स्पष्ट था। वे कहते थे , 'संस्कृति का धर्म से कोई संबंध नहीं। आर्य संस्कृति है, ईरानी संस्कृति है, अरब संस्कृति है लेकिन ईसाई संस्कृति और मुस्लिम या हिन्दू संस्कृति नाम की कोई चीज नहीं है।' प्रेमचंद की मानवतावादी सोच को आगे बढ़ाने वाले व उन्हीं के द्वारा सिंचित 'प्रगतिशील लेखक संघ' का तीन दिवसीय 18 वां राष्ट्रीयअधिवेशन पिछले दिनों मध्य प्रदेश की 'संस्कारधानी' के नाम से प्रसिद्ध हरी शंकर परसाई के शहर जबलपुर में संपन्न हुआ। देश के लगभग सभी प्रांतों से आये हुए लेखक,चिंतक,विचारक,कवि व कलाकारों ने इस अवसर पर देश के समक्ष मौजूद साम्प्रदायिकता,जातिवाद व पूंजीवाद जैसी चुनौतियों के प्रति अपनी गहन चिंता व्यक्त की। संघ के सदस्यों ने जबलपुर घोषणा पत्र जारी किया जिसमें स्वाधीनता आंदोलन द्वारा संजोयी गई संविधान संरक्षित समता, समानता और धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र के मूल्यों को बचाने का संकल्प लिया। अधिवेशन में शायद ही कोई वक्ता ऐसा रहा हो जिसने साम्प्रदायिकता की आग में जलते हुए मणिपुर और हरियाणा के मेवात के नूह क्षेत्र में फैलाई गयी साम्प्रदायिक हिंसा का उल्लेख न किया हो।'प्रगतिशील लेखक संघ' ने घोषणा पत्र में हिंदुत्ववादी राजनीति के पूंजीवादी संस्थानिक और निगमीय शक्तियों के साथ बन चुके सीधे गठबंधन पर भी अपनी गहन चिंता जताई। देश की अस्सी करोड़ से अधिक जनता न्यूनतम जीवन यापन सुविधाओं के लिए संघर्षरत है। शिक्षा एवं चिकित्सा संबंधी दायित्वों से राज्य ने अपना पल्ला झाड़ लिया है। मध्यवर्ग भी अनावश्यक और अत्याधिक करारोपण व पेंशन सुविधाओं से वंचित होने से परेशान हाल है। बेरोजगारी अपने चरम पर है, आर्थिक असमानता की खाई और गहरी हुई है। वर्तमान पीढ़ी का भविष्य भी संकट में है। संविधान द्वारा संकल्पित कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का परित्याग कर समूचे देश को एक व्यावसायिक परियोजना में तब्दील किया जा रहा है। न्यायिक व चुनाव आयोग सरीखी अन्य संवैधानिक संस्थाओं को निशाने पर लेकर उन्हें कमजोर किया जा रहा है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बड़े हिस्से को निष्प्रभावी और पालतू बनाया जा चुका है। सोशल मीडिया भी अब कड़े नियंत्रण में है। साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था का अनुगमन कर वैकल्पिक तथा स्वतंत्र नीतियों वाले राज्य की भूमिका का परित्याग कर दिया गया है। और इन सब मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने के लिये गोरक्षा, लव जेहाद, हिजाब, गंगा, गीता सरीखे भावनात्मक मुद्दों को उछाला जा रहा है। समाज को धर्म, जाति व निजी विश्वासों के आधार पर विभक्त करने के सारे हथकंडे अपनाये जा रहे हैं, जिस पर सत्ता की तरफ से कोई अंकुश तो दूर, प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थन ही नजर आता है। असहमति और प्रतिरोध की आवाजों को अर्बन नक्सल टुकड़े टुकड़े गैंग,अवार्ड वापसी गैंग सरीखे नकारात्मक नामों से लांछित करते हुए उनके बारे में तमाम झूठ फैलाए जा रहे हैं। जिस तरह शोध संस्थाओं, उच्च शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों आदि में ज्ञानार्जन व स्वतंत्र बौद्धिक संवाद का वातावरण प्रदूषित कर उन्हें संकीर्ण, एकल प्रभुत्ववादी सोच में ढालने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही भारतीय समाज की बहुभाषी, बहुलतावादी व समावेशी संस्कृतिक सम्पदा की अनदेखी कर उसे एकांगी बनाया जा रहा है। बुद्ध, बसवन्ना और कबीर की परंपरा को मिटाया जा रहा है। गांधी, नेहरू व अम्बेडकर सरीखे राष्ट्र नायकों की छवि को संदर्भ च्युत कर धूमिल किया जा रहा है। ऐसे में निःसंदेह शोषित ,वंचित व पीड़ित वर्ग की आवाज बुलंद करना साहित्य लेखन का प्रथम दायित्व बन जाता है।

राजस्थान में परिवर्तन यात्राओं के सहारे भाजपा

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान भाजपा में आपसी गुटबाजी खुलकर उजागर हो रही है। विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित सभी बड़े नेता अपने को फ्रंट में लाने के प्रयास में लगे हुयें हैं। वसुंधरा समर्थको को मानना है कि उनको ताकत दिखाने का अब अंतिम अवसर है। यदि इस बार चूक गए तो फिर मुख्य धारा की राजनीति में पिछड़ जाएंगे। वसुंधरा समर्थक कई विधायकों को तो इस बात का डर भी सता रहा है कि यदि मैडम राजनीतिक रूप से कमजोर होती है तो उनकी टिकट भी खतरे में पड़ सकती है। इसीलिए वसुंधरा के सभी समर्थक जोर दे रहे हैं की मैडम पार्टी आलाकमान से दो टूक बात करें।

पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व भी राजस्थान में भाजपा की फूट को लेकर पूरी तरह सतर्क है। भाजपा आलाकमान जानता हैं कि राजस्थान भाजपा में सभी नेताओं के अपने-अपने गुट बने हुए हैं। जिसके चलते सभी एक दूसरे की टांग खींचाई करने में लगे हुए हैं। भाजपा ने अपने प्रादेशिक नेताओं की आपसी खेतान के चलते ही प्रदेश के चार क्षेत्रों में निकली जाने वाली परिवर्तन संकल्प यात्रा का नेतृत्व किसी भी बड़े नेता को नहीं सौंपा है। भाजपा चारों यात्राओं का नेतृत्व सामूहिक रूप से करने का निर्णय लिया है। ताकि यात्रा के बहाने कोई नेता खुद को बडा नहीं दिखा सके। यात्रा के संयोजन की जिम्मेदारी पार्टी ने दूसरी पंक्ति के नेताओं को दी है ताकि बिना गुटबाजी के यात्राओं का समापन हो सके।

ऐसे में अब पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, अर्जुन मेघवाल, प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी, नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, उपनेता प्रतिपक्ष सतीश पूनिया सहित किसी भी अन्य नेता के बीच मुख्यमंत्री बनने की होड़ खत्म हो गई है। अब अगर पार्टी सत्ता में आती है तो शीर्ष नेतृत्व ही तय करेगा कि मुख्यमंत्री कौन बनेगा।

"विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित सभी बड़े नेता अपने को फ्रंट में लाने के प्रयास में लगे हुयें हैं। वसुंधरा समर्थको को मानना है कि उनको ताकत दिखाने का अब अंतिम अवसर है। यदि इस बार चूक गए तो फिर मुख्य धारा की राजनीति में पिछड़ जाएंगे। वसुंधरा समर्थक कई विधायकों को तो इस बात का डर भी सता रहा है कि यदि मैडम राजनीतिक रूप से कमजोर होती है तो उनकी टिकट भी खतरे में पड़ सकती है। इसीलिए वसुंधरा के सभी समर्थक जोर दे रहे हैं की मैडम पार्टी आलाकमान से दो टूक बात करें।

भाजपा की ओर से निकाली जाने वाली परिवर्तन यात्रा को लेकर चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक नारायण पंचारिया ने बताया कि भाजपा प्रदेश में आगामी दो सितंबर से परिवर्तन यात्रा की शुरूआत करेगी। यह यात्रा चार अलग-अलग स्थानों और दिशाओं से प्रदेश भाजपा के सामूहिक नेतृत्व में 8,982 किलोमीटर का सफर तय कर प्रदेश की 200 विधानसभा क्षेत्रों में जाएगी। परिवर्तन यात्रा के दौरान किसान चैपाल, युवा मोटरसाईकिल रैली, महिलाओं की बैठक और दलित चैपालें भी आयोजित होंगी।

पहली परिवर्तन संकल्प यात्रा दो सितंबर को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के नेतृत्व में त्रिनेत्र गणेश मंदिर रणथंबौर सवाईमाधोपुर से प्रारंभ होगी। जिसमें भाजपा का प्रदेश नेतृत्व मौजूद रहेगा। प्रथम परिवर्तन यात्रा 18 दिनों में 1847 किलोमीटर चलकर भरतपुर संभाग, जयपुर संभाग एंव टोंक जिले की 47 विधानसभा क्षेत्रों में जायेगी। इस यात्रा के संयोजक भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी व सह संयोजक भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष जितेन्द्र गोठवाल होंगे। दूसरी परिवर्तन यात्रा तीन सितंबर को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में बेणेश्वर धाम डूंगरपुर से प्रारंभ होगी। दूसरी यात्रा के दौरान 19 दिनों में 2433 किलोमीटर चलकर उदयपुर संभाग, कोटा संभाग और भीलवाडा जिले की कुल 52 विधानसभा क्षेत्रों में जायेगी। इस यात्रा का संयोजक प्रदेश उपाध्यक्ष चुन्नीलाल गरासिया को व सह संभाग प्रभारी प्रमोद सांभर सह सयोंजक के दायित्व का निर्वहन करेंगे।

तीसरी परिवर्तन यात्रा चार सितंबर को केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के नेतृत्व में रामदेवरा जैसलमेर से प्रारंभ होगी। यह यात्रा 18 दिनों में 2574 किलोमीटर चलकर जोधपुर संभाग, अजमेर व नागौर जिले की कुल 51 विधानसभा क्षेत्रों में जायेगी। इस यात्रा के संयोजक राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत को बनाया गया है। जोधपुर सह-संभाग प्रभारी सांवलाराम देवासी सहसंयोजक होंगे। चौथी परिवर्तन यात्रा पांच सितंबर को केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी के नेतृत्व में गोगामेडी हनुमानगढ से प्रारंभ होगी। यह यात्रा 18 दिनों में 2128 किलोमीटर चलकर बीकानेर संभाग, झुंझुनू, सीकर और अलवर जिले की कुल 50 विधानसभा क्षेत्रों में जाएगी। इस यात्रा का संयोजक पूर्व केन्द्रीय मंत्री सीआर चौधरी व भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्रवण बगडी को सह संयोजक बनाया गया है।

इन सभी यात्राओं के लिए एक टोली का गठन किया गया है। जिसमें मीडिया, सोशल मीडिया, आईटी एंव प्रचार-प्रसार सभा के प्रमुख बनाए गए हैं। प्रदेश की गहलोत सरकार के राज में भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण एंव कुशासन के कारण प्रदेश की जनता त्रस्त है। इसलिए कांग्रेस की इस जनविरोधी सरकार को उखाड फेंकने के लिए जनता ने संकल्प ले लिया है।

विधानसभा चुनाव से पहले निकाली जा रहीं भाजपा की चारों परिवर्तन यात्राओं को केंद्रीय स्तर के नेता रवाना करेंगे। भाजपा ने किसी एक चेहरे को इन यात्राओं की जिम्मेदारी नहीं दी है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही उठ रहा है कि प्रदेश स्तर की यात्राओं में भाजपा आलाकमान ने किसी भी स्थानीय नेता को जिम्मेदारी क्यों नहीं दी। इसका मुख्य कारण कारण पार्टी में व्याप्त गुटबाजी को माना जा रहा है। किसी एक नेता के चेहरे को आगे करने से पार्टी के अन्य नेता नाराज हो सकते हैं। इससे बचने के लिए पार्टी ने यह कदम उठाया है। पार्टी आलाकमान नहीं चाहता कि चुनाव से पहले किसी तरह के मतभेद सामने आएं।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भाजपा की राष्टीय उपाध्यक्ष हैं। विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी आलाकमान ने उन्हें कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं दी है। इससे राजे और उनके समर्थक नाराज बताए जा रहे हैं। परिवर्तन यात्रा को लेकर भी पार्टी ने राजे को कोई बड़ी जिम्मेदारी नहीं दी है। इससे पहले हुए भाजपा के कई कार्यक्रम में राजे शामिल नहीं हुईं थीं। कुछ दिनो पूर्व गंगापुरसिटी में अमित शाह के कार्यक्रम में भी वसुंधरा राजे शामिल नहीं हुयी जबकि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला उस कार्यक्रम में उपस्थित थे। ऐसे में अभी तक इस पर संशय बना हुआ है कि वसुंधरा राजे परिवर्तन संकल्प यात्रा में शामिल होंगी या नहीं। इसकी तस्वीर आने वाले दिनों में साफ होगी।

भाजपा आलाकमान विधानसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चेहरा बना रहा है। मगर पार्टी के अंदरखाने मची जंग पर अभी तक नियंत्रण नहीं कर पाया है। वसुंधरा राजे दो बार मुख्यमंत्री रहने से उनका आज भी लोगों पर काफी प्रभाव है। यदि पार्टी आलाकमान चुनाव में उनकी उपेक्षा करेगा तो यह पार्टी के लिए घाटे का सौदा भी साबित हो सकता है। फिलहाल वसुंधरा राजे अभी चुप्पी साधे हुए हैं तथा समय का इंतजार कर रही है। अंदर खाने वसुंधरा राज्य ने अपनी राजनीति का अगला प्लान तैयार कर रखा है। इसलिए वह अपने धुर विरोधियों से मिलकर उनसे राजनीतिक मतभेद समाप्त कर रही हैं। राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कांग्रेस की फिर से सरकार बनाने के लिए पूरा जोर लगाए हुए हैं। कांग्रेस आला कमान के प्रयासों से सचिन पायलट भी गहलोत के साथ जुट गए हैं। ऐसे में भाजपा अपनी अंदरुनी फूट पर कितना काबू कर पाती है। इसी पर राजस्थान में भाजपा की अगली सरकार बनने का भविष्य टिका है।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

'वन नेशन,वन इलेक्शन' सुधार या किसी एक पार्टी की जीत का बनेगा आधार

पृष्ठ 1 का शेष

क्यों जरूरत है 'वन नेशन,वन इलेक्शन' की

भारत उन देशों में हैं जहां चुनाव कराना बेहद खचीर्ला माना जाता है। वन नेशन, वन इलेक्शन के पक्ष में सबसे बड़ी दलील यही दी जा रही है कि इससे चुनावी खर्च में कमी आएगी। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के मुताबिक साल 2019 में हुए आम चुनावों पर 55,000 हजार करोड़ रुपये का खर्च आया था जो 2016 में अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनावों से भी अधिक है। पिछले लोकसभा चुनावों में हर वोटर पर आठ डॉलर का खर्च आया था। जबकि देश में आधी से ज्यादा आबादी रोजाना तीन डॉलर से भी कम पर गुजारा करने को मजबूर है। ऐसे में चुनावों पर भारी-भरकम खर्च को लेकर सवाल उठने ठीक हैं। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के मुताबिक 1998 से 2019 के बीच चुनावी खर्च में छह गुना बृद्धि हुई है।1998 में यह राशि 9,000 करोड़ रुपये थी जबकि 2019 में 55,000 करोड़ रुपये पहुंच गई।

चुनावी खर्च होगा ?

पीएम मोदी कह चुके हैं कि एक देश, एक चुनाव से देश के संसाधनों की बचत होगी। इसके साथ ही विकास की गति भी धीमी नहीं पड़ेगी। 2019 के लोकसभा चुनावों में 60,000 करोड़ रुपये खर्च किए गए थे। इस राशि में चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों द्वारा खर्च की गई राशि और चुनाव आयोग ऑफ इंडिया द्वारा चुनाव कराने में खर्च की गई राशि शामिल है। वहीं, 1951-1952 में हुए लोकसभा चुनाव में 11 करोड़ रुपये खर्च हुए थे। इस संबंध में लॉ कमीशन का कहना था कि अगर 2019 में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराए जाते हैं तो 4,500 करोड़ का खर्चा बढ़ेगा। ये खर्चा ईवीएम की खरीद पर होगा लेकिन 2024 में साथ चुनाव कराने पर 1,751 करोड़ का खर्चा बढ़ेगा। इस तरह धीरे-धीरे ये अतिरिक्त खर्च भी कम होता जाएगा। इसके अलावा, एक साथ चुनाव कराने के समर्थकों का तर्क है कि इससे पूरे देश में प्रशासनिक व्यवस्था में दक्षता बढ़ेगी।

क्या हैं चुनौतियां?

एक साथ चुनाव कराने के कई चुनौतियां भी हैं। इसके लिए राज्य विधानसभाओं के कार्यकाल को लोकसभा के साथ जोड़ने के लिए संवैधानिक संशोधनों की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के साथ-साथ अन्य संसदीय प्रक्रियाओं में भी संशोधन करने की आवश्यकता होगी। एक साथ चुनाव कराने को लेकर क्षेत्रीय दलों का प्रमुख डर यह है कि वे अपने स्थानीय मुद्दों को मजबूती से नहीं उठा पाएंगे क्योंकि राष्ट्रीय मुद्दे केंद्र में हैं। इसके साथ ही वे चुनाव खर्च और चुनाव रणनीति के मामले में राष्ट्रीय दलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में भी असमर्थ होंगे। साल 2015 में आईडीएफसी संस्थान की तरफ से की गई स्टडी में पाया गया कि यदि लोकसभा और राज्यों के चुनाव एक साथ होते हैं तो 77 प्रतिशत संभावना है कि मतदाता एक ही राजनीतिक दल या गठबंधन को चुनेंगे। हालांकि, अगर चुनाव छह महीने के अंतराल पर होते हैं, तो केवल 61 प्रतिशत मतदाता एक ही पार्टी को चुनेंगे। देश के संघवाद के लिए एक साथ चुनावों से उत्पन्न चुनौतियों की भी आशंका है।

संविधान में करने होंगे कम से कम 5 संशोधन

1999 में विधि आयोग ने भी अपनी एक रिपोर्ट में इसका समर्थन किया था। अगस्त 2018 में एक देश-एक चुनाव पर लॉ कमीशन की रिपोर्ट भी आई थी। लॉ कमिशन की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया था कि देश में दो फेज में चुनाव कराए जा सकते हैं। विधि आयोग ने कहा था कि एक साथ चुनाव कराने के लिए कम से कम पांच संवैधानिक सिफारिशों की आवश्यकता होगी। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने संसद में बताया था कि देशभर में एक साथ चुनाव कराने के लिए संविधान में संशोधन करना होगा। इसके लिए संविधान के अनुच्छेद- 83, 85, 172, 174 और 356 में संशोधन का जिक्र किया गया था।

एक साथ चुनाव हो चुके हैं कई बार

1967 तक भारत में राज्य विधानसभाओं और लोकसभा के लिए एक साथ चुनाव होना आम बात थी। आजादी के बाद वर्ष 1952, 1957, 1962 और 1967 में लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ-साथ हो चुके हैं। वर्ष 1967 के बाद कई बार लोकसभा और विधानसभाएं अलग-अलग समय पर भंग होती रहीं, जिस कारण यह क्रम टूट गया। कुछ विधानसभाओं को 1968 और 1969 में और 1970 में लोकसभा को समय से पहले भंग कर दिया गया। एक दशक बाद, 1983 में चुनाव आयोग ने एक साथ चुनाव कराने का प्रस्ताव रखा। हालांकि, आयोग ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि तत्कालीन सरकार ने इसके खिलाफ फैसला किया था। 1999 के विधि आयोग की रिपोर्ट में भी एक साथ चुनाव कराने पर जोर दिया गया था। हाल ही में भारतीय जनता पार्टी ने जोर दिया। बीजेपी ने 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए अपने चुनावी घोषणापत्र में कहा था कि वह राज्य सरकारों के लिए स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक साथ चुनाव कराने का एक तरीका विकसित करने का प्रयास करेगी।

क्या चुनाव आयोग एक साथ चुनाव कराने में समक्ष है?

2022 में तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त सुशील चंद्र ने कहा था कि चुनाव आयोग एक साथ चुनाव कराने में सक्षम है। हालांकि, उन्होंने कहा कि इस विचार को लागू करने के लिए संविधान में बदलाव की जरूरत है और यह संसद में तय किया जाना चाहिए। दिसंबर 2022 में, विधि आयोग ने देश में एक साथ चुनाव कराने के प्रस्ताव पर राष्ट्रीय राजनीतिक दलों, भारत के चुनाव आयोग, नौकरशाहों, शिक्षाविदों और एक्सपर्ट्स सहित हितधारकों की राय मांगी थी।

इंडिया गठबंधन की मुंबई में हुई बैठक सम्पन्न

विनोद कुमार सिंह

भारतीय राजनीति के लिए सितम्बर का मास विशेष माह साबित होगा। सितम्बर का यह माह किस राजनीति गुट को केन्द्र मे सता के सिंघासन पर आसीन होने का सरताज पहने के लिए शुभ होगा या किसी राजनीतिक गठबन्धन के गुटो पर सितम ढायेगा। यह अभी अतीत के गर्भ में है। इसके लिए हमे व आपको अभी इंतजार करना पड़ेगा। सितम्बर माह के प्रथम दिन से ही भारतीय राजनीति ने विश्व के राजनीतिज्ञों व राजनीति पंडितों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। माह के पहली व दुसरी तारीख को विपक्षी दलों का इण्डिया की बैठक व्यवसायिक राजधानी मुम्बई में सम्पन्न हो गई है। वही सता पक्ष की एन डी ए के घटक दलो की बैठक यही हुई। वही इसी सप्ताह के अंत में देश की राजधानी दिल्ली में जी -20 का सम्मेलन 9 -10 सितम्बर आयोजित की जा रही है। उनकी तैयारियाँ इन दिनों जोरों पर है। वैश्विक राजनीतिक का मानना है। यह बैठक वैश्विक अर्थ व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिया जा सकता है। इसी बीच केन्द्र सरकार के प्रह्लाद जोशी संसदीय कार्य मंत्री नें संसद के 18 से 22 सितम्बर तक विशेष सत्र बलाने की घोषणा कर दी।

इस विशेष सत्र के दौरान पाँच बैठक होगी।सुत्रों के मुताबिक इस विशेष सत्र के दौरान 10 से अधिक महत्वपूर्ण विधयेक पेस किये जायेगें। इनमें से वन नेशन , वन एलेक्सन पर चर्चा होने की प्रबल संभावना है। कानुन मंत्री अर्जून राम मेघवाल नें इस संदर्भ में एक समिति बनाई जायेगी जिसके अध्यक्ष के रूप पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ गोविल के नाम की घोषणा करते हुए कहा कि इस समिति में अमित साह गृह मंत्री अधीर रंजन चौधरी समेत 8 सदस्य होगें।

केन्द्र में सता के सिंघासन पर आसीन भाजपा व एन डी ए के घटक दलों के द्वारा लिए गए इस निणर्य को सरकार जनता के लिए कल्याणकारी बता रही है वही विपक्षी दलों के गठबन्ध इण्डिया के घटक दलों के नेताओं ने इस तरह के फैसले पर प्रशन चिन्ह लगाते हुए कहा कि केन्द्र की भाजपा व एन डी ए की सरकार विपक्षी राजनीतिक दलों एकता व इण्डिया के जनता में लोकप्रिय व समर्थन से भयभीत हो गई है।पंत प्रधान व प्रधान सेवक जी इतना घबरा गये है उन्हे सन 2024 में अपनी हार दिख रही है।जो सरकार अपनी लगभग 10 वर्षो के कार्य काल संसद का विशेष सत्र बुलाना पड़ गया है।आप को बता दे कि विगत सप्ताह देश की व्यवसायिक राजधानी मुम्बई में 26 विपक्षी दलों के गठबंधन आई.एन. डी.आई एह्य(इंडिया) में आयोजित की गई। इस बैठक में आगामी वर्ष 24 के लोकसभा चुनाव से जुड़े कई मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई।

इसके बाद इंडिया ह्यगठबंधनह्न के शीर्ष नेताओं ने प्रेस प्रतिनिधि से मुखातिब हुए। जिसमें शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) नेता आदित्य ठाकरे ने प्रस्तावों को पढ़कर सुनाया। इंडिया गठबन्धन के सभी घटक दल अपना संचार और मीडिया रणनीति और चुनाव अभियान जुड़ेगा। भारत और जीतेगा इंडिया की थीम पर लड़ेंगे।

इस बैठक में चार समितियां बनाने का फैसला किया गया है। इंडिया गठबंधन की कोऑर्डिनेशन समिति में केसी वेणु गोपाल, शरद पवार, स्टालिन, संजय राउत, टी राजा, तेजस्वी यादव, अभिषेक बनर्जी, राघव चड्ढा, जावेद अली खान को जगह दी गई है।

इसके अलावा ललन सिंह, हेमंत सोरेन, महबूबा मुफ्ती और उमर अब्दुल्लाह को भी कमेटी में जगह दी गई है। आई.एन.डी.आई.ए (इण्डिया) के तीन पारा के प्रस्ताव में कहा गया है "हम, इंडिया के विभिन्न दल, लोकसभा का अगला चुनाव जहां तक संभव हो,एक साथ मिलकर लड़ने का संकल्प लेते हैं।विभिन्न राज्यों में सीट के बंटवारे की व्यवस्था तुरंत शुरू होगी और विचार-विमर्श की सहयोग वाली भावना के साथ यथाशीघ्र पूरी की जाएगी।

> **सितम्बर का यह माह किस राजनीति गुट को केन्द्र मे सता के सिंघासन पर आसीन होने का सरताज पहने के लिए शुभ होगा या किसी राजनीतिक गठबन्धन के गुटो पर सितम ढायेगा। यह अभी अतीत के गर्भ में है। इसके लिए हमे व आपको अभी इंतजार करना पड़ेगा। सितम्बर माह के प्रथम दिन से ही भारतीय राजनीति ने विश्व के राजनीतिज्ञों व राजनीति पंडितों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।**

इस प्रस्ताव के अनुसार"हम, इंडिया के विभिन्न दल, लोगों की चिंता और महत्व के मामलों पर देश के विभिन्न हिस्सों में जल्द से जल्द सार्वजनिक रैलियाँ आयोजित करने का संकल्प लेते हैं।'प्रस्ताव के अंत में कहा गया है, "हम, इंडिया के विभिन्न दल, विभिन्न भाषाओं में *"जुड़ेगा भारत,जीतेगा इंडिया"* थीम के साथ अपनी संबंधित संचार और मीडिया रणनीतियों और मुहिमों का समन्वय करने का संकल्प लेते हैं ।'

प्रस्ताव में सबसे नीचे इंडिया के दलों का नारा "जुड़ेगा भारत, जीतेगा इंडिया" लिखा है.

इस दौरान राहुल गांधी ने कहा, "मुझे भरोसा है कि इंडिया गठबंधन बीजेपी को आसानी से हराएगा ।उन्होंने कहा - "इस मंच पर बैठी सारी पार्टियां यदि एकजुट रहती हैं,तो हमें हराना नामुमकिन है।मैं देख रहा हूं कि इंडिया गठबंधन के सभी दलों ने उदारता दिखाई है।हम सबमें थोड़ा बहुत मतभेद है,लेकिन इसे दूर किया जाएगा।कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, "हमने जो तय किया है,उस प्रस्ताव पर काम करेंगे।गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई जैसे मुद्दों को उठाएंगे।ईडी,सीबीआई जैसी संस्थाओं का गलत इस्तेमाल हो रहा है।ऐसा कभी नहीं हुआ। मैं 55 साल से राजनीति में हुँ।ऐसा कभी नहीं देखा । "खड़गे बोले, "बिना हमें बताए संसद का विशेष सत्र बुला रहे हैं।मणिपुर जल रहा था चीन ने जब जमीन हड़प ली,कोरोना चल रहा था,नोटबंदी के वक्त, प्रवासी मजदूर जब परेशान थे, तब संसद का सत्र नहीं बुलाया।आहिस्ता,आहिस्ता तानाशाही की ओर जा रहे हैं।नीतीश कुमार ने कहा कि "आप सबको मालूम है कि आज तीसरी बैठक हो गई।आप लोगों को बता दिया है कि किन किन चीजों पर सहमति बन गई है।अब हम लोग विभिन्न जगहों पर जाकर लोगों को संबोधित करेंगे।अब जो केंद्र में हैं,वो हारेंगे।यह तय हो गया है।मीडिया पर ही कब्जा कर लिया है।ये कम करते हैं और ज्यादा छपते हैं।लालू यादव ने पीएम मोदी को घेरने से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को याद करते हुए अपनी बात रखी।उन्होंने कहा, ह्लमुझे काफी प्रसन्नता हुई कि विभिन्न दलों के नेता एकजुट हो गए हैं।पहले हम एक नहीं होते थे,जिसका फायदा नरेंद्र मोदी को हुआ।उन्होंने भाजपा का मतलब समझाया।भा माने भारत,ज का मतलब जलाओऔर पा माने पार्टी.

लगातार लड़ाई लड़ते लड़ते आज हम इस मुकाम पर पहुंचे हैं।पहले पटना,फिर बंगलुरु और आज मुंबई. क्अब हम सब में सहमति बन गई है।हम राहुल गांधी को विश्वास दिलाते हैं कि हम सब एक हैं और एक मिलकर लड़ेंगे ।अब सीट शेयरिंग की बात शुरू होगी।हम लोग अपना नुकसान करके भी इंडिया को जिताएंगे और मोदी को हराएंगे ।ह्वलालू यादव ने एनसीपी चीफ शरद पवार को आश्वस्त करते हुए लिखा -हम शरद पवार से भी कहते हैं कि डटे रहिएगा और अपनी पार्टी को मजबूत रखिएगा । दिल्ली के मुख्य मंत्री अरविन्द केजरीवाल ने कहा "ये जो इंडिया एलायंस है,वो केवल 26 या 28 दलों का एलायंस नहीं है।बल्कि देश के 140 करोड़ लोगों का एलायंस है।"हमें दुख होता है कि ये जो मोदी सरकार है,वो देश की सबसे करप्ट सरकार है. हम तीन चार दिनों से पढ़ रहे हैं कि विदेशों में खबर छप रहे हैं कि भारत की सरकार केवल एक आदमी के लिए काम कर रही है. इसे सुनकर दुख होता है।आज लोगों की आमदनी नहीं है।युवा पढ़कर बेरोजगार हैं।इससे ज्यादा अहंकारी सरकार कभी नहीं रही.

बहुत बहुत बड़ी ताकतें इस इंडिया एलायंस को तोड़ने की कोशिशों में लगेगी।नेताओं के बारे में बताया जाएगा कि इनके बीच झगड़े हो रहे हैं,लेकिन ऐसा नहीं है।यह बताकर खुशी हो रही है कि सभी दलों ने विभिन्न तरह की ज़िम्मेदारियां ली हैं।ह्व

विपक्षी दलों की इण्डिया की अग्नि परीक्षा उस समय होगी जब लोक सभा चुनाव में गठबन्ध के राजनीति दलों ने जो कुछ रणनीति बनाई है सभी सीटों पर विपक्षी दलों के गठबन्धन अथार्त आई एन डी आई ए(इण्डिया) का एक उम्मींद वार होगा।अथार्त आपस में एकसीटों के बंटवारों को लेकर शक व शंका जताई जा रही है। वही गठबन्ध के शीर्ष नेतृत्व को भरोसा है कि माह के अंत तक शीटों के बँटवारा का कार्य हो जायेगा।

पृष्ठ 1 का शेष

जी-20 नेताओं को आकाश को छूते भारत को दिखायेंगे

गोल्ड मेडल जीतकर साबित कर दिया था कि भारत के खिलाड़ी एथलेटिक्स में भी किसी से कम नहीं हैं। हमारे शतरंज के युवा खिलाड़ी रमेशबाबू प्रज्ञानंदा वर्ल्ड चैंपियन बनने से जरा सा के लिये रह गये। उन्हें शतरंज वर्ल्ड कप के फाइनल में हार मिली। पर उन्होंने संकेत दे दिये कि वे भविष्य के वर्ल्ड चैंपियन हैं।

वर्ल्ड मिलेट वर्ष में जी-20 के मेहमानों को निश्चित तौर पर मिलेट के पकवान भी परोसे जायेगें क अब इस सकारात्मक माहौल में जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। अब भारत आयोजन के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रगति मैदान में पुनर्विकसित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र (आईईसीसी) का उदघाटन कर दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला समेत जी- 20 देशों के सभी प्रमुख राष्ट्राध्यक्ष राजधानी नई दिल्ली में आ रहे हैं। पर रूस के राष्ट्रपति पुतिन की कमी खलेगी। वे यूक्रेन युद्ध के कारण सम्मेलन में नहीं आ रहे।

भारत में 1983 के बाद जी- 20 सम्मेलन पहला बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा है। तब से भारत लगभग बदल चुका है। अब भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन चुका है। कुछ समय पहले भारत ब्रिटेन को पछाड़कर विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। अब अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी की ही अर्थव्यवस्था हमारे से आगे है। जी-20 देशों के सम्मेलन में भाग लेने के लिए आने वाले नेताओं को यह तो पता ही होगा कि भारत का सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र लगातार आग बढ़ रहा है। वह वित्त वर्ष 2021-22 में 15.5 फीसदी की वृद्धि के साथ 227 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इस दौरान हुई 15.5 फीसदी की वृद्धि पिछले एक दशक के किसी भी वर्ष में हुई वृद्धि में सबसे अधिक है। भारत से संबंध रखने वाले आई टी पेशेवरों की सारी दुनिया भर में धूम है। आई टी सेक्टर भारत की तस्वीर बदल रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि जी-20 के नेताओं को भारत में अपनापन मिलेगा और अपने देश के प्रतीक भी मिलेंगे। उदाहरण के रूप में अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन को लेकर खबरें आ रही हैं वे और कुछ अन्य जी-20 देशों के राष्ट्राध्यक्ष भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, (पूसा) भी जायेंगे। जाहिर है, वहां पर उन्हें कृषि क्षेत्र में भारत की लंबी छलांग की विस्तार से जानकारी मिलेगी। उन्हें पूसा में अपने देश के महान कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग की कुछ फोटो भी लगी मिलेंगी। पूसा के किसी अधिकारी को बाइडेन को बताना होगा अगर आज भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्म निर्भर हो चुका है तो इसका श्रेय अमेरिका के महान कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग और उनके साथी कृषि वैज्ञानिकों को देना होगा। वे भारत में हरित क्रांति के जनक थे। नॉर्मन बोरलॉग की सरपरस्ती में हुए अनुसंधानों के चलते भारत में भूख को शिकस्त दी। उन्होंने बीमारियों से लड़ सकने वाली गेहूं की एक नई किस्म विकसित की थी। इसके पीछे उनकी यह समझ थी कि अगर पौधे की लंबाई कम कर दी जाए, तो इससे बची हुइ ऊर्जा उसके बीजों यानी दानों में लगेगी, जिससे दाना ज्यादा बढ़ेगा, लिहाजा कुल फसल का उत्पादन बढ़ेगा।

जी-20 देशों के अधिकतर नेताओं के लिए गांधी जी को श्रद्धा सुमन पेश करने के लिये जाना किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं होगा। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइस इनासियो लूला डिसिल्वा राजघाट 4 जून, 2007 को आये थे। सबको उम्मीद थी कि लूला राजघाट से 15-20 मिनट में विदा हो जायेंगे, पर यह नहीं हुआ। वे राजघाट में करीब 40 मिनट तक रहे। राजघाट से जाते हुये उन्होंने विजिटर्स बुक में लिखा कि 'मैं शांति के दूत महात्मा गांधी की समाधि पर आकर अपने को बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूं। गांधी के जीवन का उन पर गहरा प्रभाव रहा है।' वे फिर से राजघाट जा सकते हैं।

जापान के प्रधानमंत्री किशिदा फुमियो को भी दिल्ली में अपने देश के बहुत सारे प्रतीक मिलेंगे। उनके पूर्ववर्ती शिंजो अबे जब भी राजधानी आए तो वे यहां रहने वाले जापानी नागरिकों से भी मिले। वे अपनी 2014 की नई दिल्ली यात्रा के समय वसंत कुंज में स्थित जापानी स्कूल के बच्चों से भी मिले थे। दिल्ली में जापानी राजनयिकों और दूसरे जापानी नागरिकों के बच्चों के लिए जापानी स्कूल खोला गया था। दिल्ली, गुरुग्राम और नोएडा में तीन हजार से अधिक जापानी नागरिक रह रहे हैं। ये मारुति, होंडा सिएल कार, होंडा मोटरसाइकिल, फुजी फोटो फिल्मस, डेंसो सेल्ज लिमिटेड, डाइकिन श्रीराम एयरकंडशिंनिंग, डेंसो इंडिया लिमिटेड जैसी कपनियों में काम करते हैं। ये भगवान बुद्ध के अनुयायी तो हैं ही। ये भारतभूमि को गौतम बुध की भूमि होने के कारण ही पूज्नीय मानते हैं। ये मानते हैं कि भगवान बौद्ध का जीवन समाज से अन्याय को दूर करने के लिए समर्पित था। उनकी करुणा भावना ने ही उन्हें विश्व भर के करोड़ों लोगों के हृदय तक पहुंचाया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि नई दिल्ली में होने वाला जी-20 शिखर सम्मेलन यादगार बनकर रहेगा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

राष्ट्रहित में जरूरी है धर्म के चोले में छुपे अधर्मियों की पहचान करना

निर्मल रानी

जिस भारतवर्ष में समाज का एक बड़ा वर्ग धार्मिक मान्यताओं का हवाला देते हुये जीव हत्या का मुखर विरोधी हो उसी देश में धार्मिक उन्माद के नाम पर इंसानों की सरेआम हत्यायें की जाने लगी हैं, लोगों को पीट पीट कर मार दिया जाता है। घर व बस्तियां फूंकी जाने लगी हैं। वदीर्धारी जवान जिनपर अपने भारतीय नागरिकों की सुरक्षा का जिम्मा है वही धर्म के आधार पर लोगों की पहचान कर उन्हें सरकारी शस्त्र से गोली मरने लगे हैं। अध्यापक अपने छात्रों में धर्म के आधार पर भेद करने लगे,मंदिर की पानी की टोंटी से मुसलमान बच्चे के पानी पी लेने पर उसे पीटा गया,मुस्लिम महिला के बलात्कारियों की पैरवी व उनका महिमामंडन होने लगा है।

गत दस वर्षों में इस तरह का भयावह व अशांत वातावरण बनाने में देश के जहां बिकाऊ व सत्ता की खुशामद परस्ती के लिये समर्पण कर चुके मीडिया की अहम भूमिका है वहींदेश भर में इस वातावरण को बनाने में साधू वेशधारियों का भी अहम किरदार है। इसमें कोई संदेह नहीं कि धर्म के मर्म को समझने वाला कोई भी किसी भी धर्म का संत फकीर इंसानों को एक दूसरे के खून का प्यासा बनाने के लिये नहीं उकसा सकता। कोई भी सच्चा संत त्याग, तपस्या, प्रेम सद्भाव की ही बात करता है। परन्तु यह भी पौराणिक सत्य है कि रावण भी सीता हरण करने के लिये साधू के वेश में ही भिक्षा मांगने आया था। यानी रावण को पता था कि उसके वास्तविक रूप को देखकर सीता सचेत हो जाएँगी और उसका मकसद पूरा नहीं होगा लिहाजा साधु वेश में सीता को भी आसानी से धोखा दिया जा सकता है। हालांकि उन्माद फैलाने वाले साधू वेश धारियों की रावण से तुलना भी नहीं की जा सकती क्योंकि वह एक प्रकाण्ड ज्ञानी था।

वही सिलसिला आज भी जारी है। तमाम अज्ञानी,अर्धज्ञानी, सत्ता द्वारा प्रायोजित,धन वैभव व सत्ता के लालची व शोहरत के भूखे लोग स्वयंभू महंत व महामंडलेश्वर बने बैठे हैं और दिन रात धार्मिक उन्माद फैला रहे हैं। उधर टी आर पी व धनार्जन के नशे में डूबा मीडिया ऐसे ही पाखंडियों व समाज विभाजक तत्वों को तवज्जोह देकर इन्हें हीरो बना देता है। और बेरोजगारी व मंहगाई से व्याकुल जनता ऐसे साधू वेशधारियों को धार्मिक व धर्म हितैषी समझकर इनके पीछे झुण्ड की तरह खड़ी हो जाती है और इनके उकसाने पर उन्माद व हिंसा फैलाने में देर नहीं लगाती।उदाहरण के तौर पर गजियाबाद के समीप डासना के देवी मंदिर के महंत नरसिंहानंद सरस्वती को पहले गाजियाबाद जिले में भी कोई नहीं जानता था। परन्तु जब उनके मंदिर के बाहर लगे प्याऊ से एक मुसलमान लड़का पानी पी रहा था और मंदिर के कुछ लोगों ने मंदिर से पानी पीने के चलते उसकी पिटाई की। उसकी वीडिओ बनाई और उसे वायरल भी किया। उसके बाद मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती का चेहरा सामने आया जिन्होंने इस अमानवीय कृत्य का खुलकर समर्थन किया। आज वे गोदी मीडिया की बदौलत स्थापित 'फायरब्रांड हिंदू संत' बन चुके हैं। मोनू मानेसर,शंभु रैगर जैसे हत्यारे स्वयं को हिन्दू धर्म के आदर्श के रूप में स्थापित कर रहे हैं। कोई धार्मिक उन्माद के नाम पर लोगों को तलवार और त्रिशूल बेचने के वीडिओ जारी कर रहा है। बड़े बड़े संतों यहाँ तक कि शंकराचार्यों की आपत्ति व आलोचना के बावजूद बाबा बागेश्वर शास्त्री जैसे नवोदित स्वयंभू संत हिन्दू राष्ट्र निर्माण की आड़ में अपना भविष्य वाणी का धंधा चला रहे हैं। तो कई राष्ट्रवाद के नाम पर अपना व्यवसायिक साम्राज्य स्थापित किये बैठे हैं।

"हरियाणा के प्राचीन तीर्थ स्थल आदि बद्री के महंत स्वामी विनय स्वरूप ब्रह्मचारी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हरियाणा पर लगे 'नूह के कलंक 'को धोने का शानदार प्रयास किया। स्वामी विनय स्वरूप ब्रह्मचारी के आह्वान पर एक तिरंगा रैली निकली गयी जिसमें उनके ऋषिकुलम में शिक्षा धारण करने वाले बच्चों व पास के गांव के मदरसों के बच्चों ने तथा अन्य तमाम हिन्दू मुस्लिम लोगों ने पूरे उत्साह से एक साथ शिरकत की। सभी ने मिलकर भारत माता की जय का गगनचुंबी जयघोष किया।

परन्तु देश के अधिकांश संत व स्थानधारी संत जो वास्तव में मानवतावादी संत हैं वह सब धर्मों व आस्थाओं का सम्मान करते हैं। वे हिंसा,हत्या आगजनी के लिये अपने भक्तों को प्रोत्साहित नहीं करते। उनका रहन सहन भी साधारण रहता है और वे ज्ञानवान भी होते हैं। वे जी जान से गोवंश की सेवा भी करते हैं और लोगों में परस्पर प्रेम व सद्भाव भी सांझा करते हैं। वे उन्मादियों की भीड़ के साथ नहीं बल्कि सद्भावना के पक्षधर लोगों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। वे दूसरों में कमियां निकालकर स्वयं को महान बनाने पर विश्वास नहीं करते बल्कि अपनी कमियों को दूर कर स्वयं को बड़ा बनाने की सोच रखते हैं। वे वेदों व उपनिषदों पर चर्चा परिचर्चा करते हैं। दूसरों के साथ चर्चा में ज्ञानार्जन व ज्ञानवर्धन दोनों ही करते हैं। जबकि उन्मादी अर्धज्ञानी केवल सुनाना जानते हैं सुनना नहीं। पिछले दिनों जब हरियाणा जैसा देश का सबसे शांतिप्रिय राज्य कुछ ऐसे ही साम्प्रदायिकता वादियों की घिनौनी साजिश का शिकार हुआ और मेवात क्षेत्र के नूह व आसपास के कई इलाकों में साम्प्रदायिकता के शोले भड़कने लगे उस समय इसी हरियाणा के अनेक साधु संतों ने शांति प्रेम व सद्भाव की मशाल रोशन करने की कोशिश की।

हरियाणा के प्राचीन तीर्थ स्थल आदि बद्री के महंत स्वामी विनय स्वरूप ब्रह्मचारी जोकि आदि बद्री में ही अपने अत्यंत सीमित संसाधनों से एक बड़ी गौशाला संचालित करते हैं और साथ ही भक्तों से प्राप्त दान सेवा से ही अनेक गरीब बच्चों के लिये ऋषिकुलम के नाम से स्वैच्छिक संस्था चलाकर उन्हें संस्कारित भी करते हैं। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हरियाणा पर लगे 'नूह के कलंक 'को धोने का शानदार प्रयास किया। स्वामी विनय स्वरूप ब्रह्मचारी के आह्वान पर एक तिरंगा रैली निकली गयी जिसमें उनके ऋषिकुलम में शिक्षा धारण करने वाले बच्चों व पास के गांव के मदरसों के बच्चों ने तथा अन्य तमाम हिन्दू मुस्लिम लोगों ने पूरे उत्साह से एक साथ शिरकत की। सभी ने मिलकर भारत माता की जय का गगनचुंबी जयघोष किया। संतों के संरक्षण में निकली गयी इस तरह की हिन्दू मुस्लिम संयुक्त रैली ही वास्तव में सच्चे भारत की सच्ची तस्वीर पेश करती है। दरअसल महंत स्वामी विनय स्वरूप ब्रह्मचारी जैसे अनेक सच्चे संत ही हिन्दू धर्म के वास्तविक प्रतिनिधि स्वीकार करने के योग्य हैं। जहां ऐसे संतों को राष्ट्रहित में व्यापक समर्थन व सम्मान दिये जाने की जरुरत है वहीँ धर्म के चोले में छुपे राष्ट्र विभाजक अधर्मियों की पहचान करना भी बेहद जरूरी है।

अब सूर्य पर भारत फतेह से दुनिया चमत्कृत होगी

पृष्ठ 1 का शेष

में एक और मील का पत्थर होगा। इस प्रक्षेपण के बाद अमरीका, जर्मनी और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद भारत सूर्य के पास उपग्रह भेजने वाला चौथा देश बन जाएगा। आदित्य एल-1 को पृथ्वी-सूर्य प्रणाली की ऑर्बिट के पांच बिंदुओं में से एक लैग्रेंज-1 में स्थापित किया जाएगा। यहां सूर्य पर ग्रहण के दौरान भी नजर रखी जा सकती है। यह पॉइंट पृथ्वी से 15 लाख किमी. दूर है। निश्चित ही चंद्रयान-3 के 3.84 लाख किमी. के सफर के मुकाबले आदित्य एल-1 का सफर कहीं ज्यादा चुनौती एवं संघर्षपूर्ण होगा।

दुनियाभर के वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने में जुटे हैं। जिस सौरमंडल में हम रहते हैं, उसे समझने के लिए सूर्य को जानना जरूरी है। सूर्य की ऊर्जा का अध्ययन धरती पर नहीं किया जा सकता। इसलिए दुनिया की दूसरी अंतरिक्ष एजेंसियों की तरह इसरो भी सूर्य के पास जाकर अध्ययन करना चाहता है। उसका पहला सूर्य अभियान सूर्य के कोरोना, प्रकाश मंडल, क्रोमोस्फीयर, सौर उत्सर्जन, सौर तूफानों और कोरोनल मास इजेक्शन के अध्ययन के साथ-साथ सूर्य की संपूर्ण इमेजिंग के नए द्वार खोल सकता है। लगातार चमकने वाला सूर्य, जहां ऊर्जा के लिए निरंतर विस्फोट होते रहते हैं, हमेशा से रहस्य का विषय रहा है। लेकिन ये विस्फोट कब होंगे और इसके प्रभाव क्या होंगे, इसकी सटीक जानकारी धरतीवासियों को नहीं है। ऐसे में इस टेलीस्कोप का एक उद्देश्य इनकी स्टडी करना है। वैज्ञानिकों का मानना है कि मिशन के तहत अलग-अलग तरह के डाटा को जुटाकर ऐसी व्यवस्था बनाई जा सकेगी जिससे धरती को होने वाले नुकसान के बारे में पहले से अलर्ट किया जा सकेगा। इस अभियान की कामयाबी इसरो के लिए अंतरिक्ष में एक और अहम छलांग होगी। इससे अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी भी बढ़ेगी, जो कि फिलहाल सिर्फ दो फीसदी है। इसमें वृद्धि के लिए इसरो को उसकी महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप सरकार से हरसंभव मदद मिलनी चाहिए।

नया भारत एवं सशक्त भारत निर्मित करने की अनेक बहुद्देश्यीय एवं बहुआयामी योजनाएं आजादी के अमृतकाल में आकार लेने के लिये उजावली हैं, उन्हीं योजनाओं में अंतरिक्ष के अनुसंधान एवं अध्ययन से जुड़ी योजनाओं में से 'आदित्य-एल 1' एक बड़ी परियोजना है, जो सूर्य की गतिशीलता और उसके पास के मौसम की समझ में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। सूर्य का नाम आदित्य भी है, अतः इस नाम का अभियान या यान सबके आकर्षण का केंद्र बने, तो कोई आश्चर्य नहीं। यह अभियान दुनिया में एक भारतीय शब्द का प्रचार और भारत के अंतरिक्ष अभियान के स्वदेशी होने का अहसास करायेगा। योजना के अनुसार, यह यान कुल 125 दिन में सूर्य के पास की कक्षा में पहुंच जाएगा। सूर्य के एकदम निकट जाने के बारे में तो कोई सोच नहीं सकता, पर सूर्य के पास एक सुरक्षित कक्षा है जहां पहुंचकर कोई यान परिक्रमा करते हुए सूर्य को देख-परख सकता है। यह आदित्य अंतरिक्ष यान सात उन्नत उपयोगी उपकरणों से सुसज्जित है, जो सूर्य की विभिन्न परतों, प्रकाशमंडल और क्रोमोस्फीयर से लेकर सबसे बाहरी परत, कोरोना तक की जांच करने के लिए तैयार किए गए हैं। इरादा यह है कि सूर्य के पास घटित होने वाली तमाम गतिविधियों का डाटा एकत्र किया जाए, ताकि सूर्य की कुल क्रिया-प्रतिक्रिया को समझा जा सके। हम तेज सूर्य से आंख नहीं मिला पाते हैं, पर भारत का आदित्य यान सूर्य से सीधे आंख मिलाने में सक्षम होगा, इसमें लगे चार उपकरण तो केवल सूर्य को देखने का काम करेंगे, मतलब इस अभियान का मूल लक्ष्य सूर्य को करीब से देखना है।

भारत पूरातन काल से ज्ञान-विज्ञान का असीम भंडार रहा है। हमारे ऋषियों-मनीषियों ने आचार-विचार, आत्म-विकास एवं गहन खोजों से चिकित्सा, दर्शन, अर्थ और सौरमंडल तक की ऐसी जानकारी प्रदान की है, जिसके बारे में विश्व को बहुत बाद में पता चला। स्वामी विवेकानन्द ने कहा भी है कि आधुनिक विज्ञान के सूत्र पुरातन काल में वेदों में लिखित सूत्र ही है। किसी भी आपदा या घटना का पूवार्नुमान भारत में इसी सौरमंडल की जानकारी के आधार पर ही संभव हुआ है। सूर्य में भारत की दिलचस्पी एवं श्रद्धाभाव को स्वाभाविक ही समझा जा सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहां सूर्य को देवता मानकर पूजने वाले, पर्व-उपवास करने वाले लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। भारत में हर सुबह सूर्य नमस्कार और सूर्य को जल अर्पण दिनचर्या में शामिल है। भारतीय पौराणिक कथाओं में सूर्य एक चरित्र या किरदार के रूप में पुरजोर उपस्थित है। इसलिये कोई आश्चर्य नहीं, भारतीय ज्यादा श्रद्धाभाव से सूर्य का अध्ययन करते हुए विश्व मानवता को उपकृत सकेंगे। क्योंकि अब भारत पुरातन ज्ञान से अत्याधुनिक विज्ञान की स्वर्णिम यात्रा पर बढ़ रहा है।

निश्चित ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरगामी सोच एवं प्रोत्साहन से देश की वैज्ञानिक सोच एवं उपक्रमों को नया आधार मिल रहा है। वह भी अद्भुत दृश्य था, प्रधानमंत्री जब ब्रिक्स समिट एवं अन्य देशों की यात्रा से सीधे इसरो मुख्यालय पहुंचे और विज्ञानियों और इंजीनियरों से खास तौर पर मुलाकात की और उनके योगदान को सराहा। इसे प्रधानमंत्री ने यह कहकर अच्छे से रेखांकित किया कि जब हम अपनी आंखों के सामने इतिहास बनते हुए देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है और ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं जीवन में चिरंजीव चेतना बन जाती हैं। मोदी ने कहा भी है कि आज हर कोई यह कह रहा है कि 21वीं सदी भारत की सदी है। भारत ही वह देश है जिसके पास युवा शक्ति का भरपूर भंडार है, मजबूत इरादे है एवं स्वतंत्र पहचान है। पहले सोच थी की भारत बदलेगा ही नहीं लेकिन अब सोच है कि हमारा यह देश खुद भी बदल रहा है एवं पूरी दुनिया को बदलने की सामर्थ्य रखता है। प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना हमारे विश्वास को मजबूत करता है कि भारत से जो प्रकाशपुंज उठा है, उसमें विश्व को ज्योति नजर आ रही है। आज हमारे पास लोकतंत्र, जनसंख्या और विविधता है और यह त्रिवेणी भारत के हर सपने को साकार करने का सामर्थ्य रखती है। भारत का सबसे बड़ा सामर्थ्य बना है मोदी सरकार के प्रति जन-जन का और विश्व का भारत के प्रति विश्वास। यह बेवजह नहीं है। जरूरत है भारत के विभिन्न राजनीतिक दल भी इसके महत्व को स्वीकारें।

करोड़ों भारतीयों की प्रार्थना और इसरो के विज्ञानियों की मेधा एवं उनके अथक प्रयासों से जिस तरह चंद्रयान-3 अंततः चांद पर पहुंच ही गया, उसी तरह 'आदित्य-एल 1' भी सूर्य पर फतेह करके दुनिया को आश्चर्य में डालेंगा एवं चमत्कृत करेंगा। इस महत्वाकांक्षी अभियान से एक बार फिर भारत के लोगों का सीना गर्व से चौड़ा होगा और पूरे देश में एक सुखद अनुभूति एवं ऊर्जा की लहर दौड़ेगी। इस महा सूर्य- अभियान के सफल होने से भारतवासियों के अंदर एक अनूठा आत्मविश्वास जागेगा, हौंसला बुलन्द होगा कि हम किसी भी जटिल से जटिल कार्य को पूर्ण कर सकेंगे और विश्वगुरु होने की पात्रता प्राप्त करेंगे।

चुनाव कब तक विसंगतियों पर सवार होते रहेंगे?

ललित गर्ग

लोकसभा एवं पांच प्रांतों में विधानसभा चुनाव सन्निकट है, जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं, हैसियत से आगे निकलकर राजनीतिक दल जनता को मुफ्त की रेवड़िया एवं सुविधाएं देने के लिए वादों का पिटारा खोलते जा रहे हैं, चुनाव सुधार की दिशा में सार्थक कदम इन चुनावों में भी उठते हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं, जिताऊ उम्मीदवार अब भी राजनीतिक दलों की चुनाव प्रक्रिया पर हावी है, धनबल एवं बाहुबल का ही वर्चस्व एक बार फिर देखने को मिले, तो कोई आश्चर्य नहीं है। योग्यता और उपलब्धियां एक बार फिर हवा होगी। प्रश्न है कि चुनाव सुधार की प्रक्रिया कब मजबूती से आगे बढ़ेगी, चुनाव जनतंत्र की जीवनी शक्ति है। यह राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिबिम्ब होता है। जनतंत्र के स्वस्थ मूल्यों को बनाए रखने के लिए चुनाव की स्वस्थता, पारदर्शिता और उसकी शुद्धि अनिवार्य है। चुनाव की प्रक्रिया गलत होने पर लोकतंत्र की जड़े खोखली होती चली जाती हैं।

चुनाव प्रक्रिया महंगी एवं धन के वर्चस्व वाली होने से विसंगतिपूर्ण एवं लोकतंत्र की आत्मा का हनन करने वाली हो जाती है। करोड़ों रुपए का खचीर्ला चुनाव, अच्छे लोगों के लिये जनप्रतिनिधि बनने का रास्ता बन्द करता है और धनबल एवं धंधेबाजों के लिये रास्ता खोलता है। हाल के वर्षों में चुनाव सुधार की दिशा में जितने भी कदम उठे हैं, उनमें राजनीतिक दलों की बजाय सर्वोच्च न्यायालय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है या फिर चुनाव आयोग की। लोकप्रतिनिधित्व कानून 1951 के तहत चुनाव आयोग भारत में चुनाव कराता है। साल 1990 में जब टीएन शेषन देश के मुख्य निर्वाचन आयुक्त बनाए गए तो उन्होंने चुनाव सुधारों की दिशा में वे कदम उठाए जो असंभव समझे जाते थे। शेषन चुनाव-सुधार के प्रेरक बने एवं उन्होंने क्रांतिकारी कदम उठाते हुए पहली बार देश को अहसास कराया कि चुनाव आयोग नामक कोई दमदार संस्था भी होती है, जो चाहे तो बंदूकों के दम पर बूथ लूटने वाले आपराधिक तत्वों पर लगाम लगा सकती है। तभी पता चला कि चुनावी प्रशासन कितना कठोर और अनुशासनबद्ध हो सकता है।

यथार्थ में देखा जाए तो जनतंत्र अर्थतंत्र बनकर रह जाता है, जिसके पास जितना अधिक पैसा होगा, वह उतने ही अधिक वोट खरीद सकेगा। सभी दल पैसे के दम पर चुनाव जीतना चाहते हैं, जनता से जुड़े मुद्दों एवं समस्याओं के समाधान के नाम पर नहीं। कोई भी ईमानदारी और सेवाभाव के साथ चुनाव नहीं लड़ना चाहते हैं। राजनीति के खिलाड़ी सत्ता की दौड़ में इतने व्यस्त है कि उनके लिए विकास, जनसेवा, सुरक्षा, महामारियां, आतंकवाद, बेरोजगारी, महंगाई की बात करना व्यर्थ हो गया है।

शेषन के बाद चुनाव आयोग सक्रिय हुआ है, लेकिन शेषन जैसे प्रभावी कदम उठाने की कमी अब भी दिखाई दे रही है। दिल्ली में आम आदमी पार्टी के अरविन्द केजरीवाल, मध्यप्रदेश में शिवराजसिंह चौहान एवं राजस्थान में अशोक गहलोत सरकारों ने मुफ्त की रेवड़िया बांटने की झड़ी लगा रखी है। धनबल एवं बाहुबल के बाद इन वर्षों में सर्वाधिक मुक्त सुविधाएं देने की घोषणाएं समूची लोकतांत्रिक प्रणाली को दूषित करने का सबब बन रही है। इस तरह की बुराई एवं विकृति को देखकर आंख मूंदना या कानों में अंगुलियां डालना जनता की राष्ट्र के प्रति उदासीनता का द्योतक है, जरूरत इसके विरोध में व्यापक जनचेतना को जगाने की है। यह समस्या या विकृति किसी एक प्रांत की नहीं, बल्कि समूचे राष्ट्र की लोकतांत्रिक समस्या है।

साल 2015 में चुनाव आयोग ने अपनी चुनावी गाइड लाइन में कहा था कि राजनीतिक दल चुनावी मैदान में उतरते वक्त मतदाताओं से जो वादे करते हैं, उन्हें यह भी बताना होगा कि किस स्रोत से सत्ता में आने के बाद उन्हें पूरा करेंगे। ऐसी गाइन लाइन का पालन कहां होता है? आम चुनाव एवं पांच राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनावों के मद्देनजर चुनाव आयोग को चाहिए कि कम से कम इस बार अपने दिशा-निर्देशों को सख्ती से लागू करे। चूंकि राजनीति में सेवा अब ज्यादातर दिखावटी हो गई है, मकसद व्यक्तिगत और दलगत दोनों स्तरों पर सिर्फ सत्ता प्राप्ति ही रह गया है। मुफ्त की रेवडियां बांटने या अतिश्योक्तिपूर्ण सुविधाओं की घोषणाएं करने के पीछे भी मकसद यही है। इस पूरी प्रक्रिया में अंततः नुकसान जनता को ही होता है। तरह-तरह के नये टैक्स और महंगाई के बोझ से आखिर जनता ही दबती है। अब जरूरी हो गया है कि साल 2015 के अपने ही दिशा-निर्देश को कड़ाई से लागू करने की दिशा में चुनाव आयोग आगे बढ़े। राजनीतिक दल जनता को बताएं कि जो वादे वे कर रहे हैं उन्हें किस स्रोत से पूरा करेंगे। तब मतदाता भी फायदा या नुकसान समझ पाएगा। तब शायद वोट देते वक्त वह अपने विवेक पर भरोसा करने की दिशा में भी आगे बढ़ना शुरू कर सकेगा।

चुनावों में धनबल का बढ़ता प्रयोग एवं मुफ्त रेवड़िया बांटने का दूषित एवं पूर्वाग्रहपूर्ण प्रचलन चिन्ता का सबब होना चाहिए। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, चौपट काम-धंधें एवं जीवन संकट के समाधान में क्या पांच राज्यों के विधानसभा एवं अगले वर्ष होने वाले आम चुनाव कोई आदर्श प्रस्तुत कर पायेंगे? इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है, जो लोग चुनाव जीतने के लिए इतना अधिक खर्च कर सकते हैं तो वे जीतने के बाद क्या करेंगे, पहले अपनी जेब को भरेंगे, आम जनता पर आर्थिक दबाव बनायेंगे। और मुख्य बात तो यह है कि यह सब पैसा आता कहां से है? कौन देता है इतने रुपये? धनाढ्य अपनी तिजोरियां तो खोलते ही है, कई कम्पनियां हैं जो इन सभी चुनावी दलों एवं उम्मीदवारों को पैसे देती हैं, चंदे के रूप में। चन्दा के नाम पर यदि किसी बड़ी कम्पनी ने धन दिया है तो वह सरकार की नीतियों में हेरफेर करवा कर लगाये गये धन से कई गुणा वसूल लेती है। इसीलिये वर्तमान की भारतीय राजनीति में धनबल का प्रयोग चुनाव में बड़ी चुनौती है।

यथार्थ में देखा जाए तो जनतंत्र अर्थतंत्र बनकर रह जाता है, जिसके पास जितना अधिक पैसा होगा, वह उतने ही अधिक वोट खरीद सकेगा। सभी दल पैसे के दम पर चुनाव जीतना चाहते हैं, जनता से जुड़े मुद्दों एवं समस्याओं के समाधान के नाम पर नहीं। कोई भी ईमानदारी और सेवाभाव के साथ चुनाव नहीं लड़ना चाहते हैं। राजनीति के खिलाड़ी सत्ता की दौड़ में इतने व्यस्त है कि उनके लिए विकास, जनसेवा, सुरक्षा, महामारियां, आतंकवाद, बेरोजगारी, महंगाई की बात करना व्यर्थ हो गया है। सभी पार्टियां जनता को गुमराह करती नजर आती है। सभी पार्टियां नोट के बदले वोट चाहती है। राजनीति अब एक व्यवसाय बन गई है। सभी जीवन मूल्य बिखर गए है, धन तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए सत्ता का अर्जन सर्वोच्च लक्ष्य बन गया है, बात चाहें विधानसभा चुनावों की हो या लोकसभा चुनाव की। लेकिन इस तरह लोकतंत्र की आत्मा का ही हनन होता है, इस सबसे उन्नत एवं आदर्श शासन प्रणाली पर अनेक प्रश्नचिन्ह खड़े होते हैं।

आगामी चुनावों की सबसे बड़ी विडम्बना एवं विसंगति भी जो सामने आने वाली है वह यह है कि चुनाव आर्थिक विषमता की खाई को पाटने की बजाय बढ़ाने वाले साबित होंगे। क्योंकि ये चुनाव अब तक के सर्वाधिक खचीर्ले होने जा रहे हैं, इन चुनावों से पहले जिस तरह की सुविधाएं दी जा रही है या देने की घोषणाएं की जा रही हैं, वे नयी बनने वाली सरकारों के लिये बड़ी चुनौती होगी। संभव है ऐसी अतिश्योक्तिपूर्ण घोषणाएं एवं मुफ्त रेवड़िया बांटने वाले दलों की सरकारें बन भी जाये। लेकिन प्रश्न है कि वे इन आश्वासनों एवं घोषणाओं को पूरा करने के लिये धन कहां से लायेंगे? जैसाकि 'मुफ्त' के वादे के साथ पंजाब में आम आदमी पार्टी सत्तारूढ़ तो हो गई, पर अब उसके बोर्डों और निगमों को पैसे की कमी से जूझना पड़ रहा है। यही हाल दिल्ली का भी है। दिल्ली परिवहन निगम में सालों से नई बसें नहीं आईं, सड़कों का बदहाल है और निगम करीब पैंतालीस हजार करोड़ के घाटे में है।

दिल्ली जल बोर्ड भी सत्तर हजार करोड़ के घाटे में है। पंजाब में पुरानी पेंशन योजना लागू करना भी कठिन हो गया है। जबकि सत्ताधारी दल ने चुनाव लड़ते वक्त इसका वादा किया था। हिमाचल में भी पुरानी पेंशन और महिलाओं को मासिक भत्ता देने का वादा करके कांग्रेस सत्ता में आई। पर बढ़ते आर्थिक बोझ के चलते वादे लागू करना मुश्किल पड़ता जा रहा है। मई में कर्नाटक में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पांच गारंटियों का वादा करके जीत गई। पर अब गारंटी पूरा करना कठिन होता जा रहा है।

सामान्य विकास के लिए धन की कमी पड़ती है तो इन सुनहरें सपनें दिखाने वाली घोषणाओं को आकार देने एवं पूरा करने के लिये धन कहां से आयेगा? आखिर कब तक चुनाव इस तरह की विसंगतियों पर सवार होता रहेगा?

वेश्याओं के जीवन पर आधारित है 'गुलाबी दुनिया'

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लघुकथा के विमल बासन्ती बयार, चोख चोट के कचोट पर घायल पीड़ा पंछी तथा आँसू चुराई, नयन झुकाई समाजिकता को नई दिशा-बोध देने वाले हिन्दी साहित्य के प्रणम्य-प्रणेता 'सुरेश सौरभ' के संपादन में आपके हाथों की शोभा बढ़ा रही पुस्तक 'गुलाबी दुनिया' जो कि समाज के एक ऐसे वर्ग पर लघुकथाओं का संग्रह है जो पैसों के लिए बिस्तर गर्म करती है। इसमें आत्तजनों की आह, पीड़ितों की पीड़ा और चांदी के चन्द टुकड़ों के लिए अपनी अस्मत को गिरवी रखने वाली बदहाल वेश्याओं के दिनचर्या को दिखाता है।

पीड़ा और मातम के मजारों पर आंसुओं की अर्ध्य चढ़ाने वाली वेश्याओं के लिए साहिर लुधियानवी ने लिखा है-

'औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया,

जब जी चाहा मसला-कुचला, जब जी चाहा दुत्कार दिया।'

वेश्यावृत्ति दुनिया भर में विभिन्न सभ्यताओं के लगभग सभी ऐतिहासिक कालो में मिलती है। वेश्यावृत्ति स्पष्ट रूप से उन सभ्यताओं का एक हिस्सा है जो पुरातन काल से चले आ रही है।वेश्यावृत्ति या व्यवसायिक यौन-कार्य भावनात्मक उदासीनता के साथ एक कामुक और भाड़े के आधार पर यौन-संबंध का अभ्यास है। सआदत हसन मंटो ने सटीक कहा है- 'जिस औरत के दरवाजे शहर के हर उस शख़्स के लिए खुले हैं जो अपनी जेबों में चाँदी के चंद सिक्के रखता हो।ख़्वाह वो मोची हो या भंगी, लंगड़ा हो या लूला, खूबसूरत हो या करीहत-उल-मंजर, उस की जिंदगी का अंदाजा बखूबी लगाया जा सकता है।'

लघुकथा जीवन की सच्चाई का पर्याय है। लघुकथा समय के साथ मानव-मन की गहराई तक को छू लेती है और अर्न्तमन को झकझोर देने की ताकत भी रखती है बशर्ते विषयवस्तु प्रभावी हो और इस लघुकथाओं के संग्रह की प्रत्येक लघुकथा अपने आप में साहित्य में लकीर खींच रहा है। सुकेश साहनी की लघुकथा 'मरुस्थल' में जहाँ वेश्याओं के अंदर घर

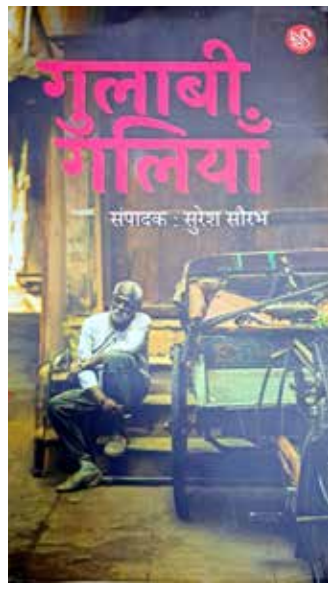

पुस्तकः गुलाबी दुनिया
संपादकः सुरेश सौरभ
मूल्यः 249 रुपए

की हुई प्रेम को उजागर किया गया है, जो उसका कभी हो ही नहीं सकता है तो वहीं उनकी लघुकथा 'नपुंसक' द्वारा समाज को आईना दिखाया गया है जिसमें वह लिखते हैं कि समाज के किसी एक व्यक्ति के सुधर जाने से वेश्यावृत्ति खत्म नहीं हो जाती बल्कि अनवरत चलती जाती है।

'दंगे की रात' में गुलजार हुसैन कहते है कि औरत में गुलाब की सुगंध ही नहीं आग की सुगंध भी है। एक वेश्या के द्वारा लूट के पैसे लेने से इंकार कर देना उसके ईमानदारी और इंसानियत को दशार्ता है।

आधुनिक समय की एक बड़ी समस्या बन चुकी ब्लैकमेलिंग को अरविंद असर ने 'उसूल' में लिखा है। जबकि लघुकथा 'पूजा घर' में वेश्या का ईश्वर के प्रति उपासना को लिखा गया है, जिसमें एक वेश्या पैसे के लिए जिस्म तो बेच सकती है , लेकिन वह इसके लिए ईश्वर के पूजा घर का इस्तेमाल अपने व्यापार के लिए नहीं करना चाहती है।

नज्म सुभाष की लघुकथा 'ग्राहक' के माध्यम से अपनत्व के प्रेम और कोठे के प्रेम के भिन्नता को परोसा गया है, जिसमें प्रकाश गुलदस्ता दे कर उसे अपना प्रेमिका बनाने की बात तो करता है लेकिन ज्योंहि वह अपनी तबियत खराब की बात छेड़ती है, प्रकाश का प्रेम उसकी तबियत न देख कर अपनी जिस्म की भूख की ओर चला जाता है और ना चाहते हुए भी वह प्रकाश के साथ हमबिस्तर हो जाती है। यही कारण है कि कथाकार ने अंत में उस वेश्या के अंदर की इंसान को जागृत कर दिया है जिसमें उसने गुलदस्ता को वापस कर दिया था। उसे पता है कि उसे यह गुलदस्ता जिस्म की भूख मिटाने के लिए मिला था, प्रेम के लिए नहीं।

वेश्याओं के जीवन से संबंधित हर पहलुओं को ध्यान में रख कर संपादित की गई यह लघुकथा-संग्रह वास्तव में उनके जीवन की पीड़ाओं को रेखांकित कर रहा है। सुंदर भाषा-शैली में लिखी गई और पाठकों के मर्म को समझने के साथ-साथ यह पुस्तक पाठकों को आकर्षित भी करेगी। वेश्याओं के मेले में उनके जिस्मों को नोचने तो हर कोई आ जाता है लेकिन उनके पीड़ाओं को हरने कोई नहीं आ पाता है। सआदत हसन मंटो ने ठीक ही कहा है- 'वेश्याओं के इश्क में एक खास बात काबिल-ए-ज़िक्र है। उनका इश्क उनके रोजमर्रा के मामूल पर बहुत कम असर डालता है।'

शाबाश इसरो, शानदार इसरो, वैज्ञानिकों पर गर्व

प्रो नीलम महाजन सिंह

अब भारत, अमेरिका, चीन व रूस के साथ वैज्ञानिक अंतरिक्ष देशों की गणना में है। वो इतिहासक पल जब सांस थम सी गई! भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो के नवनियुक्त प्रमुख डॉ. एस. सोमनाथ के नेतृत्व में, चंद्रयान-3 मिशन ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सुरक्षित उतरकर, भारत को इस क्षेत्र में एक मजबूत स्थिति दिलाई है। इस सफलता के माध्यम से इसरो ने एक बार फिर दुनिया को दिखाया कि भारत अंतरिक्ष विज्ञान में नए मापदंड स्थिर कर रहा है। डॉ. विक्रम साराभाई ने इसरो की स्थापना की। इस लेख में, हम इसरो के इतिहास को समझाने का प्रयास करते हैं। इसरो ने भारत के लिए व वैज्ञानिक समुदाय के लिए क्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है? चंद्रयान-3 की सफलता ने इस संगठन के उज्ज्वल भविष्य को रोशन कर दिया है व इसे विश्व स्तर पर मान्यता दिलाई है। आइए इस रोमांचक व उत्कृष्ट यात्रा में हमारे साथ शामिल हों। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, ने अपने अस्तित्व के चार दशकों में भारत को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक मजबूत पहचान दी है। भले ही यह संगठन 1969 में बना था, लेकिन इसकी नींव डॉ. विक्रम साराभाई द्वारा 1962 में रखी गई थी, जब भारतीय राष्ट्रीय समिति अंतरिक्ष अनुसंधान (INCOSPAR) की स्थापना हुई थी। इसरो का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनता व मानवता के लिए अंतरिक्ष तकनीकी के लाभों को हासिल करना है। इसके लिए उन्होंने विभिन्न प्रकार के उपग्रह लॉन्च किए हैं जो कम्यूनिकेशन, टेलीविजन ब्रॉडकास्टिंग, मौसम विज्ञान में योगदान करते हैं। संगठन का मुख्यालय बेंगलूरु में है, लेकिन इसके केंद्र और इकाइयां देशभर में फैली हुई हैं। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (VSSC), यूआर राओ सैटेलाइट केंद्र (URSC), सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC) और अन्य केंद्र इस संगठन की विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करते हैं। ISRO के प्रयासों की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने सिर्फ तकनीकी प्रगति में ही योगदान नहीं दिया, बल्कि विज्ञान व शिक्षा में भी अपना योगदान दिया है। इसरो ने समय-समय पर विभिन्न सैटेलाइट्स और लॉन्च व्हीकल्स को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेजा है। ये मिशन्स टेलीकॉम्युनिकेशन, मौसम विज्ञान, भूमि और जल संसाधन प्रबंधन, और विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान करते हैं। इसरो के माध्यम से भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी वैश्विक पहचान बनाई है। PSLV, GSLV, GSLV भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का मुख्य कार्य अंतरिक्ष आधारित कार्यक्रमों, अंतरिक्ष अन्वेषण, अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष सहयोग और संबंधित प्रौद्योगिकियों का विकास करना है। इसरो विश्व में उन छह सरकारी अंतरिक्ष एजेंसियों में से एक है, जिनके पास पूरी प्रक्षेपण क्षमताएं हैं, क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग करते हैं, एक्सट्राटेरेस्ट्रियल मिशनों को लॉन्च करते हैं और कृत्रिम उपग्रहों की एक बड़ी सेना का संचालन करते हैं। 2023 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की कमान डॉ. श्रीधर सोमनाथ के हाथ में है, जो इस संगठन के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं। सोमनाथ की नियुक्ति इसरो के गौरवशाली इतिहास में एक और मील का पत्थर है, जो संगठन की दूरदर्शी नेतृत्व की लंबे समय से चली आ रही परंपरा को जारी रखेगी। श्रीधर सोमनाथ ने ऐसे समय में पद संभाला जब इसरो उन्नत संचार उपग्रहों, अंतरग्रहीय मिशन और बहुप्रतीक्षित गगनयान मिशन सहित कई महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को प्राप्त करने के लिए उत्सुक है। इन परियोजनाओं का लक्ष्य न केवल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की क्षमताओं को बढ़ाना है बल्कि वैश्विक वैज्ञानिक समझ में महत्वपूर्ण योगदान

"भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो के नवनियुक्त प्रमुख डॉ. एस. सोमनाथ के नेतृत्व में, चंद्रयान-3 मिशन ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सुरक्षित उतरकर, भारत को इस क्षेत्र में एक मजबूत स्थिति दिलाई है। इस सफलता के माध्यम से इसरो ने एक बार फिर दुनिया को दिखाया कि भारत अंतरिक्ष विज्ञान में नए मापदंड स्थिर कर रहा है। डॉ. विक्रम साराभाई ने इसरो की स्थापना की। इस लेख में, हम इसरो के इतिहास को समझाने का प्रयास करते हैं।

देना भी है। एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के विशेष क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता के साथ-साथ सोमनाथ के नेतृत्व गुण उन्हें एक ऐसे संगठन का नेतृत्व करने के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त बनाते हैं जो अंतरिक्ष विज्ञान में अपने योगदान के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। उनका मार्गदर्शन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ नए सहयोग को भी सामने ला सकता है, जिससे ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने की खोज में वैश्विक सहयोग की भावना को बढ़ावा मिल सकता है। पी.एस.एल.वी (PSLV) और जी.एस.एल.वी (GSLV) पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV): PSLV का उपयोग धरती की कम ऊंचाई के कक्ष में उपग्रह प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है। यह वाहन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की बहुत भरोसेमंद और सफल वाहन है। जिओ-स्थिर कक्षीय लॉन्च व्हीकल (GSLV): GSLV का उपयोग उच्च कक्ष में उपग्रह प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है। इसमें क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग होता है, जो इसे अपने प्रकार की एक अद्वितीय तकनीक मानते हैं। चांद की धरा पर भेजे हमारे स्मार्ट दूत वहां के वातावरण का अध्ययन करेंगें, जमीन को जानेंगे, जानकारियां जुटाएंगे। कोई वहां के रसायन को समझेगा और कोई कई अहम सुराग बटोर कर हम तक भेजेगा और उनमें से कई राज ऐसे होंगे जो हमें चौंका सकते हैं। चंद्रयान-3 के चांद से अभिस्पर्श करते ही मन के भीतर, तन के बाहर बहुत कुछ हुआ, रोंगटे खड़े हुए, पलकें छलक गई, आंखें चमक गई। रोम-रोम में स्फुरण हुआ और इसी के साथ चंद्रयान2 की विफलता का भी स्मरण हुआ। हमारे सुयोग्य वैज्ञानिकों की टीम ने कोशिश की व अपने इरादों पर अडिग रहे। हमने सफलता को मुस्कुराते हुए देखा। चांद पर लिखे गाने याद किए गए। शायरियां निकल आई, फिल्में, किताबें, लेख, निबंध सब सामने आए। विज्ञान व धर्म का सुंदर सुखद संयोजन चर्चा का विषय बना। ज्योतिष की गणना, चंद्रमा की उत्पत्ति, इतिहास,अस्तित्व सब खंगाला गया। चंद्र, मून, आफताब, चंद्रमा, शशि, मयंक, शशांक, सुधांशु सारे नामों के साथ चांद हर लेखनी की नोंक पर झिलमिला उठा। चांद को पाने के लिए चांद तक जाने के लिए चांद जैसा ही धैर्य, शीतलता व मन की शांति चाहिए थी जो हमारे वैज्ञानिक साथियों में थी। उन खिलखिलाते चमकते चेहरों को, अथक परिश्रम से आंखों के नीचे आए उनके स्याह घेरों को, कितने लोग, कितने दिमाग, कितने दिल, कितनी रातें, कितने दिन, कितने पल कितने अनुपल, कितने ख्याल, सब कुर्बान हुए होंगे। पर अपने संयम व संकल्प को थामे रखकर बस एक ही शब्द, एक ही भाव, एक ही विचार, एक ही तस्वीर को संजोया होगा चंद्रयान3 व सिर्फ चंद्रयान3!

चांद के दक्षिणी ध्रुव पर निगाहें रही होंगी। बहरहाल, चांद की धरा पर भेजे हमारे स्मार्ट दूत वहां के वातावरण का अध्ययन करेंगे, जमीन को जानेंगे, जानकारियां जुटाएंगे। कोई वहां के रसायन को समझेगा और कोई कई अहम सुराग बटोर कर हम तक भेजेगा और उनमें से कई राज ऐसे होंगे जो हमें चौंका सकते हैं। आखिर जल, जीवन या जड़ता क्या होगा वहां? चंद्रयान अभियान की सबसे कठिन घड़ी थी उपग्रह को अंतरिक्ष में ले जाकर छोड़ना और दूसरी मुश्किल घड़ी चांद पर उसे लैंड कराना थी। पीएम नरेंद्र मोदी ने ब्रिट सम्मेलन, दक्षिण अफ्रीका से सीधा प्रसारण देखा, तथा भारतवासियों की खुशी में सम्मिलित हुए। अंततः शाबाश इसरो, शानदार इसरो, हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है!

(वरिष्ठ पत्रकार, विचारक, राजनैतिक समीक्षक, दूरदर्शन व्यक्तित्व, सॉलिसिटर व परोपकारक)

धरा प्रथम के मूल मंत्र को स्वीकार करे विश्व!

सीता राम शर्मा 'चेतन'

चंद्रयान तीन की सफलता से हर भारतीय हर्षित, गर्वित है और प्रेरित भी ! निःसंदेह व्यतीत तेइस अगस्त का दिन और उसका वह पल राष्ट्रीय उत्सव उल्लास का अविस्मरणीय पल था जब हमारे विद्व वैज्ञानिकों ने अपने अंतरिक्ष लक्ष्यों में से एक और लक्ष्य को साधते हुए अपने अथक जीवट प्रयासों से निर्मित यंत्र यान चंद्रयान तीन को चांद के दक्षिणि ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतार दिया था ! हालाकि भारत ने अनंत ब्रह्मांड के अथाह ज्ञान को सदियों पूर्व अपनी ऋषि परंपरा और मंत्र शक्ति के माध्यम से ना सिर्फ जान और जी लिया था बल्कि बहुत हद तक उसके ज्ञान को ग्रंथ रुप में संयोजित भी कर दिया था ! वह ऐसा समय था जब हमारे ऋषि आत्मिक साधना और कठोर जप-तप से जब जहां चाहे अंतरिक्ष भ्रमण कर आते थे, जहां पहुंचना आज के विकसित हुए, होते और होने वाले विज्ञान के लिए या तो असंभव है या फिर उसमें दशकों लग जाते हैं, लेगेगें । उन्होंने ब्रह्मांड के जिन रहस्यों को जाना समझा उसे जानने खोजने में आज के कथित आधुनिक विकसित विज्ञान को अभी भी सदियों का श्रम देना होगा ! भारतीय पुरातन और सनातन उपलब्धियों की वह गौरवशाली यात्रा परंपरा आज भी गुप्त और चमत्कारिक सत्य के साथ अनवरत जारी है । मानवीय दैहिक सर्वोच्च विज्ञान को जाने बिना आज के कथित आधुनिक विकसित बा' यांत्रिक विज्ञान को अंतरिक्ष और ब्रह्मांड के उन रहस्य ज्ञान को जानने में अभी हजारों सदियां लगेगीं । विकास के नाम पर विनाश की ओर जाती आज की मानवीय बिरादरी उन वास्तविक सत्यों तक कभी पहुंच भी पाएगी या नहीं यह कहना बहुत मुश्किल है क्योंकि संभावित सत्य तो यही जान पड़ता है कि विकास के नाम पर तेजी से विनाश के अनावश्यक अविष्कार करती वर्तमान और भविष्य की मानवीय बिरादरी विज्ञान के अपने वृहद दिखते आंशिक विकास के अधिकांश हिस्से का तो खुद के साथ खुद ही विनाश कर लेगी !

खैर, चंद्रयान तीन के राष्ट्रीय उत्सव और उल्लास के अनमोल पलों

"विज्ञान की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आज भारत अपने हिस्से की योग्यता और सफलता का जो प्रदर्शन कर रहा है वह इसकी मजबूरी है ! विश्व समझे तब भी और नहीं समझे तब भी भारत की महत्वपूर्ण वैश्विक भूमिका और दायित्व तो वैश्विक मानवता की रक्षा और उसका कल्याण करना ही है ! यह आलेख भी वैश्विक समुदाय को यह बताने समझाने का प्रयास ही है कि मनुष्य जाति के लिए अंतरिक्ष ज्ञान विज्ञान से ज्यादा जरुरी है धरा के उस ज्ञान और विज्ञान को समझना ! उसके प्रति ज्यादा जागरूक, जवाबदेह और जिम्मेवार होना । जिसके बिना या जिससे दूर जाते हुए उसका जीवन ही असुरक्षित हो जाएगा !

में फिलहाल बात वर्तमान वैश्विक विज्ञान की उस दृष्टि और सृष्टि की, जिसमें भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने निर्मित चंद्र यान चंद्रयान तीन को चांद के दक्षिणि ध्रुव पर उतार दिया है और जिससे वह अपने वसुधैव कुटुम्बकम के ध्येय को साधना चाहती है, क्या सचमुच वह अंतरिक्ष विज्ञान और मानवीय जहान के लिए बहुत ज्यादा उपयोगी है ? क्या अंतरिक्ष विज्ञान के विकास की यह वैश्विक ललक और प्रतिस्पर्धा ठीक है ? क्या अंतरिक्ष विज्ञान की व्यापक समझ और खोज अत्यंत जरुरी है ? क्या आध्यात्म के आत्मिक ज्ञान से प्राप्त होने वाले अंतरिक्ष ज्ञान से बेहतर है सामुहिक श्रम साध्य से पाया जाने वाला अंतरिक्ष विज्ञान ? फिलहाल इन प्रश्नों को अनुत्तरित या फिर पाठकीय विवेक पर छोड़ते हुए बात सिर्फ और सिर्फ उस धरती की, जिस पर असीमित असहनीय अपराध करते हुए हम निरंतर खुद को ज्यादा ज्ञानी, गौरवशाली और विकसित कहने मानने की अक्षम्य भूल किए जा रहे हैं ! थोड़ा रुककर और शांतचित्त होकर हमें सबसे पहले यह जानने समझने की जरूरत है कि हमारे लिए और हमारी पूरी मनुष्य जाति के लिए सबसे अधिक जरुरी और महत्वपूर्ण यह है कि हम चांद और सूरज पर जाने से पहले उस धरती के प्रति ज्यादा

शेष पृष्ठ 9 पर

क्या भ्रष्टाचार की शिकायत वापिस होनी चाहिए ?

अशोक मधुप

उत्तर प्रदेश के पीसीएस अधिकारी ज्योति मौर्य के खिलाफ की गई भ्रष्टाचार की शिकायत को उनके पति आलोक मौर्य ने वापस ले लिया है। सोमवार को कमिश्नर और जांच अधिकारी को पत्र देकर उन्होंने अपनी शिकायत वापस लेने का प्रार्थना पत्र दिया है।प्रश्न यह है कि क्या भ्रष्टाचार की शिकायत वापस ली जा सकती है। शिकायतकर्ता ज्योति मौर्य के पति ने मंडलायुक्त को शिकायत वापस लेने के लिए भले ही प्रार्थना पत्र दे दिया हो , किंतु शिकायत बहुत गंभीर प्रवृति की है।इसकी जांच तो होनी ही चाहिए । बल्कि आयकर विभाग से भी इस शिकायत की जांच कराई जानी चाहिए।

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में सफाई कर्मी के पद पर तैनात आलोक मौर्य ने अपनी एसडीएम पत्नी ज्योति मौर्य के खिलाफ भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए थे। उसने अपनी पत्नी ज्योति मोर्या की उस कथित डायरी के 32 पन्नों के फोटोग्राफ भी शिकायत के समर्थन में पेश किया था, जिसमें लाखों रुपये के लेनदेन का लेखा-जोखा था। बताया जा रहा था कि डायरी में लाखों के लेनदेन का ब्यौरा दर्ज है।

शासन ने मामले की जांच के लिए कमिश्नर प्रयागराज विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय कमेटी गठित की है। जांच कमेटी ने आठ अगस्त को हुई सुनवाई के दौरान आलोक से सबूत मांगे थे। आलोक ने 20 दिन का समय मांगा था। पीसीएस अफसर ज्योति मौर्या उस दिन जांच कमेटी के सामने पेश नहीं हुईं ।

ज्योति मौर्या केस में आठ अगस्त को सुनवाई पर आए आलोक ने कहा था, 'मैंने ज्योति पर जो भी आरोप लगाए हैं। मुझे उन्हें साबित करने के लिए समय दिया जाए।' कमेटी ने बात सुनने के बाद कहा था, 'आपके पास 20 दिन का समय है। इतने समय में आपने जो भी आरोप लगाए हैं। उनका सबूत पेश करें। इसके बाद जांच कमेटी ने 28 अगस्त को फिर से पेश होने का आदेश दिया था।'

जांच समिति ने आलोक को सोमवार 28 अगस्त को आरोप के संबंध में साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए बुलाया था। सोमवार को जांच अधिकारी के समक्ष पहुंचे आलोक मौर्य ने कहा कि भ्रष्टाचार का आरोप उसने ही अपनी पत्नी पर लगाया था और इसकी जांच की मांग की थी, लेकिन अब वह अपनी शिकायत को वापस ले रहा है। इसके लिए उसने प्रार्थना पत्र भी दिया है। ज्ञात्वय है आलोक मौर्य की शिकायत पर शासन के आदेश पर कमिश्नर विजय विश्वास पंत की देखरेख में तीन सदस्यीय कमेटी जांच कर रही थी।

आलोक मौर्य और ज्योति मौर्य की शादी 2010 में हुई थी। 2009 में आलोक का चयन पंचायती राज विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में हुआ था। इसके बाद उन्होंने ज्योति की पढ़ाई करवाई। साल 2015 में ज्योति का चयन एसडीएम पद पर हो गया। लोक सेवा आयोग से महिलाओं में ज्योति की तीसरी रैंक और ऑल ओवर 16वीं रैंक थी। सभी बहुत खुश थे। 2015 में जुड़वां बच्चियां हुईं।

पीसीएस अधिकारी ज्योति मौर्य के पति आलोक ने शासन को शिकायती पत्र भेजकर ज्योति पर हर माह पांच से छह लाख रुपये वसूली का आरोप लगाया था। आलोक ने अपनी शिकायत के समर्थन में डायरी के पन्नों की छाया प्रति भी लगाई थी, जिसमें लेन-देन का पूरा हिसाब लिखा जाता था। शिकायत मिलने के बाद शासन ने कमिश्नर विजय विश्वास पंत को जांच सौंपी थी। कमिश्नर ने जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाई ।

> **पहले प्रत्येक शिकायत पर जांच होती थी। आमतौर पर शिकायत कर्ता शिकायत करने वाले के नजदीकी होता है,वह उसके राज जानता है, इसलिए वह अपना परिचय गुप्त रखना चाहता है। ऐसी गुप्त शिकायतों पर ही काफी बड़े भ्रष्टाचार खुले हैं। लालू यादव का 950 करोड़ का चारा घोटाला भी ऐसी ही गुमनाम शिकायत पर खुला था। लेकिन शिकायतों की जांच से बचने के लिए अब प्रशासन ने तै कर लिया कि गुमनाम शिकायतों की जांच नही होगी। शिकायत करने वाले को शिकायत के साथ सुबूत लगाने पर भी उसे साक्ष्य देने के लिए बुलाया जाएगा। होना यह चाहिए कि भ्रष्टाचार के सुबूत लगे होने पर तुरंत जांच शुरू हो जाए।**

इसमें अपर आयुक्त प्रशासन अमृतलाल और दो अन्य सदस्य शामिल हैं।

लिखित शिकायत और डायरी के लाखों के लेन-देन वाले डायरी के पन्ने की छाया प्रति लगाने के बाद आलोक का सबूत के लिए बुलाना उचित प्रतीत नही होता। जांचकर्ताओं को चाहिए था कि आलोक की पत्नी को बुलाकर उससे पूछता डायरी उसकी है या नही। ज्योति के मना करने पर ज्योति का लेख लेकर डायरी के पन्नों की छाया प्रति के साथ लेख विशेषज्ञ को जांच के लिए भेजा जाना चाहिए था।अगर लेख एक ही मिलता तो कार्रवाई होनी चाहिए थी।दरअस्ल ये प्रकरण एक पीसीएस अधिकारी का है, इसलिए अधिकारी इस प्रकरण को खत्म करना चाहेंगे।आईएएस और पीसीएस अधिकारियों की एक बडी लाँबी है। वह अपने लोगों को बचाने में रूचि रखती है। ज्योति का पति एक सफाई कर्मी है। उसकी पीसीएस पत्नी ज्योति करोड़ो की स्वामिनी होगी।लगता है कि ज्योति और आलोक के बीच में कोई डील हो गई। उसी के परिणाम स्वरूप सुबूत के लिए बुलाए जाने पर आलोक ने शिकायत वापस लेने का प्रार्थना पत्र दे दिया। वरना इस तरह का पत्र तो वह पहली सुनवाई पर ही दे सकता था।

हो सकता है कि ज्योति की जांच अधिकारियों से बात हो गई हो , कि वह शिकायत वापसी का प्रार्थना पत्र मिलने पर शिकायत निरस्त कर फाइल बंद कर देंगे।फाइल बंद होगी या नही ये तो जांच अधिकारी जाने , किंतु मामला गंभीर भ्रष्टाचार का है, इसलिए जांच होनी ही चाहिए।

दरअस्ल इस तरह की शिकायत पर शासन की और से जांच शुरू होने के बाद शिकायत करता का शिकायत वापस लेने के लिए प्रार्थना पत्र देना शिकायतकर्ता की विश्वसनीयता संदिग्ध करता है। उसने भले ही जांचकर्ता अधिकारियों के सामने और मीडिया के सामने कहा हो कि इस पर शिकायत वापस लेने का कोई दबाव नही है,किंतु उसकी शिकायत वापस लेने का प्रार्थना पत्र यह बताने के लिए काफी है कि कहीं कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है। जांच समिति के सामने पहले शिकायत के सबूत के लिए बीस दिन का समय लेना और बीस दिन बाद शिकयत को वापिस लेने का प्रार्थना पत्र देना बहुत कुछ खुद कहताहै।जांचकर्ता टीम को चाहिए कि शिकायत वापस लेने का प्रार्थना पत्र निरस्त कर जांच जारी रखे।साथ ही शिकायत करने के बाद शासन स्तर से जांच शुरू होने पर प्रार्थना पत्र वापस लेने के अनुरोध करने वाले आलोक के खिलाफ ही सरकार का समय बरबाद करने, सरकार के साथ झूंठ बोलने के लिए उसके खिलाफ ही कार्रवाई होनी चाहिए। वह सरकारी सेवा में सफाई कर्मी है ।ऐसे में कदाचार और झूठी शिकायत में उसे सेवा से निकला जा सकता है। उसके विरूद्ध कदाचार का केस चलाना चाहिए।ऐसे तो कोई भी किसी के खिलाफ शिकायत करेगा,बाद में गुपचुप समझौता कर शिकायत वापिस ले लेना।

पहले प्रत्येक शिकायत पर जांच होती थी। आमतौर पर शिकायत कर्ता शिकायत करने वाले के नजदीकी होता है,वह उसके राज जानता है, इसलिए वह अपना परिचय गुप्त रखना चाहता है। ऐसी गुप्त शिकायतों पर ही काफी बड़े भ्रष्टाचार खुले हैं। लालू यादव का 950 करोड़ का चारा घोटाला भी ऐसी ही गुमनाम शिकायत पर खुला था। लेकिन शिकायतों की जांच से बचने के लिए अब प्रशासन ने तै कर लिया कि गुमनाम शिकायतों की जांच नही होगी। शिकायत करने वाले को शिकायत के साथ सुबूत लगाने पर भी उसे साक्ष्य देने के लिए बुलाया जाएगा। होना यह चाहिए कि भ्रष्टाचार के सुबूत लगे होने पर तुरंत जांच शुरू हो जाए। इस शिकायत में तो पीसीएसअधिकारी और शिकायतकर्ता की पत्नी की डायरी के पन्नों की छाया प्रति लगी है। इन पन्नों में लाखों का लेन-देन दर्ज है। जांचकर्ताओं को चाहिए था कि इस शिकायत की एक प्रति आयकर विभाग को कार्रवाई के लिए और भेजते। केंद्रीय सतर्कता आयोग पहले ही कह चुका है कि प्रत्येक गुमनाम शिकायत निरस्त नही की जानी चाहिए। शिकायत की प्रकृति देखी जानी चाहिए।गंभीर प्रकार की शिकायत पर जांच होनी ही चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

धरा प्रथम के मूल मंत्र को स्वीकार करे विश्व !

पृष्ठ 8 का शेष

संवेदनशील, समझदार, जागरूक और जिम्मेवार बनें जिस पर हम अपना जीवन बहुत सरलतापूर्वक जीते आए हैं और जी सकते हैं ! ऐसा इसलिए कि हमने मानवीय जीवन और अंतरिक्ष के ज्ञान विज्ञान के लिए खुद को ज्यादा जागरूक और विकसित करते हुए अपने ही जीवन और उसकी मूल थाती परम प्रिय जगत जननी और पालक धरा को संवेदनहीनता, लापरवाही और भटकाव के गहन अंधकार में ढकेल दिया है ! जिसका परिणाम सिर्फ और सिर्फ विनाश और सर्वनाश की तरफ ही जाता है !

अतः चंद्रयान तीन की सफलता के बहाने यह समय की मांग है कि हम बाह्य ज्ञान विज्ञान की यात्रा और उपलब्धियों के साथ अपने आंतरिक मूल मानवीय और धरा ज्ञान विज्ञान पर भी गंभीरतापूर्वक विचार और व्यवहार करें, अन्यथा कहीं ऐसा ना हो कि ऐतिहासिक असीम विकास की अंध भूख हमारी मानवीय सृष्टि को ही एक ऐसे दुखद इतिहास में बदल दे, जिसे लिखने पढ़ने वाले भी ना बचें क्योंकि जो महान आध्यात्मिक विभूतियां इस धरा पर होने वाले आत्मघाती मानवीय सर्वनाश के बाद भी रहेंगी, वो तो संभवतः आज और आने वाले हमारे विनाशक कल के इतिहास को ठीक उसी तरह नहीं लिखेंगी जैसे अब तक उन्होंने अपने प्राप्त अंतरिक्ष के कई ज्ञान विज्ञान को नहीं लिखा है !

सार यह कि विज्ञान की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आज भारत अपने हिस्से की योग्यता और सफलता का जो प्रदर्शन कर रहा है वह इसकी मजबूरी है !

> **चंद्रयान तीन की सफलता के बहाने यह समय की मांग है कि हम बाह्य ज्ञान विज्ञान की यात्रा और उपलब्धियों के साथ अपने आंतरिक मूल मानवीय और धरा ज्ञान विज्ञान पर भी गंभीरतापूर्वक विचार और व्यवहार करें, अन्यथा कहीं ऐसा ना हो कि ऐतिहासिक असीम विकास की अंध भूख हमारी मानवीय सृष्टि को ही एक ऐसे दुखद इतिहास में बदल दे, जिसे लिखने पढ़ने वाले भी ना बचें क्योंकि जो महान आध्यात्मिक विभूतियां इस धरा पर होने वाले आत्मघाती मानवीय सर्वनाश के बाद भी रहेंगी, वो तो संभवतः आज और आने वाले हमारे विनाशक कल के इतिहास को ठीक उसी तरह नहीं लिखेंगी जैसे अब तक उन्होंने अपने प्राप्त अंतरिक्ष के कई ज्ञान विज्ञान को नहीं लिखा है !**

विश्व समझे तब भी और नहीं समझे तब भी भारत की महत्वपूर्ण वैश्विक भूमिका और दायित्व तो वैश्विक मानवता की रक्षा और उसका कल्याण करना ही है ! यह आलेख भी वैश्विक समुदाय को यह बताने समझाने का प्रयास ही है कि मनुष्य जाति के लिए अंतरिक्ष ज्ञान विज्ञान से ज्यादा जरुरी है धरा के उस ज्ञान और विज्ञान को समझना ! उसके प्रति ज्यादा जागरूक, जवाबदेह और जिम्मेवार होना । जिसके बिना या जिससे दूर जाते हुए उसका जीवन ही असुरक्षित हो जाएगा !

इसरो की पूरी टीम को चंद्रयान तीन की सफलता के लिए पूरे देश की तरफ से हार्दिक बधाई और अशेष शुभकामनाएँ !

प्लास्टिक कचरा के प्रति जाग्रत हो समाज

सुरेश हिंदुस्थानी

वर्तमान में प्लास्टिक कचरा बढ़ने से जिस प्रकार से प्राकृतिक हवाओं में प्रदूषण बढ़ रहा है, वह मानव जीवन के लिए तो अहितकर है ही, साथ ही हमारे स्वच्छ पर्यावरण के लिए भी विपरीत स्थितियां पैदा कर रहा है। हालांकि इसके लिए समय-समय पर सरकार और सरकारी सहयोग लेकर चलने वाली गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा जागरण अभियान भी चलाए जा रहे हैं, परंतु परिणाम उस गति से मिलता दिखाई नहीं देता।

ऐसे में प्रश्न यह आता है कि गैर सरकारी संस्थाओं के यह अभियान अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं दे पा रहे हैं। जबकि कागजी प्रमाण इसकी सफलता बता रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह भी लगता है कि भारत में कागजों में काम होने की बीमारी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में कहा जा सकता है कि प्लास्टिक मुक्ति का अभियान गैर सरकारी संस्थाओं ने बलि चढ़ा दिया। अगर प्लास्टिक प्रदूषण बढ़ने की यही गति बरकरार रही तो एक दिन हमें शुद्ध हवा से वंचित होना पड़ सकता है।

एक बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्लास्टिक प्रदूषण की भयावहता का संकेत करते हुए देश से आहवान किया है कि इसकी रोकथाम के लिए समाज को आगे आना होगा। प्रधानमंत्री की चिंता वास्तव में समाज की भलाई के लिए है। हम प्रधानमंत्री के बयान की गंभीरता को समझें, और अपने कर्तव्य पथ पर अभी अग्रसर होने का व्रत लें। नहीं तो आने वाला समय बहुत ही खतरनाक साबित हो सकता है। कोई भी सरकारी योजना तभी सफल हो सकती है जब उसमें जनता की सकारात्मक भागीदारी होती है। कहा जाता है कि जिस देश की जनता अपने देश के प्रति जागरूक रहती है, वह देश और समाज लगातार प्रगति पथ पर गमन करता है। आम समाज सरकार की योजनाओं का ही ठीक तरीके से पालन कर ले, तो भी एक सुखद परिवर्तन का वातावरण बनने लगेगा। जो मानव समाज के लिए भी हितकर होगा।

हम जानते हैं कि वर्तमान में प्लास्टिक के कारण हो रहे वायु प्रदूषण के चलते हमारे शरीर में कई प्रकार के विषैले कीटाणु प्रवेश कर रहे हैं, जो हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल रहे हैं और नई-नई बीमारियां जन्म ले रही हैं। यह भी एक बड़ा सच है कि भारत में कई बीमारियां केवल गंदगी के कारण हो रही हैं, चाहे वह प्लास्टिक कचरे से उत्पन्न गंदगी हो या फिर इसके कारण जाम नालियों के गंदे पानी से प्रदूषण से पैदा होने वाली गंदगी हो।

हम यह भी जानते हैं कि प्लास्टिक की पॉलीथिन में बहुत से लोग घर का कचरा भरकर बाहर फैंक रहे हैं, जिसे हमारी गौमाता खाती है और हम जाने-अनजाने में गौहत्या का पाप कर रहे हैं। इसके साथ ही बहुत बड़ा सच यह भी है कि प्लास्टिक पॉलीथिन और खाद्य सामग्री में उपयोग आने वाले प्लास्टिक के सामान रासायनिक पदार्थों के इस्तेमाल के कारण हमें जहर भरे खाना खाने के लिए विवश कर रहे हैं। इसके कारण हमारा स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है।

हालांकि हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है,

"प्लास्टिक कचरे से मुक्ति पाने के लिए केन्द्र सरकार ने एक सराहनीय कदम उठाया है। हालांकि कई स्थानों पर इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध भी लगा है और व्यक्ति भी इस प्रतिबंध का पालन गंभीरता से कर रहे हैं। यहां तक कि कई विवाह समारोह और अन्य कार्यक्रमों में भी अब प्लास्टिक से निर्मित सामग्री और खाद्य पदार्थों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली डिस्पोजल वस्तुओं पर भी पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है। सरकार का यह कदम सभी राज्य और जनता के लिए एक पाथेय है।

लेकिन क्या हम जानते हैं कि प्लास्टिक कचरा स्वच्छ भारत अभियान की दिशा में बहुत बड़ा अवरोधक बनकर सामने आया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संकल्पना अपने भारत देश को साफ सुथरा रखने का एक अभिनव प्रयास है।

प्लास्टिक कचरे से मुक्ति पाने के लिए केन्द्र सरकार ने एक सराहनीय कदम उठाया है। हालांकि कई स्थानों पर इस पर पूरी तरह से प्रतिबंध भी लगा है और व्यक्ति भी इस प्रतिबंध का पालन गंभीरता से कर रहे हैं। यहां तक कि कई विवाह समारोह और अन्य कार्यक्रमों में भी अब प्लास्टिक से निर्मित सामग्री और खाद्य पदार्थों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली डिस्पोजल वस्तुओं पर भी पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है। सरकार का यह कदम सभी राज्य और जनता के लिए एक पाथेय है।

प्लास्टिक कचरे के बारे में यह सबसे बड़ा सच है कि यह वास्तव में आयातित कचरा है। हमारे देश में बहुत पहले से कागज और कपड़े के बैग ही प्रचलन में रहते थे, लेकिन विदेशियों की नकल करने के कारण हम भी प्लास्टिक का उपयोग करने की ओर प्रवृत होते चले गए। यही प्रवृति आज हमारे देश की सबसे विकराल समस्या बनकर उभर रही है। हमने एक कहावत भी सुनी है कि अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता, यह सोच किसी प्रकार से भारतीय संस्कृति का संवाहक नहीं हो सकता। यह सोच विदेशों की नकल है। आज प्लास्टिक कचरे का उपयोग भी कुछ इसी तर्ज पर किया जा रहा है। लोग अपना काम बनाने के लिए प्लास्टिक के सामानों का प्रयोग कर रहे हैं, और बाद में यही सामान कचरा बन जाता है, जो जनता के लिए गंभीर समस्याओं को पैदा कर रहा है।

कचरा फैंकने वाले लोगों को इतना नहीं मालूम कि यह कचरा हमारे लिए भी समस्या बन रहा है। देश के लिए गंभीर स्थिति पैदा कर रहा है। इसे रोकने के लिए क्या सरकार के कदम उठाने मात्र से यह सफल हो सकेगा। इसके लिए जनता की भागीदारी भी बहुत मायने रखती है। वास्तव में जिस देश की जनता अपने देश के प्रति तादात्म्य स्थापित करते हुए कार्य करती है, वह देश बहुत सुंदर और स्वच्छ होता है। हम भारत देश के निवासी हैं। इसलिए हमारे आचरण और कार्य में भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन होना चाहिए।

देश में वातावरणीय समस्याओं का प्रादुर्भाव हमारी अपनी देन है, जो जाने या अनजाने में हमने ही पैदा की हैं। स्वच्छ हवा प्रदान करने वाले पेड़ पौधे भी प्रदूषित वातावरण का शिकार हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें ताजी हवा कैसे मिल सकती है। हमें चैतन्य शक्ति का जागरण करके देश को स्वच्छ वातावरण देने के लिए प्लास्टिक कचरे से मुक्ति पाना है। अगर हम ऐसा कर सके तो यह तय है कि हमारा देश फिर से तरो ताजा हवा प्रदान करने वाला देश बन जाएगा। इसके लिए सरकार की योजना में हमें भी पूरी तरह से सहभागी बनना होगा।

छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति चिन्ताजनक

ललित गर्ग

नया भारत-सशक्त भारत बनाने की बात हो रही है, नई शिक्षा नीति-2020 को प्रभावी तरीके से लागू किया जा रहा, शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हुए उस पर सर्वाधिक ध्यान दिया जा रहा है। लेकिन इन सब प्रयत्नों के बावजूद चिंता की बात यह है कि पूरे देश में खुदकुशी करने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है। साल 2020 में 12500 से अधिक, तो 2021 में 13,000 छात्रों ने आत्महत्या की। ये आंकड़े नैशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो के हैं। कोटा में इसी रविवार को दो और छात्रों ने खुदकुशी कर ली। इसके साथ इस साल कोटा में आत्महत्या करने वाले छात्रों की संख्या 23 हो गई है, जो बहुत ही गंभीर मसला है। राजस्थान की इस शिक्षा नगरी में दो महीनों में 9 छात्रों ने सुसाइड कर चुके हैं। यहां लगातार छात्र आत्महत्या कर रहे हैं, इसके पीछे सरकार, प्रशासन या कोचिंग इंस्टिट्यूट की लापरवाही है या कुछ और? सुसाइड हब बन रहे कोटा के इस स्याह पक्ष को लेकर अब इस आपदा का हल तो ढूंढ़ना होगा। ऐसा नहीं है कि महामारी बनती इस समस्या के कारण हमें नहीं पता।

आजादी के अमृतकाल को सार्थक करने में शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा जा रहा है, कहा भी जा रहा है कि शिक्षा ही एक

"साल 2020 में 12500 से अधिक, तो 2021 में 13,000 छात्रों ने आत्महत्या की। ये आंकड़े नैशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो के हैं। कोटा में इसी रविवार को दो और छात्रों ने खुदकुशी कर ली। इसके साथ इस साल कोटा में आत्महत्या करने वाले छात्रों की संख्या 23 हो गई है, जो बहुत ही गंभीर मसला है। राजस्थान की इस शिक्षा नगरी में दो महीनों में 9 छात्रों ने सुसाइड कर चुके हैं। यहां लगातार छात्र आत्महत्या कर रहे हैं, इसके पीछे सरकार, प्रशासन या कोचिंग इंस्टिट्यूट की लापरवाही है या कुछ और? सुसाइड हब बन रहे कोटा के इस स्याह पक्ष को लेकर अब इस आपदा का हल तो ढूंढ़ना होगा। ऐसा नहीं है कि महामारी बनती इस समस्या के कारण हमें नहीं पता।

ऐसा हथियार भी है जिससे इंसान न केवल खुद को, बल्कि समाज, राष्ट्र एवं दुनिया को भी बदल सकता है। फिर शिक्षा के आसपास ऐसी कौनसी विसंगतियां एवं विडम्बना है कि छात्रों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। सब जानते हैं कि शिक्षा के व्यवसाय बनने से उसमें अनेक कुचेष्टाएं प्रवेश कर रही है, छात्रों से अच्छे परीक्षा परिणाम देने का दबाव बनाया जा रहा है, अधिक प्रतिस्पर्धा एवं होड ने छात्रों पर प्रेशर बनाया है, इसके साथ ही किस तरह से पैरेंट्स अपने सपने बच्चों पर थोपते हैं। उन्हें आईआईटी, एनआईटी या मेडिकल में ही बच्चों का सुनहरा भविष्य दिखता है, जिसे साकार करने के लिए कई अभिभावक कर्ज भी लेते हैं। मां-बाप के सपनों से दबा स्टूडेंट जब कोचिंग संस्थानों में पहुंचता है तो उस पर तैयारी और टेस्ट का प्रेशर डाला जाता है और यह कहकर भी डराया जाता है कि जेइइ या एनइइटी दुनिया की सबसे मुश्किल परीक्षाएं हैं।

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की कामयाबी इसमें है कि शुरूआती से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा हासिल करने के मामले में गलाकाट प्रतिस्पर्धा एवं जटिलता की बजाय सहजता हो। अगर किसी वजह से पढ़ाई करने या उसमें सफलता हासिल करने में किसी विद्यार्थी के सामने अड़चनें आ रही हो तो उसे दूर करने के उपाय किये जाएं। लेकिन बीते कई दशकों से यह सवाल लगातार बना हुआ है कि एक बड़ी तादाद में विद्यार्थी स्कूल-कॉलेजों में बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं और अपने अभिभावकों से नजरें ना मिला पाने के डर से आत्महत्या कर लेने हैं। इस मसले पर सरकार से लेकर शिक्षा पर काम करने वाले संगठनों की अध्ययन रपटों में अनेक बार इस चिंता को रेखांकित किया गया है, लेकिन अब तक इसका कोई सार्थक हल सामने नहीं आ सका है। प्रशासन से लेकर कोचिंग इंस्टीट्यूट के संचालक तक किसी के पास इसका जवाब नहीं है कि आखिरकार यहां सुसाइड के मामलों में लगातार इजाफा क्यों हो रहे हैं। छात्रों के द्वारा अगर लगातार ऐसे कदम उठाए जा रहे हैं तो साइकोलॉजिकल काउंसलिंग क्यों नहीं कराई जा रही है। इस संबंध कोचिंग संस्थान और प्रशासन की तरफ से कोई पहल क्यों नहीं की जा रही है?

जहन में एक ही सवाल बार-बार उठता है कि आखिर बच्चों पर प्रेशर बनाता कौन है? कोचिंग इंस्टीट्यूट की तरफ से पढ़ाई का दबाव रहता है या फैमिली प्रेशर से या फिर मनचाहे परीक्षा परिणाम नहीं मिलने पर छात्र इस कदर दवाब में आ जाते हैं कि सुसाइड जैसे कदम उठा लेते हैं। कुछ छात्र तो अपने सपनों को पूरा करने के लिए इतने प्रेशर में आ जाते हैं कि रिजल्ट आने से पहले ही आत्महत्या जैसा कठोर, त्रासद एवं खौफनाक कदम उठा लेते हैं। पुणे स्थित कंसल्टेंसी फर्म इनफिनियम ग्लोबल रिसर्च का अनुमान है कि इस साल के आखिर तक कोचिंग इंडस्ट्री का कारोबार 58,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा होगा। यानी कोचिंग संस्थान समृद्ध एवं शक्तिशाली है कि वे चाहें तो बच्चों की मेंटल हेल्थ सुधारने के लिए पहल कर सकते हैं। वे ऐसे छात्रों की मॉनिटरिंग भी कर सकते हैं, जिनका टेस्ट स्कोर कम हो और जो अक्सर क्लास से गायब रहते हों। ऐसा भी नहीं है कि कोटा के कोचिंग संस्थानों की ओर से इस तरह की पहल नहीं हुई है, लेकिन स्पष्ट है कि ये नाकाफी साबित हो रहे हैं।

विडम्बना तो यह है कि आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं केवल

शेष पृष्ठ 12 पर

चीन सुधरेगा नहीं, चौकन्ना रहना होगा

ललित गर्ग

चीन अपनी दोगली नीति, षडयंत्रकारी हरकतों एवं विस्तारवादी मंशा से कभी बाज नहीं आता। वह हमेशा कोई ऐसी कुचेष्टा करता ही रहता है जिससे भारत चीन बॉर्डर पर अक्सर तनाव रहता है। ब्रिक्स समिट में जगी भारत-चीन के सामान्य संबंधों की आस आकार लेने से पहले ही धूमिल हो गयी है। नई दिल्ली में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन से पहले भारत-चीन के संबंधों में सामंजस्य बैठाने के प्रयास चीन के नापाक इरादों से जटिल ही बने रहने वाले हैं। चीन की ओर से जारी किए गए ताजा नक्शे में अरुणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा बताकर चीन एक बार फिर सीमा विवाद को बढ़ाने के साथ भारत को उकसाने वाली कार्रवाई में जुटा है। हालांकि भारत ने दो टूक जवाब देते हुए साफ कहा है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है और यह चीनी दुष्प्रचार के सिवाय कुछ नहीं है। चीन की इस हरकत ने यह साफ कर दिया है कि उससे संबंध सुधारने की भारत की तरफ से कितनी ही पहल हो जाए, वह सुधरने वाला नहीं है।

दरअसल, सीमाओं को लेकर नित नए विवादास्पद तथ्य लाना चीन की फितरत में शामिल है। अरुणाचल प्रदेश ही नहीं, अक्साई चिन, ताइवान और विवादित दक्षिण चीन सागर पर भी चीन अपना दावा जताता रहा है। इससे पहले भी शातिर और चालबाज चीन ने अप्रेल में जारी अपने नक्शे में पहले चुपके से अरुणाचल प्रदेश के गांवों के नाम बदल दिए थे, जिसकी भारत ने निंदा की थी। अब दक्षिणी हिंद महासागर में 19 स्थानों के नाम बदले हैं। चीन की तरफ से दक्षिण हिंद महासागर में 19 तलों के नाम बदलने की हिमाकत की गई है, वे भारतीय प्रायद्वीप से करीब 2000 किलोमीटर दूर हैं। चीनी मीडिया ने इसे बीजिंग का 'सॉफ्ट पॉव्र' प्रोजेक्शन कहा है। चीन की ओर से की गई यह कार्रवाई भारत की संप्रभुता और हिंद महासागर के इलाके में भारतीय प्रभाव पर सीधा दखल है। एक महीने के भीतर शी जिनपिंग की भारत की संप्रभुता के साथ छेड़छाड़ की यह दूसरी हिमाकत है। इसे चीन के विस्तारवादी रवैये और हिंद क्षेत्र में चीन की बढ़ती दखल के रूप में देखा जा रहा है।

पिछले पांच साल में चीन नाम बदलने का यह दुस्साहस तीन बार कर चुका है। इस साल अप्रेल से पहले उसने 2021 में 15 और 2017 में छह जगहों के नाम बदले थे। हालांकि तब भी भारत ने विरोध दर्ज कराते हुए नए नामों को सिरे से खारिज कर दिया था। चीन का यह नया नक्शा ब्रिक्स समिट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात के बाद एवं नई दिल्ली में अगले माह की शुरूआत में ही होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन से पहले सामने आया है। समूची दुनिया चीन के विस्तारवादी रवैये और दूसरे देशों की जमीन को कब्जाने की नीयत को अच्छी तरह देखती और समझती है। चीन भरोसे करने के काबिल न पूर्व में रहा है और न भविष्य में होने की संभावनाएं हैं। भारत के मामले में चीन का रवैया सदैव शत्रुतापूर्ण एवं उसके क्षेत्रों पर अनाधिकृत कब्जाने का ही रहा है। चीन की पिछली हरकतों से भी यह साफ हो गया है कि चीन कभी भी भारत से मित्रवत संबंध बनाने के प्रयासों का साथ देने वाला नहीं है।

भारत एवं चीन दोनों देशों के बीच संबंधों में आने वाली तल्खी की बड़ी वजह भी चीन की नीयत में खोट, उच्छृंखलता एवं अनुशासनहीनता ही है। चीन ने एक बार फिर अपनी इस हरकत से भारत के प्रति शत्रुता को ही जाहिर किया है। भारत के साथ चीन का बर्ताव हमेशा दोगला एवं द्वेषपूर्ण रहा है। चीन ने विस्तारवादी नीतियों के तहत जैसी गतिविधियां चला रखी हैं उनसे भारत ही नहीं, बल्कि समूची दुनिया को चौकन्ना रहने की जरूरत है। राजनीतिक रूप से हमारे यहां विभिन्न दल भले ही एक-दूसरे के विरोधी हों, पर चीन को लेकर भारत से उठने वाली आवाज एक ही होनी चाहिए। चीन के

भारत एवं चीन दोनों देशों के बीच संबंधों में आने वाली तल्खी की बड़ी वजह भी चीन की नीयत में खोट, उच्छृंखलता एवं अनुशासनहीनता ही है। चीन ने एक बार फिर अपनी इस हरकत से भारत के प्रति शत्रुता को ही जाहिर किया है। भारत के साथ चीन का बर्ताव हमेशा दोगला एवं द्वेषपूर्ण रहा है। चीन ने विस्तारवादी नीतियों के तहत जैसी गतिविधियां चला रखी हैं उनसे भारत ही नहीं, बल्कि समूची दुनिया को चौकन्ना रहने की जरूरत है। राजनीतिक रूप से हमारे यहां विभिन्न दल भले ही एक-दूसरे के विरोधी हों, पर चीन को लेकर भारत से उठने वाली आवाज एक ही होनी चाहिए। चीन के मनमाने रवैये को पश्चिमी देश अच्छे से महसूस भी कर रहे और उनके पक्ष-विपक्ष के नेता एक सुर में उसकी हरकतों के खिलाफ आवाज भी उठा रहे।

मनमाने रवैये को पश्चिमी देश अच्छे से महसूस भी कर रहे और उनके पक्ष-विपक्ष के नेता एक सुर में उसकी हरकतों के खिलाफ आवाज भी उठा रहे। इसके विपरीत भारत में अलग स्थिति है। अपने देश के कई नेता चीनी सेना के अतिक्रमणकारी रवैये को लेकर मोदी सरकार को तो कठघरे में खड़ा करते हैं लेकिन चीन के प्रति एक शब्द भी नहीं बोलते।

हाल ही में राहुल गांधी ने कथित तौर पर लद्दाख की जमीन पर चीन का कब्जा होने का जो दावा किया गया है, वह जल्दीबाजी में बिना सोच के दिया गया गुमराह करने वाला बयान था, उससे यही पता चलता है कि वे चीन जैसे शत्रु राष्ट्र का मूक समर्थन करते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के सबसे बड़े दुश्मन राष्ट्र की वे तरफदारी करते एवं चीन के एजेंडे को बल देते नजर आते हैं। उनका यह रवैया नया नहीं, लेकिन यह देश के लिये घातक है। यह भूला नहीं जा सकता कि डोकलाम विवाद के समय वह भारतीय विदेश मंत्रालय को सूचित किए बिना किस तरह चीनी राजदूत से मुलाकात करने चले गए थे। क्या इससे अधिक गैरजिम्मेदाराना हरकत और कोई हो सकती है? ऐसे ही सवालों में आज तक इस सवाल का जवाब भी नहीं मिला कि आखिर राजीव गांधी फाउंडेशन को चीनी दूतावास से चंदा लेने की जरूरत क्यों पड़ी?

राहुल को यह भी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि जवाहरलाल नेहरू के समय चीन ने किस तरह पहले तिब्बत को हड़पा और फिर 1962 के युद्ध में 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' का नारा जप कर भारत माता की 45,000 वर्ग किलोमीटर भूमि चीन को दे दी। आज जब भारत चीन के अतिक्रमणकारी एवं अति महत्वाकांक्षी रवैये के खिलाफ डटकर खड़ा है और उसे उसी की भाषा में जवाब दे रहा है तब राहुल गांधी एवं विपक्षी दलों के नेता जानबूझकर प्रधानमंत्री की एक सशक्त एवं विश्व नेता की छवि पर हमला करने के लिए उतावले रहते हैं। वह अंध मोदी विरोध के चलते सारी मयार्दाओं का अतिक्रमण कर जाते हैं। वह यह बुनियादी बात समझने के लिए तैयार नहीं कि जब रक्षा और विदेश नीति के मामलों में राजनीतिक वर्ग एक सुर में नहीं बोलता तो इससे राष्ट्रीय हितों को चोट ही पहुंचती है, इससे राष्ट्र कमजोर होता है। चीन एवं पाकिस्तान जैसे दुश्मन राष्ट्र इसी से ऊर्जा पाकर अधिक हमलावर बनते हैं।

अपनी आर्थिक शक्ति के नशे में चूर अहंकारी चीन अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों को जिस तरह धता बता रहा है, उससे वह विश्व व्यवस्था के लिए खतरा ही बन रहा है। अब यह भी किसी से छिपा नहीं कि वह गरीब देशों को किस तरह कर्ज के जाल में फंसाकर उनका शोषण कर रहा है। चीन ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों की अनदेखी कर जिस तरह अपने नए नक्शे में दक्षिण चीन सागर को भी शामिल कर लिया, वह उसकी उपनिवेशवादी मानसिकता का ही परिचायक है। चीन अपनी कुचेष्टाओं एवं करतूतों से भारत को उकसाना चाहता है लेकिन शायद चीन भूल गया है कि अब भारत 1962 वाला भारत नहीं है, यह नया भारत है और आज का भारत चीन को मिट्टी में मिलाने की ताकत रखता है। भारत की रणनीति साफ है, स्पष्ट है। आज का भारत समझने और समझाने की नीति पर विश्वास करता है लेकिन अगर हमें आजमाने की कोशिश होती है तो जवाब भी उतना ही प्रचंड देने में वह समर्थ हैं। हम दुश्मन को घर में घुसकर मारते हैं। पूरा देश जानता है कि राष्ट्र के स्वाभिमान, राष्ट्र की अस्मिता, राष्ट्र की विरासत, राष्ट्र के गौरव पर हमला करने वालों को भारत मुंहतोड़ एवं करारा जवाब देने में सक्षम है। भारतीय सेना में सरहदें बदल देने की क्षमता है, दुश्मनों को इरादों को ध्वस्त करने का मादा है इसलिये चीन अपने नक्शे में भले ही छेड़छाड़ करता रहे, लेकिन भारत की भूमि पर कब्जाने की उसकी मंशा अब कभी साकार नहीं होगी।

गोरे रंग पे न इतना गुमान कर

शिशिर शुक्ला

पिछले दिनों एक राज्य की हाईकोर्ट के फरमान से तो जैसे मेरा दिल गार्डन गार्डन हो गया। पूरी बात समझाने के लिए स्टोरी को जरा विस्तार देना चाहूंगा। असल में दुनिया और कुदरत बड़ी रंगबिरंगी है, बस आपके अंदर रंग को पहचानने की प्रतिभा होनी चाहिए। अब मैं ठहरा भौतिकी का शिक्षक, सो ये गहरी बात मुझे पता है कि भइया ऑब्जेक्ट से जो रंग अंखियों तक पहुंचेगा, ऑब्जेक्ट उसी रंग का नजर आएगा। हमारे सूरज देवता भी अपने अंदर सात रंग छुपाए रहते हैं। खैर भूलोक में तरह-तरह के ऑब्जेक्ट हैं। कुछ तो इतने शालीन व सज्जन हैं कि सूर्यनारायण को प्रणाम करके सारे के सारे रंगों को रिफ्लेक्ट कर देते हैं। ऐसे ऑब्जेक्ट आम बोलचाल की भाषा में गोरे या गौरवर्ण की उपाधि से विभूषित एवं विख्यात होते हैं। ये जो गीत बना है, 'गोरे रंग पे ना इतना गुमान कर..' वह खासतौर से इन्ही के लिए रचा गया है। अब बात आती है दूसरे प्रकार के या यूं कहें कि बेशरम ऑब्जेक्ट की,

अभी कुछ दिन पूर्व कर्नाटक की हाईकोर्ट ने मेरे जैसे कलुओं पर कृपा बरसाते हुए मानो एक अभेद्य सुरक्षा कवच पहना दिया हो। कोर्ट ने साफ कहा कि पति को काला कहना क्रूरता है और इस आधार पर पति पत्नी को तलाक दे सकता है। अपनी कसम खाकर कहता हूं, जिस दिन यह समाचार अखबार की सुर्खियों में आया और हमारी गोरी मैडम जिनकी कि सुबह उठते ही अखबार बांचने की आदत है, उनकी नजरों के सामने पड़ा, यकायक उनकी आंखें जैसे फट गई हों। बड़ी गहनता से पढ़ने के बाद मानो उनको और उनके गोरे रंग को सांप सूंघ गया।

तो भैया जो विजिबल स्पेक्ट्रम के सारे रंग चूस लेते हैं वो इस विशेष श्रेणी में आते हैं। एक राज की बात आपको बता दें, मैं भी इसी बेशर्म वाली स्पेशल कैटेगरी में आता हूं।

अब बेशर्मी का कुछ तो प्रसाद मिलेगा ही, तो ये बेशर्मी के जीते जागते पुतले काले कलूटे, करिया भुजंग, उल्टा तवा, कल्लू आदि-आदि अलंकारों से विभूषित किये जाते हैं। बहुत हद तक अगर कहीं इज्जत बख़्श दी गई, तो बेचारों को सांवरा सलोना कहकर कुछ सांत्वना दे दी जाती है।

मैं भी बचपन से अनवरत रूप से इन विशेष उपाधियों के द्वारा संबोधन के कड़वे काढ़े के साथ गिनी चुनी तथाकथित सम्मान की बूंदों के प्रसाद से खुद को धन्य करता आया हूं।विद्यार्थी जीवन तक तो जैसे तैसे मैं अपनी गाड़ी खींच लाया। लेकिन प्रोफेसर की नौकरी मिलने के बाद बात आई शुभविवाह की, तो मैं भलीभांति समझ रहा था कि नौकरी और छोकरी दोनों उपलब्धियों की योग्यता और मानक अलग-अलग हैं। छोकरी की प्राप्ति में टैलेंट के साथ-साथ सुंदरता और वो भी गौरवर्ण का अपना अलग ही रोल होता है। लेकिन ये बातें दुनिया को कौन समझाए। खैर, घरवालों की जिद पर वो दिन आ पहुंचा, जब मुझे रिश्ते का श्रीगणेश करने जाना था। जिसका डर था वही हुआ, कन्या के रंग और मेरे रंग में जमीन आसमान का अंतर था।

'मुश्किल है अपना मेल प्रिये...' वाली धुन मेरे दिलोदिमाग पर दस्तक दे रही थी। बात करना तो दूर की बात नजरों की फ्रीक्वेंसी मिलाना भी नितांत मुश्किल लग रहा था। मुझे बाहर का रास्ता एकदम साफ दिख रहा था। लेकिन कभी-कभी किस्मत भी पूरे मजे लेने के मूड में होती है। कन्या इतनी सुशील व संस्कारवान निकली कि मेरा भौतिक विज्ञान का शिक्षक होना मेरे काले रंग पर भारी पड़ गया था। नतीजा ये हुआ कि चट मंगनी पट ब्याह। कुछ बरस तो सब कुछ इस तरह चलता रहा जैसे कि एक गीत है कि, 'दिन महीने साल गुजरते जाएंगे, हम प्यार

शेष पृष्ठ 12 पर

बच्चों की रचनात्मकता को आकाश देने का 'प्रयास'

ललित गर्ग

शिक्षा मंत्रालय स्कूली विद्यार्थियों को वैज्ञानिक पद्धतियों और प्रयोगों से परिचित करा कर उन्हें अनुसंधान और खोज का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से 'प्रयास' यानी 'प्रमोशन ऑफ रिसर्च एटीट्यूड इन यंग एंड एन्सपायरिंग स्टूडेंट्स' योजना शुरू करने जा रहा है। इस योजना का मकसद युवा विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक चिंतन उत्पन्न करना और साक्ष्य आधारित विज्ञान, प्रक्रिया, नवीनता और रचनात्मकता का विकास करना है। छात्रों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को खुला आकाश देने का यह 'प्रयास' सार्थक है। इससे भारत की स्कूली शिक्षा में व्यापक सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे और इससे शिक्षा की अपूर्णताएं दूर हो सकेगी।

किसी भी बच्चे के भीतर रचनात्मकता, कौशल, मौलिकता एवं कार्य-क्षमता की असीमित संभावनाएं होती हैं। अगर उसे एक सीमित ढांचे के भीतर समेट दिया गया है तो उसकी प्रतिभा भी उसी दायरे में सिमट कर रह जाती है। इसलिए बचपन और किशोरावस्था में ही रुचियों की पहचान करके अगर किसी बच्चे को उसकी रुचि के क्षेत्र को जानने-समझने और कुछ करने का अवसर दिया जाए तो पूरी संभावनाएं है कि भारी तादाद में बच्चों की प्रतिभा सामने आएगी और उसका लाभ देश और समाज को मिलेगा। हालांकि शिक्षा व्यवस्था में यह एक बुनियादी पक्ष होना चाहिए और कुछ हद तक इसका खयाल रखा भी गया है, मगर अब सरकार औपचारिक रूप से इस दिशा में एक ठोस पहल करने जा रही है।

हम सब कुछ नहीं कर सकते। पर यह भी सच है कि हम जितना खुद की क्षमताओं के बारे में सोच रहे होते हैं, उससे कहीं अधिक कर सकते हैं। कितनी ही बार हम केवल यही सोच कर पीछे हट जाते हैं कि हम से नहीं होगा। हमसे जो कम हैं, वे आगे बढ़ जाते हैं और हम एक कदम नहीं बढ़ा पाते। यह स्थिति विद्यार्थी जीवन की एक त्रासदी है, विडम्बना है। अब तक की शिक्षा इन बुनियादी बातों पर ध्यान नहीं दे पा रही थी, अब इस दिशा में प्रयास शुरू हुआ है तो उसका स्वागत होना ही चाहिए। यह एक तथ्य है कि बच्चों और किशोरों में खोजने और सीखने की प्रक्रिया काफी तीक्ष्ण होती है। खासकर अगर पढ़ाई-लिखाई के दौरान उनकी रुचि के विषय को निर्बाध तरीके से विकसित होने दिया जाए तो उनकी रचनात्मकता अक्सर कुछ नया खोज लाती है। लेकिन हमारे यहां निर्धारित पाठयक्रम ज्यादातर बच्चों के लिए शिक्षण के ढांचे का एक अनिवार्य हिस्सा होता है और उसी के मुताबिक उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी करनी होती है। किताबी ज्ञान से आगे बढ़ने की स्थितियां नगण्य होने से बच्चों की प्रतिभा का समुचित प्रस्फुटन एवं प्रकटीकरण नहीं हो पाता। इसमें कई वैसे बच्चों की प्रतिभा दबी रह जाती है, जिनकी अभिरूचियों को सही दिशा और उसे समझने का अवसर नहीं मिल पाता है। बल्कि इसके उलट ऐसे मामले आम हैं, जिनमें स्कूली शिक्षा के दौरान कई बार अभिभावक बच्चों को ऐसे विषयों की पढ़ाई में झोंक देते हैं, जिसे उन्हें जबरन पढ़ना पड़ता है। यह मान लिया जाता है कि निर्धारित पाठयक्रम और अभिभावकों की इच्छा के मुताबिक ही बच्चों की शिक्षा-दीक्षा होनी चाहिए, उन्हें अपनी पसंद के विषय में कुछ नया समझने और सीखने के प्रति हतोत्साहित किया जाता है।

"शिक्षा मंत्रालय स्कूली विद्यार्थियों को वैज्ञानिक पद्धतियों और प्रयोगों से परिचित करा कर उन्हें अनुसंधान और खोज का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से 'प्रयास' यानी 'प्रमोशन ऑफ रिसर्च एटीट्यूड इन यंग एंड एन्सपायरिंग स्टूडेंट्स' योजना शुरू करने जा रहा है। इस योजना का मकसद युवा विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक चिंतन उत्पन्न करना और साक्ष्य आधारित विज्ञान, प्रक्रिया, नवीनता और रचनात्मकता का विकास करना है। छात्रों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को खुला आकाश देने का यह 'प्रयास' सार्थक है। इससे भारत की स्कूली शिक्षा में व्यापक सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे और इससे शिक्षा की अपूर्णताएं दूर हो सकेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने प्रयास योजना 2023-24 के लिए एक दिशा-निर्देश तैयार किया है। इसकी शुरूआत 10 अक्तूबर 2023 से होगी। 'प्रयास के दिशा-निर्देश के अनुसार, इसका मकसद युवा छात्रों के बीच वैज्ञानिक चिंतन उत्पन्न करना, उनकी वास्तविक क्षमता, कौशल, क्षमता एवं प्रतिभा के अनुसार उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देना है। मनोवैज्ञानिक सलाहकार डॉ. रॉबर्ट वूड्स ने कहा था, 'आपकी प्राथमिकता में सबसे आगे कौन है? अगर आप हैं, तो आप जानबूझकर गलतियां नहीं करेंगे। अगर गलती सोची-समझी साजिश के तहत कर रहे हैं तो इसके नतीजे बुरे हो सकते हैं। अनजाने में हुई गलतियां, चाहे काम हो या बात, उन्हें समय रहते संभाला जा सकता है।'

प्रयास के अनुसार, प्रत्येक चयनित शोध प्रस्ताव के लिए कुल 50 हजार रुपये का प्रोत्साहन अनुदान किया जाएगा। इस राशि में से 10 हजार रुपये छात्र को दिए जाएंगे। एक से अधिक छात्र होने पर यह राशि बांट दी जायेगी। इसमें से छात्रों को शोधकार्य करने में सुविधा देने के लिए स्कूलों को 20 हजार और उच्च शिक्षण संस्थान के विशेषज्ञ को 20 हजार रुपये दिए जाएंगे। परियोजना में स्कूल के एक विज्ञान शिक्षक को पूरे कार्यकाल के दौरान छात्रों को उनके शोध कार्य में मार्गदर्शन के लिए नियुक्त किया जाएगा।

तमाम स्थितियों को देखने और उनका आकलन करने के बाद यह तथ्य बार-बार सामने आता रहा है कि अब शिक्षा को कोई नया रूप देना चाहिए। शिक्षा की अपूर्णता एवं अपर्याप्तता को दूर करने के लिये यह एक बहुत बड़ी अपेक्षा है। प्रयास ऐसी ही अपेक्षा को पूरा करने की दिशा में एक कदम है। अक्सर स्कूली शिक्षा के दौरान बहुत सारे बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा का एक तरह से दमन हो जाता है। जो बच्चे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नई खोज के वाहक बन सकते हैं, वे एक बने-बनाए ढर्रे के अनुगामी बने रह जाते हैं। इस लिहाज से देखें तो 'प्रयास' की अहमियत इस रूप में दर्ज की जा सकती है कि इसमें व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अनुसंधान या खोज करने के लिए विद्यार्थियों की क्षमता विकास पर जोर दिया गया है। दरअसल, बच्चे सबसे ज्यादा अपने आसपास के वातावरण को देख-समझ कर सीखते हैं। इसीलिये प्रयास योजना के अनुसार, इसमें किसी स्थानीय समस्या की पहचान कर उसका अध्ययन किया जाएगा। इसके पीछे के वैज्ञानिक कारणों की जांच करने एवं हल खोजने तथा किसी विचार, कल्पना या अवधारणा पर शोध करने पर जोर दिया गया है। जेन मास्टर मैरी जैक्श कहती हैं, 'अपनी उलझनों का सामना करते हुए अनजान चीजों को गले लगाना हमें विकास की ओर ले जाता है। हमें आगे बढ़ाता है।'

'प्रयास' के अंतर्गत स्कूली छात्रों और शिक्षकों के साथ उच्च शिक्षण संस्थानों के एक विशेषज्ञ की सहायता से किसी स्थानीय समस्या का हल करने या अनुसंधान आधारित समाधान निकालने का प्रयास किया जाएगा। इसमें भाग लेने वाले शिक्षार्थियों की आयु 14-18 वर्ष होगी। उनका नौवीं से 11वीं कक्षा में अध्ययनरत होना अनिवार्य होगा। जाहिर है, अगर बच्चों और किशोरों के मनोविज्ञान की समझ रखने वाले विशेषज्ञों के सुचिंतित निर्देशन में सही दिशा में अवसर उपलब्ध कराए गए तो यह योजना विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता के आकाश को विस्तार देने के लिहाज से एक अहम पहल साबित हो सकती है। केवल जानने भर से कुछ नहीं होता। हमें उस पर काम भी करना पड़ता है। इसी तरह केवल सोचते रहने या इच्छाएं होने से कुछ हाथ नहीं आता। हमें उन चाहतों को पूरा करने की दिशा में भी कदम बढ़ाना होता है। पर होता यह है कि हमें करना बहुत कुछ होता है, पर हम करते कुछ भी नहीं हैं। इस तरह की शिक्षा प्रक्रिया के कारण विद्यार्थियों की समग्र प्रतिभा सामने नहीं आ पा रही थी, शिक्षा की इस कमी की ओर ध्यान गया है तो उसके परिणाम भी अच्छे देखने को मिलेंगे। शिक्षा के माध्यम से हम जो चाहते हैं, वैसे तत्व शिक्षा में डालने होंगे। बीज बोया जा रहा था बबूल का और अपेक्षा आम के फल की की जा रही थी, यह कैसे संभव होता? अब नयी शिक्षा नीति में इन बातों पर ध्यान दिया जा रहा है।

छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति चिन्ताजनक

पृष्ठ 10 का शेष

कोचिंग संस्थानों में ही नहीं हो रही है बल्कि आइआइटी, एनआइटी और आइआइएसईआर, आइआइएम व केन्द्रीय विश्वविद्यालय और इनके जैसे स्तर के उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्र भी आत्महत्या कर रहे हैं। बड़ा प्रश्न है कि उच्च नागरिक बनाने की बजाय ये संस्थान छात्रों को आत्महंता बना रहे हैं तो उनके ऊपर एक काला बदनुमा दाग होने के साथ बड़ा सवाल भी खड़ा है कि ऐसे संस्थानों में क्या पढ़ाई का स्तर व माहौल उचित नहीं है? सरकार और देश के शिक्षाविदों को इस तथ्य को लेकर भी चिंता करनी ही होगी कि बीते पांच साल में इन उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेने वाले 92 विद्यार्थियों ने पढ़ाई के बीच में ही आत्महत्या क्यों कर ली? ऐसे ही आईआईटी बुम्बई के फर्स्ट ईयर के छात्र दर्शन सोलंकी ने पिछले दिनों खुदकुशी कर ली। इसके बाद वहां के छात्रों से अधिकारिक तौर पर कहा गया है कि छात्र एक दूसरे से जी (एडवांस) रैंक या गेट स्कोर के बारे में पूछताछ न करें। न ही ऐसा कोई सवाल करें जिससे छात्र की जाति, अमीरी-गरीबी और उससे जुड़े पहलू उजागर होते हो। इस तरह की गाइडलाइन की जरूरत केवल आईआईटी मुम्बई को ही नहीं, सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को एवं कोटा के कोचिंग संस्थानों को भी हैं। हालांकि बच्चों को मनोवैज्ञानिक दबाव से बाहर निकालने के लिए कोटा प्रशासन ने तकरीबन साल भर पहले एक गाइडलाइन जारी की थी, जिसे एक भी कोचिंग संस्थान ने पूरी तरह फॉलो नहीं किया है, प्रश्न है कि प्रशासन ने उनके खिलाफ क्या कदम उठाये? सवाल तो यह भी है कि क्या ऐसे सांकेतिक कदमों से आत्महत्या की बढ़ती संख्या जैसी गंभीर समस्याओं को हल किया जा सकता है।

"आत्महत्या की बढ़ती छात्र मानसिकता पर नियंत्रण के लिये सबसे पहले पैरंट्स को अपने बच्चों की काबिलियत पहचाननी होगी और उसी के अनुरूप आगे बढ़ने में उसकी मदद करनी होगी। कोटा में आज जो हो रहा है, उसे रोकने के लिए पैरंट्स, कोचिंग संस्थान और सरकारी मशीनरी सबको मिलकर काम करना होगा। यह जगजाहिर है कि एक ओर स्कूल-कालेज में शिक्षा पद्धति में तय मानक बहुत सारे विद्यार्थियों के लिए सहजता से ग्रा' नहीं होते, वहीं पढ़ाई में निरंतरता नहीं रहने के पीछे पठन-पाठन के स्वरूप से लेकर प्रतिस्पर्धा, गरीबी, पारिवारिक, सामाजिक और अन्य कई कारकों से जुड़ा हुआ है और इसके समाधान के लिए सभी बिंदुओं को एक सूत्र में रखकर ही देखने की जरूरत होगी।

आत्महत्या की बढ़ती छात्र मानसिकता पर नियंत्रण के लिये सबसे पहले पैरंट्स को अपने बच्चों की काबिलियत पहचाननी होगी और उसी के अनुरूप आगे बढ़ने में उसकी मदद करनी होगी। कोटा में आज जो हो रहा है, उसे रोकने के लिए पैरंट्स, कोचिंग संस्थान और सरकारी मशीनरी सबको मिलकर काम करना होगा। यह जगजाहिर है कि एक ओर स्कूल-कालेज में शिक्षा पद्धति में तय मानक बहुत सारे विद्यार्थियों के लिए सहजता से ग्रा' नहीं होते, वहीं पढ़ाई में निरंतरता नहीं रहने के पीछे पठन-पाठन के स्वरूप से लेकर प्रतिस्पर्धा, गरीबी, पारिवारिक, सामाजिक और अन्य कई कारकों से जुड़ा हुआ है और इसके समाधान के लिए सभी बिंदुओं को एक सूत्र में रखकर ही देखने की जरूरत होगी।

गोरे रंग पे न इतना गुमान कर

पृष्ठ 11 का शेष

में जीते प्यार में मरते जाएंगे' । लेकिन कुंडली के ग्रहदशा हमेशा एक से तो रहते नहीं। मैडम का पता नहीं कैसे कुछ ऐसा ब्रेनवाश हुआ कि अब तो मेरा प्रातःजागरण से लेकर रात्रिशयन तक कर्कश शब्दबाणों का सामना करते हुए बीतने लगा। और कोई विषय तो था नहीं, केवल एक मेरा करिया रंग ही था, जिसे गौरवर्णी मैडम हमेशा निशाने पर लिए रहती थीं। हद तो तब हुई जब मेरे काले रंग को रिमांड पर लेकर मुझ पर भावनात्मक अत्याचार किया जाने लगा और इस अत्याचार के सहारे अपनी फरमाइशों को पूरा किया जाने लगा। मैं दिन-रात लाचार होकर यही मनाता था कि साला कैसे भी चमड़ी में मेलनिन का लेवल ऊपर नीचे हो जाए या फिर कुछ चमत्कार हो जाए कि चमड़ी की अवशोषण क्षमता शून्य हो जाए। बॉडी केवल रिफ्लेक्शन ही रिफ्लेक्शन करने लगे तो फिर हम भी हीरो बन जाएं। मगर चमत्कार तो केवल फिल्मों में होते हैं, असलियत में नहीं। लेकिन एक कहावत है कि जिसका कोई नहीं, उसका खुदा होता है।

अभी कुछ दिन पूर्व कर्नाटक की हाईकोर्ट ने मेरे जैसे कलुओं पर कृपा बरसाते हुए मानो एक अभेद्य सुरक्षा कवच पहना दिया हो। कोर्ट ने साफ कहा कि पति को काला कहना क्रूरता है और इस आधार पर पति पत्नी को तलाक दे सकता है। अपनी कसम खाकर कहता हूं, जिस दिन यह समाचार अखबार की सुर्खियों में आया और हमारी गोरी मैडम जिनकी कि सुबह उठते ही अखबार बांचने की आदत है, उनकी नजरों के सामने पड़ा, यकायक उनकी आंखें जैसे फट गई हों। बड़ी गहनता से पढ़ने के बाद मानो उनको और उनके गोरे रंग को सांप सूंघ गया। बहरहाल मेरे प्रति उनका व्यवहार अचानक बदल गया है। लहजे में सम्मान और वाणी में मिठास की ओवरडोज शामिल होती दिख रही है। खाते पीते, घूमते टहलते, शॉपिंग हर वक्त अब मेरी ही मर्जी चलती है।

मैं भी कम खुराफाती नहीं हूं, सो यदा-कदा मैडम को कोर्ट के फरमान वाला अखबार दूर से ही दिखा देता हूं। नतीजा यह होता है कि मैडम को भी ये गीत याद आ जाता है कि, 'काले गोरे का भेद नहीं, हर दिल से हमारा नाता है.' ।

अब मुझे अपने मेलनिन लेवल अथवा अवशोषण क्षमता को लेकर ऊपरवाले से कोई शिकायत नहीं।

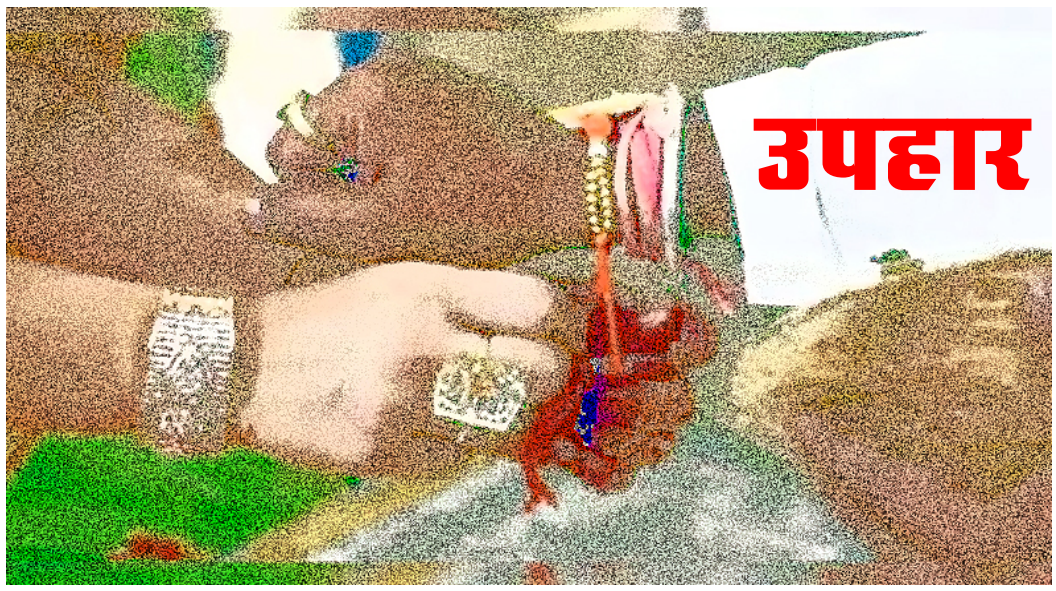

प्रभुनाथ शुक्ल

प्रज्ञान न जाने किस उधेड़बुन में खोया-खोया सा था।उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। दो-तीन दिन से उसने खाना भी ठीक से नहीं खाया था।बस मौन... खुद से बातें करता और बार-बार आसमान को निहारता। प्रज्ञान के भीतर चल रहे इस संघर्ष को पत्नी सरला अच्छी तरह समझती थी। वह पढ़ी-लिखी महिला थी। लेकिन वह भी बेबस थी।

'देखो ! प्रज्ञान इस तरह काम नहीं चलेगा।आपकी उदासी मुझसे देखी नहीं जाती। मैं आपके भीतर चल रहे संघर्ष को समझती हूँ। मैं आपकी धर्मपत्नी हूँ। तुम्हारे हर सुख -दुःख की सहभागी हूँ।मैं जानती हूँ आपकी नौकरी नहीं रही ।बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्चे-गृहस्थी चलाना मुश्किल हो रहा है। हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है। धन के नाम पर हमारे पास एक कौड़ी नहीं है। रक्षाबंधन का त्योहार करीब है। मीना दीदी कल आपको राखी बाँधने आएंगी। लेकिन आपके पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। जब तक बाबूजी थे वे हमें संभालते रहे,लेकिन अब वे इस दुनिया में नहीं रहे।'

सरला ने एक गहरी सांस ली और बुझी निगाहों से उसकी ओर देखा-

'मैं सब समझती हूँ प्रज्ञान, लेकिन आप चिंता मत कीजिए। सब ठीक हो जाएगा,आप इतने उदास मत होइए।आपकी उदासी मुझसे नहीं देखी जाती।'

सरला की आवाज में एक दर्द था एक पत्नी का दर्द...

'आप मेरी जिंदगी और मेरी उम्मीद है।आपका विचलित होना मुझे अंदर से तोड़ता है। आज जब हमारा बुरा वक्त आया तो हमें कोई नहीं पूछता।मुझे आज भी याद है,मेरे बाबू जी के इस दुनिया से जाने के बाद मायके की स्थिति खराब हो गई थी। आपने मेरे मायके की गिरी हालत को अपनी सूझ-बूझ से सम्भाला और आज आपकी वजह से ही वे कहाँ से कहाँ पहुँच गए। आपके सहयोग की वजह से ही आज मेरे भाई सफलता की ऊंचाइयों पर है पर आज उन्हें अपने दीदी और जीजा चूसे हुए गन्ने की तरह लगते हैं।'

सरला का स्वर निराशा से भर गया, 'आपने मेरे भाइयों के लिए क्या कुछ नहीं किया। लेकिन मेरे हालात पर आज किसी को भी तरस नहीं आता। कहते हैं नजर से दूर तो दिल से भी दूर... लोग एक कॉल भी नहीं करते। भाभियाँ कॉल उठाने से कतराती हैं। कहीं सरला उनसे कुछ मांग न ले पर लोग यह भूल जाते हैं अगर सुख एक जगह टिककर नहीं रहता तो दुख भी एक जगह टिककर नहीं रहता। प्रज्ञान मेरे पास एक उम्मीद है।अगर आप चाहे तो हमारी सगाई के समय आपने मुझे जो अंगूठी पहनाई थी मीना दीदी को रक्षाबंधन के अवसर पर उपहार स्वरूप दें दे।'

'लेकिन सरला ! तुम्हारे तो सारे आभूषण मेरी नौकरी छूटने के बाद गृहस्थी चलाने के लिए बिक गए थे।यह एक अंतिम निशानी बची है वह भी...नहीं... नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं ऐसा नहीं कर सकता।'

प्रज्ञान ने अपने आप को इतना लाचार कभी महसूस नहीं किया था।उसके चेहरे पर दर्द की लकीरें उभर आई। सरला ने उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर कहा

'आपकी खुशी से बढ़कर मेरे लिए यह अंगूठी नहीं है।'

प्रज्ञान गहरी सोच में डूब गया

'सरल! मेरी बहन मीना बहुत समझदार है।वह हमारे हालात के बारे में सब कुछ जानती है।मैं सब संभाल लूँगा, तुम चिंता मत करो।राखी पैसों का नहीं दिलों और रिश्तों का त्यौहार है। फिर इस दुनिया में समय का मारा सिर्फ मैं अकेला प्रज्ञान थोड़े हूँ जो बहन को राखी बांधने के बाद उपहार में कुछ नहीं दे पाएगा। मेरे जैसे लाखों भाई हैं।'

प्रज्ञान यादों के गलियारे में घूमने लगा।मीना को बचपन में मिट्टी के खिलौने बेहद पसंद थे। प्रज्ञान गाँव के मेले से मीना के लिए मिट्टी के खिलौने जरूर लाता। उसे आज भी याद है मीना जब शादी के बाद ससुराल जाने लगी तो वह अपने भाई प्रज्ञान से लिपट कर खूब रोई। इस घर से विदा लेते वक्त उन खिलौनो को प्रज्ञान को देते हुए उसने कहा था।

'भइया !इसे मेरी धरोहर समझना, यह महज खिलौने नहीं इनमें मेरा दिल बसता है। यह हम दोनों भाई-बहन के अटूट स्नेह की निशानी है। इस मिट्टी में मेरे भाई का प्यार बसता है। भइया वायदा करो इन्हें कभी मिट्टी समझ कर फेंक मत देना। इन्हें संभाल कर रखना एक दिन तुम्हें मेरी इस धरोहर को लौटना होगा। यह तुम्हारी बहन की थाती है।'

प्रज्ञान ने अपनी बहन मीना के उन खिलौनो को पच्चीस साल बाद भी संभाल कर रखा रखा था। आज वह उस नायाब तोहफे को सीने से लगा कर खूब रोया था। लेकिन उसे एक तसल्ली मिली थी कि राखी की बधाई में प्रज्ञान, मीना को उसकी थाती उपहार में देगा। अब उसकी चिंता दूर हो गयी थी। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट उभर आयी थी।

इंतजार की घड़ियां खत्म हुई, आखिर आज वह दिन आ गया। आज राखी का त्योहार था। राखी बांधने का शुभ मुहूर्त सुबह आठ बजे तक ही था। लिहाजा मीना समय से पहुँच गयी थी।मीना का विवाह एक समृद्ध परिवार में हुआ था, उसके पति आई पी एस अधिकारी थे।लिहाजा वह अच्छी और मंहगी गाड़ी से आयी थी। उसके साथ नौकर-चाकर भी थे।गाड़ी से उतरने के बाद मीना सीधे घर में पहुँच गई। साथ आए नौकरों ने मिठाइयाँ, बच्चों के खिलौने, उपहार और खाने-पीने के सामान अंदर पहुँचा दिए। अपनी बुआ मीना को देखकर बच्चे बहुत खुश हो गए थे।

प्रज्ञान को देखते ही मीना गले से लिपट गयी। प्रज्ञान मीना को अपनी जान से भी अधिक प्यार करता था। मीना एक मेधावी छात्रा थी,अपनी छोटी सी पूंजी में भी प्रज्ञान ने रात-दिन मेहनत करके उसे कंप्यूटर साइंस से इंजीनियरिंग कराई थी। सच कहूं तो इंजीनियर बनने का सपना सिर्फ मीना का नहीं था प्रज्ञान का भी था जिसे उसने रात दिन मेहनत करके पूरा कराया था। मीना की पढ़ाई और शादी में प्रज्ञान ने बहुत खर्च भी किया था। वह अपनी बहन की हर मांग हर जिद्द को पूरा भी करता था। मीना आज एक मल्टीनेशनल कम्पनी में मैनेजर थी। यह सब प्रज्ञान की वजह से ही संभव हो पाया था।वह भी प्रज्ञान को वह दिलों जान से प्यार करती है। उसे एक काँटा भी चुभ जाया करता है तो वह तड़प उठती। प्रज्ञान की नौकरी छूटने के बाद उसकी आर्थिक स्थिति से वह अच्छी तरह परीचित थी।

'अरे ! प्रज्ञान दीदी आई हैं,आप उनका स्वागत नहीं करेंगे या बस खड़े-खड़े आँसू ही बहाते रहेंगे।'

बहन मीना को देखकर उसकी आँखें कब भर आई थी यह बात प्रज्ञान को पता भी नहीं चली थी।उसने रुमाल के कोर से अपने आँसुओं को पोछा

'दीदी मुहूर्त निकल जाएगा, मैं तैयार हूँ। मेरी प्यारी बहन अब तू जल्दी से मुझे राखी बांध।'

प्रज्ञान की पत्नी ने राखी और दीप की थाल मीना को देते हुए कहा

'लीजिए दीदी !'

प्रज्ञान का तिलक चंदन और आरती करने के बाद राखी बाँध दिया। अब प्रज्ञान की बारी थी मीना की थाल में उपहार देने की लेकिन प्रज्ञान के हाथ काँपने लगे। उसका गला भर आया। मीना से वह आँखें नहीं मिला पा रहा था। लेकिन वह मजबूर और बेबस था। न चाहते हुए भी उसने उपहार में मीना को खिलौने की पोटली उसके हाथों में पकड़ा दी।

'दीदी ! मेरे इस अमूल्य उपहार को यहाँ मत खोलना।'

शर्मिंदगी से वह सर ऊपर नहीं उठा पा रहा था पर मीना ने उसकी बातों को नहीं माना।मीना की आँखें भर आईं।उसने आँखों से गिरते आँसुओं को पोछते हुए कहा।

'भईया ! यह मेरा अधिकार है। मैं तो यहीं देखूंगी कि मेरे लाडले भाई ने राखी में अपनी लाडली को क्या दिया है।'

प्रज्ञान के सामने ही मीना ने खिलौनों के झोले को खोला। खिलौने...मिट्टी के खिलौने मीना के सामने बचपन की न जाने कितनी यादें उभर आई। मीना खुशी से नाच उठी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वह बचपन के दिनों में खो गई। जैसे उसे जन्नत की खुशियाँ मिल गयीं हों। उन खिलौनों को वह बार-बार चूम रहीं थीं जैसे उसे दुनिया का सबसे श्रेष्ठ उपहार मिल गया हो। उसने प्रज्ञान को गले से लगा लिया। बहन की खुशी देख प्रज्ञान की आँखों से आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। वह जाने किस अतीत में खो गया था। सच ही कहते हैं लोग लड़कियों के लिए मायके की मिट्टी भी सोना होती है।

"प्रज्ञान के सामने ही मीना ने खिलौनों के झोले को खोला। खिलौने... मिट्टी के खिलौने मीना के सामने बचपन की न जाने कितनी यादें उभर आई।मीना खुशी से नाच उठी।उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वह बचपन के दिनों में खो गई।जैसे उसे जन्नत की खुशियाँ मिल गयीं हों। उन खिलौनों को वह बार-बार चूम रहीं थीं जैसे उसे दुनिया का सबसे श्रेष्ठ उपहार मिल गया हो।उसने प्रज्ञान को गले से लगा लिया। बहन की खुशी देख प्रज्ञान की आँखों से आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। वह जाने किस अतीत में खो गया था।सच कहते हैं लोग लड़कियों के लिए मायके की मिट्टी भी सोना होती है।

एक मोबाइल की आपबीती

भला हो बिजली कटौती करने वालो का, जब कभी-कभी लंबी कटौती होती है और मेरी बैट्री डिस्चार्ज होती है तब कहीं थोड़ा आराम पाता हूँ, सुकून से सो पता हूं-पर अब लग रहा वह सुकून भी जाता रहेगा,क्योंकि कवि महोदय लंबा-चौड़ा तगड़ा पावर बैंक ले आएं हैं, हे! भगवान मेरे कब अच्छे दिन आएंगे कब मुझे इस बेचैन कवि की आत्मा से मुक्ति मिलेगी।

सुरेश सौरभ

मैं एक स्मार्ट मोबाइल हूं। आज मैं आप को, अपनी बड़ी दुख भरी करूण कहानी सुनाने जा रहा हूँ। जब से एक कवि के पास आया हूं, तब से चाहे दिन हो चाहे रात हो , मुझे कभी सुकून-चैन नहीं मिला। जब देखो तब कवि जी मुझ पर पिले ही रहते हैं। कभी ये रील्स बना रहें कभी वो वीडियो अपलोड कर रहे हैं। सैकड़ों ग्रुपों से आते-जाते दिन-रात मैसेज, मेरी छाती पर हर समय साँपों की तरह लोटते रहते हैं। ऊपर से कभी ये कविता, कभी वो कविता लिख-लिख कर हर समय मेरे जिस्म से छेड़खानी करते रहते हैं कवि जी। एक पल मुझे जरा भी चैन नहीं-अगर कभी उनकी उंगलियों से सुकून मिला भी,तो कभी इधर-उधर की उल्टी-सीधी कविताओं को, कभी डांस वाले आइटम सांग को देखने सुनने से कवि महोदय जी बाज नहीं आते। अब क्या-क्या बताऊँ, क्या-क्या दर्द मेरे भरा अंदर भरा पड़ा कसक रहा है। तड़प रहा है। जब से इस कवि महोदय के हत्थे चढ़ा हूँ। तब से अपने अच्छे दिनों की खैर भगवान से मना रहा हूं ।

नेशनल हाईवे पर इतनी गाड़ियाँ नहीं निकली होंगी जितनी मेरे जिस्म पर मेल, यानी ईमेल सर्र-सर्र रोज गुजरीं हैं, बाई चान्स जब कभी कवि जी अपना कहीं मोबाइल रखकर भूल भी जाते हैं, तो उनके बच्चे भी उनसे हजार कदम बढ़कर आगे हैं- दुनिया भर के यू-ट्यूबों चैनलों की लाइटों से खेल-खेल कर, हमारा खाना खराब कर डालते हैं।

काजी घर के चूहे सयाने वाली कहावत सुनी थी, पर कवि जी के बच्चे सयाने कितने होते हैं यह मैं कवि जी के घर आकर कायदे जान पाया हूँ। समझ पाया हूँ। भला हो बिजली कटौती करने वालो का, जब कभी-कभी लंबी कटौती होती है और मेरी बैट्री डिस्चार्ज होती है तब कहीं थोड़ा आराम पाता हूँ, सुकून से सो पता हूं-पर अब लग रहा वह सुकून भी जाता रहेगा,क्योंकि कवि महोदय लंबा-चौड़ा तगड़ा पावर बैंक ले आएं हैं, हे ! भगवान मेरे कब अच्छे दिन आएंगे कब मुझे इस बेचैन कवि की आत्मा से मुक्ति मिलेगी। कब इसके चगुंल से छूट, बावन अंगुल कूद-कूद कर छैंयां-छैंयां कर पाऊंगा। खुशी मना पाऊंगा।

मनाने के साथ समझने होंगे रक्षा बंधन के मायने ?

प्रियंका 'सौरभ'

भाई-बहन का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों में सबसे ऊपर है। हो भी न क्यों, भाई-बहन दुनिया के सच्चे मित्र और एक-दूसरे के मार्गदर्शक होते है। जब बहन शादी करके ससुराल चली जाती है और भाई नौकरी के लिए घर छोड़कर किसी दूसरे शहर चला जाता है तब महसूस होता है कि भाई-बहन का ये सर्वोत्तम रिश्ता कितना अनमोल है। सरहद पर खड़ा एक सैनिक भाई अपनी बहन को कितना याद करता है और बहनों की ऐसे वक़्त क्या दशा होती है इसके लिए शब्द नहीं है। रंग-बिरंगे धागे से बंधा ये पवित्र बंधन सदियों पहले से हमारी संस्कृति से बहुत ही गहराई के साथ जुड़ा हैं।

यह पर्व उस अनमोल प्रेम का, भावनाओं का बंधन है जो भाई को सिर्फ अपनी बहन की नहीं बल्कि दुनिया की हर लड़की की रक्षा करने हेतु वचनबद्ध करता है। भाई-बहन के आपसी अपनत्व, स्नेह और कर्तव्य बंधन से जुड़ा त्योहार भाई-बहन के रिश्ते में नवीन ऊर्जा और मजबूती का प्रवाह करता है। बहनें इस दिन बहुत ही उत्साह के साथ अपने भाई की कलाई में राखी बांधने के लिए आतुर रहती हैं। जहां यह त्योहार बहन के लिए भाई के प्रति स्नेह को दशार्ता है तो वहीं यह भाई को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है।

रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है। रक्षाबंधन के दिन बहने भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है। वास्तव में ये त्योहार से रक्षा के साथ जुड़ा हुआ है, जो किसी की भी रक्षा करने को प्रतिबद्ध करता है। अगर इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ दुनिया की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही मायनों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा। इस पावन त्योहार का अपना एक अलग स्वर्णिम इतिहास है, लेकिन बदलते समय के साथ बाकी रिश्तों की तरह इसमें भी बहुत से बदलाव आए हैं। जैसे-जैसे आधुनिकता हमारे मूल्यों और रिश्तों पर हावी होती जा रही है। संस्कृति में पतन के फलस्वरूप रिश्तों में मजबूती और प्रेम की जगह दिखावे ने ले ली है। आज के बदलते समय में इस त्योहार पर भी आधुनिकता हावी होने लगी है, तब से आज तक यह परंपरा तो चली आ रही है लेकिन कहीं न कहीं हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं।

रंग-बिरंगे धागों में अब अपनत्व की भावना और प्रेम की गर्माहट कम होने लगी है। एक समय में जिस तरह के उसूल और संवेदना राखी को लेकर थी शायद अब उनमें अब रुपयों के नाम की दीमक लगने लगी है फलस्वरूप रिश्तों में प्रेम की जगह पैसे लेने लगे हैं। ऐसे में संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का ये अनमोल रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा भर नहीं है।

लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है। बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता, अटूट रिश्तें कैसे बन पाएंगे। इतिहास मे कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमे युद्ध के दौरान श्री कृष्ण की उंगली घायल हो गई थी, श्री कृष्ण की घायल उंगली को द्रौपदी ने अपनी साड़ी मे से एक टुकड़ा बाँध दिया था, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट मे द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था। रक्षा बंधन की कथाएं बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसी बहन का साया जब भी भाई को पुकारता था, तो दुनिया की हर ताकत से लड़ कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था।

राखी के त्योहार का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है, लेकिन क्या सही मायनों में बहन की रक्षा हो पाती है। आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बेहद आवश्यक हो गया है। अगर इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ दुनिया की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही मायनों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा।

कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी लड़ने में असमर्थ थी अतः उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की। हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की।

जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई। आज एक बार फिर भातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है, उसकी इज्जत एवं अस्मिता को बार-बार नोचा जा रहा है।

लड़कों से ज्यादा बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊंची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है। उसे नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे।

इन विपरीत हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं। इसलिए मेरा मानना है कि राखी के इस परम पावन पर्व पर भाइयों को ईमानदारी से पुनः अपनी बहन ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की, कसम लेने की अहम जरूरत है। तभी ये राखी का पावन पर्व सार्थक बन पड़ेगा और भाई-बहन का प्यार धरती पर शाश्वत रह पायेगा। यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्त्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फि ल्में भी इससे अछूते नहीं हैं। रक्षाबन्धन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है।

लेकिन अब प्रेम रस में डूबें रंग-बिरंग धागों की जगह चांदी और सोने की राखियों ने ली तो सामाजिक व्यव्हार में कर्तव्यों को समझने के बजाय रिवाज को पूरा करने कि नौबत आई। प्रेम और सद्भावना की जगह दिखावे ने ले ली। तभी तो रक्षा-बंधन के दिन सुबह उठते ही हर किसी के स्टेटस पर बस रक्षाबंधन की तस्वीरें और वीडियो की भरमार होती है, अब बहनों की जगह ई-कॉमर्स साइट ऑनलाइन आर्डर लेकर राखी दिये गये पते पर पहुँचाती है। अगर हम सोशल मीडिया पर दिखावे की जगह असल जिंदगी में इन रिश्तों को प्रेमरुपी जल से सींचा जाए तो हमेशा परिवार में मजबूती बनी रहेगी। राखी के त्योहार का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है, लेकिन क्या सही मायनों में बहन की रक्षा हो पाती है। आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बेहद आवश्यक हो गया है।

राखी के दिन केवल अपनी बहन की रक्षा का संकल्प मात्र नहीं लेना चाहिए नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत के मान-सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए ताकि सही मायनों में राखी के दायित्वों का निर्वहन किया जा सके। रक्षाबंधन पर्व पर हमें देश व धर्म की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए।

रक्षाबंधन : रक्षा का पवित्र बंधन

पिंकी सिंघल

त्योहारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व होता है क्योंकि यह हमारे जीवन में खुशनुमा उमंगे एवं तरंगें पैदा करते हैं,हमें जीने का नया ढंग सिखाते हैं और हमारी संस्कृति को जीवंत बनाते हैं। हमारे जीवन में रस लाने का जो विशेष कार्य हमारे लिए हमारे ये उत्सव करते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना त्योहारों के जीवन एकदम नीरस हो जाता है, जीवन में एक खालीपन सा महसूस होता है और एक बोरियत सी महसूस होने लगती है।

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है।साल के प्रत्येक महीने में कोई ना कोई तो त्योहार अवश्य आता है जिसे हम सभी भारतवासी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और अपनी संस्कृति को आगे नई पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और धार्मिक मान्यताओं को महत्व देते हुए त्योहारों को मनाना कोई हम भारतवासियों से सीखे,जो हर त्यौहार को पूरे दिल से और ईमानदारी से मना एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम जताकर मानवता की असली मिसाल भी कायम करते हैं। यही भारतीयता है ,यही भारतीय संस्कृति की असली पहचान जहां हम सभी देशवासी धर्म, जाति, वर्ग ,रंग का भेदभाव भुलाकर मिलजुल कर एक दूसरे के त्यौहारों में शरीक होते हैं ,बधाइयां देते हैं ,गले मिलते हैं और सभी अवसरों को पूरी धूमधाम से मनाते हैं।

आज अपने इस लेख में मैं भारत में मनाए जाने वाले पावन पर्व रक्षाबंधन के बारे में कुछ जानकारियां आप सभी के साथ साझा करना चाहूंगी ।हम सभी जानते हैं कि रक्षाबंधन का पावन पर्व प्रतिवर्ष सावन मास की पूर्णिमा तिथि को पूरे भारतवर्ष में बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है ।इस वर्ष भी यह पावन पर्व अगस्त महीने की 22 तारीख को पूरे भारतवर्ष में मनाया जाएगा ।भाई-बहन के पवित्र प्रेम पर आधारित यह त्योहार संबंधों में रस और मधुरता घोल देता है।

रक्षाबंधन के दिन सभी बहनें अपने सगे भाई अथवा मुंह बोले भाई अथवा उस इंसान के हाथों में रक्षा सूत्र बांधती है जिसे वह दिल से अपना भाई मानती है,फिर चाहे उससे उसका रक्त संबंध हो अथवा ना हो ।भाई भी बहन को अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहार देता है और जीवन भर अपनी बहन की रक्षा करने का वचन भी देता है।

हिंदू धर्म में देवताओं को भी राखी बांधने की पुरानी परंपरा रही है। कहा जाता है कि देवताओं को राखी बांधने से देवतागण सारी मनोकामनाएं पूरी करते हैं । इन देवताओं में गणेश जी, शिव जी, विष्णु जी, भगवान श्री कृष्ण जी और हनुमान जी आदि को राखी बांधने का खासा प्रचलन रहा है। कहा जाता है कि भद्रा काल में राखी नहीं बांधी चाहिए क्योंकि भद्रा सूर्य देव की पुत्री कहलाती है जो किसी भी कार्य के लिए शुभ नहीं मानी जाती। मान्यता है कि रावण की बहन ने रावण को भद्रकाली में ही राखी बांधी थी इसलिए ही उसका सर्वनाश हो गया था।

हिंदू धर्म में देवताओं को भी राखी बांधने की पुरानी परंपरा रही है। कहा जाता है कि देवताओं को राखी बांधने से देवतागण सारी मनोकामनाएं पूरी करते हैं । इन देवताओं में गणेश जी, शिव जी, विष्णु जी, भगवान श्री कृष्ण जी और हनुमान जी आदि को राखी बांधने का खासा प्रचलन रहा है। कहा जाता है कि भद्रा काल में राखी नहीं बांधी चाहिए क्योंकि भद्रा सूर्य देव की पुत्री कहलाती है जो किसी भी कार्य के लिए शुभ नहीं मानी जाती।

रक्षाबंधन के त्यौहार के साथ साथ ही सावन महीने का भी अंत हो जाता है। कहीं-कहीं पर बहनें अपने भाइयों के साथ साथ अपने पिता को भी राखी बांधती हैं। उसी प्रकार कुछ महिलाएं अपने भाई भतीजों दोनों को ही राखी बांधती हैं। रक्षाबंधन मनाए जाने के पीछे कई कहानियां प्रसिद्ध हैं।राजा बलि और माता लक्ष्मी की कहानी भी रक्षाबंधन के शुरू होने का कारण बताई जाती है।

सैंकड़ों या यूं कहें कि भारतवर्ष में रक्षाबंधन का यह पर्व हजारों वर्षों से मनाया जा रहा है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि महाभारत में द्रोपदी ने भी भगवान श्री कृष्ण को राखी बांधी थी ।ठीक उसी प्रकार एक प्रसंग के मुताबिक मेवाड़ की रानी कर्मवती ने भी बहादुरशाह द्वारा उनके राज्य पर हमला किए जाने की खबर जानने के पश्चात हुमायूं के पास राखी भेजी थी और रानी कर्मवती की राखी का सम्मान करते हुए हुमायूं ने उसकी रक्षा भी की थी।

कहने का तात्पर्य यह है कि रक्षाबंधन का त्यौहार मनाए जाने के पीछे बहुत सी ऐतिहासिक कहानियां प्रचलित हैं ।वजह चाहे जो भी रही हो परंतु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि रक्षाबंधन का त्योहार पूरे भारतवर्ष में हजारों वर्षों से पूरी श्रद्धा ,पवित्रता और मान सम्मान के साथ मनाया जाता रहा है और आगे भी इसी प्रकार मनाया जाता रहेगा।

मेरे इस लेख में शामिल की गई सभी जानकारियों से हम सभी जन पहले से ही बहुत अच्छी तरह परिचित हैं ।इस आलेख में ऐसा कुछ नया नहीं लिखा गया है ।यहां मैं केवल यह अभिव्यक्त करने का छोटा सा प्रयास कर रही हूं कि वर्तमान में जब हम सभी एक भागदौड़ भरी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे में हम सभी को अपने त्योहारों को पूरा मान सम्मान देना चाहिए एवं अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को भी यह धरोहर संभलवानी चाहिए ताकि वह भी इन त्योहारों को उतने ही मान सम्मान ,स्नेह और श्रद्धा के साथ मनाएं जितना कि हमारे पूर्वज मनाते थे और उनके बाद हम भी आज उन त्योहारों को उसी श्रद्धाभाव से मनाते हैं ।

त्योहारों का असली मतलब बच्चों को समझाना हमारा ही तो परम कर्तव्य है। हमें अगली पीढ़ी को यह समझाना होगा कि त्योहारों का वास्तविक अर्थ एक दूसरे के सुख दुख में भागीदार बनना एवं उनके मुसीबत के समय में उनकी सहायता करना एवं एक दूसरे के साथ मेलजोल बनाए रखना है। औपचारिकता के तौर पर त्यौहार मनाने का कोई औचित्य नहीं है। त्योहारों को पूरी श्रद्धा भाव से मनाया जाए,वस्तुतःतभी उनके असली मायने हैं।

खेलों के महानायक बन नीरज ने लिखा स्वर्णिम इतिहास

ललित गर्ग

देश को लगातार मिल रही खुशीभरी खबरों एवं कीर्तिमानों के बीच एक और कीर्तिमान नीरज चोपड़ा ने जड़ दिया। चार दशक में पहली बार विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में किसी भारतीय का देश की झोली में एक दुर्लभ स्वर्ण पदक डालना वाकई नया इतिहास रचने से कम नहीं है। नीरज चोपड़ा का जेवलिन थ्रो प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतना सूखे में बरसात की बूंदों के समान ही माना जाएगा। इस रोशनी के एक टुकड़े ने देशवासियों को प्रसन्नता का प्रकाश दे दिया है, संदेश दिया है कि देश का एक भी व्यक्ति अगर दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की ठान ले तो वह शिखर पर पहुंच सकता है। विश्व को बौना बना सकता है। पूरे देश के निवासियों का सिर ऊंचा कर सकता है। इस ऐतिहासिक एवं यादगार उपलब्धि की खबर जब अखबारों में छपी तो सबको लगा कि शब्द उन पृष्ठों से बाहर निकलकर नाच रहे हैं।

नीरज की एक खिलाड़ी होने की यात्रा अनेक संघर्षों, झंझावातों एवं चुनौतियों से होकर गुजरी है। चंद बरस पहले वह बढ़ते वजन से परेशान एक युवा थे। 13 साल की उमर में उनका वजन 80 किलोग्राम हो गया था जिसकी वजह से उनकी उम्र के दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते थे। वहां से शुरू करके नीरज ने न सिर्फ अपने शरीर को साधा बल्कि अपने मन को अनुशासित कर इस तरह से केंद्रित किया कि लगातार आगे बढ़ते रहे, कीर्तिमान गढ़ते रहे। लेकिन उनके पांव जमीन पर हैं और तभी वह भाला फेंकते हैं तो दूर तक जाता है और एक स्वर्णित इतिहास रचता है। तभी अब तक कोई भी ऐथलीट देश को जो गौरव नहीं दिला पाया था, वह नीरज ने दिलाया है। लेकिन बात सिर्फ इस एक गोल्ड की नहीं है। उनकी इस उपलब्धि के साथ ऐसी कई बातें जुड़ी हैं जो उन्हें खास बनाती हैं। उनको खास बनाने में जहां उनकी लगन, परिश्रम, निष्ठा एवं खेलभावना रही, वही साल 2018 में एशियाई खेल और फिर कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड, 2020 में तोक्यो ओलिंपिक्स में गोल्ड, 2022 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में सिल्वर, 2022 में ही डायमंड लीग में गोल्ड और 2023 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में गोल्ड लाने का उनका करिश्मा तो बहुत कुछ कहता ही है, सबसे बड़ी बात यह है कि इस दौरान वह अपने प्रदर्शन में लगातार निखार लाते रहे। उन्होंने भारतीय खेलों को भी दुनिया में शीर्ष पर पहुंचाया है। इस उपलब्धिभरी सुहानी फिजां में सबसे अहम सवाल यह है कि दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश खेलों में वह मुकाम हासिल क्यों नहीं कर पाया जिसका वह हकदार है? क्या हमारे यहां खेल का माहौल नहीं है या फिर सुविधाओं के अभाव में खिलाड़ी आगे नहीं बढ़ पाते। या खेल भी राजनीति के शिकार है?

ये सवाल इसलिए उठते हैं क्योंकि विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में अब तक पदक पाने वाले देशों की सूची में भारत बहुत पीछे है। महज पांच करोड़ की आबादी वाला देश केन्या 65 स्वर्ण पदक के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। वहीं एक करोड़ की आबादी वाला देश क्यूबा विश्व चैंपियनशिप में 22 स्वर्ण पदक अपनी झोली में डाल चुका है। ओलम्पिक खेलों की बात की जाए तो वहां भी भारत का प्रदर्शन निराशाजनक ही रहा है।

ओलम्पिक खेलों के 127 साल के इतिहास में हॉकी के अलावा हमें अब तक दो स्वर्ण पदक ही मिले हैं। इनमें एक नीरज चोपड़ा व दूसरा अभिनव बिन्द्रा के नाम ही है। ऐसा नहीं है कि आजादी के बाद देश ने विकास की रफ्तार नहीं पकड़ी हो। हर क्षेत्र में भारत ने प्रगति की नई ऊंचाइयों को छुआ है। विज्ञान हो या अंतरिक्ष, देश ने दुनिया में अलग पहचान बनाई है। इस समय हम दुनिया की पांचवीं आर्थिक महाशक्ति बन गए हैं। छह दिन पहले ही चांद पर तिरंगा लहराया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कारण विश्व में भारत की बात को महत्त्व दिया जाता है। इन तमाम उपलब्धियों के बीच सवाल यही उठता है कि हम खेलों में पीछे क्यों हैं?

नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ी हमारे यहां कम नहीं हैं। खिलाड़ियों को समुचित माहौल, प्रशिक्षण और सुविधाएं मिलें, तो वे पदकों का ढेर लगा सकते हैं, नये कीर्तिमान एवं रिकार्ड बना सकते हैं। रिकार्ड सदैव टूटने के लिए होते हैं और टूटना ही प्रगति का प्रतीक है। नीरज शिखर पर है तो उसको छूने के प्रयास रुके नहीं। ऊंचा उठने के लिए असीम विस्तार है। हमारे खेलों में जब कोई खिलाड़ी अपनी काबिलियत के दम पर शिरकत करता है तो वह न हिन्दू होता है और न मुसलमान बल्कि हिन्दुस्तानी या भारतीय नागरिक होता है।

क्या इसके लिए खेल संघ जिम्मेदार हैं? खेल संघों पर वर्षों से कब्जा जमाए बैठे राजनेता और नौकरशाह खेल की विकास यात्रा में बाधक तो नहीं बन रहे?

ऐसे समय जब चांद के दक्षिण ध्रुव के पास चंद्रयान उतार कर भारतीय वैज्ञानिक स्पेस एक्सप्लोरेशन के क्षेत्र में अपना झंडा बुलंद कर चुके हैं और शतरंज में प्रग्नानंदा जैसे यंग टैलंट नई उम्मीदें दिखा रहे हैं, नीरज चोपड़ा की यह उपलब्धि न केवल देशवासियों के मनोबल को और ऊंचा करती है बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी निरंतर बेहतर करने का विश्वास और प्रेरणा देती है और आजादी के अमृतकाल को अमृतमय करने का हौंसला देती है। नीरज ने 88.17 मीटर की दूरी पर भाला फेंक कर कीर्तिमान स्थापित किया और साबित कर दिया कि भारत की मिट्टी में जन्मे खेलों को यदि खुद भारतवासी ही इज्जत की नजर से देखें तो यह देश कमाल कर सकता है। यदि सच पूछा जाये तो नीरज चोपड़ा भारतीय मूल के खेलों के 'महानायक' बन चुके हैं। उनसे पहले यह रूतबा कुश्ती के पहलवान गुलाम मुहम्मद बख्श उर्फ 'गामा' को ही प्राप्त हुआ है या ओलम्पिक खेलों में शामिल हाकी के खिलाड़ी मेजर ध्यान चन्द के नाम रहा है। नीरज चोपड़ा का योगदान इसलिए बड़ा एवं महान है कि उन्होंने ग्रामीण एवं देशी खेल को विश्व प्रतिष्ठा प्रदान की है। भले ही आर्थिक एवं चकाचौंध वाली सोच के कारण भारत में क्रिकेट का खेल अधिक लोकप्रिय हो, लेकिन खेल की वास्तविक भावना उसमें कहां रही? उसके मुकाबले भाला फेंक जैसे खेल के प्रति अपना जीवन समर्पित करके नीरज ने भारत की नई पीढीं को नई दिशा एवं नया मुकाम देने का काम किया और सन्देश दिया कि भारतीय यदि चाहे तो ग्रामीण खेल कहे जाने वाली स्पधाओं को भी विश्व पटल तक पहुंचा सकते हैं।

नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ी हमारे यहां कम नहीं हैं। खिलाड़ियों को समुचित माहौल, प्रशिक्षण और सुविधाएं मिलें, तो वे पदकों का ढेर लगा सकते हैं, नये कीर्तिमान एवं रिकार्ड बना सकते हैं। रिकार्ड सदैव टूटने के लिए होते हैं और टूटना ही प्रगति का प्रतीक है। नीरज शिखर पर है तो उसको छूने के प्रयास रुके नहीं। ऊंचा उठने के लिए असीम विस्तार है। हमारे खेलों में जब कोई खिलाड़ी अपनी काबिलियत के दम पर शिरकत करता है तो वह न हिन्दू होता है और न मुसलमान बल्कि हिन्दुस्तानी या भारतीय नागरिक होता है। भारत की एकता की ताकत दिखाने के लिए भी हमारे खेल और खिलाड़ी भी एक नमूना हैं। अतः मजहब या धर्म का वजूद हमारे लिए पक्के तौर पर निजी मामला ही है। नीरज चोपड़ा से कुछ पीछे पिछली बार भी पाकिस्तान का खिलाड़ी अरशद नदीम रहा था और इस बार भी यह खिलाड़ी रजत पदक जीतने में सफल रहा। नीरज एवं अरशद की दोस्ती पर कटाक्ष करने वाले खेलों को भी साम्प्रदायिक रंग देने की कुचेष्टा करते हैं।

जब भी कोई नीरज भाला उठाता है तो अनूठी दूरी तय करता है, या कोई अर्जुन धनुष उठाता है, निशाना बांधता है तो दो सौ अस्सी करोड़ हाथ तन जाते हैं, एक सौ चालीस करोडों के मन में एक संकल्प, एक एकाग्रता का भाव जाग उठता है और कई नीरज पैदा होते हैं। अपने देश में हर बल्ला उठाने वाला अपने को गावस्कर-सचिन समझता है, हर बॉल पकड़ने वाला अपने को कपिल समझता है। हॉकी की स्टिक पकड़ने वाला हर खिलाड़ी अपने को ध्यानचंद, हर टेनिस का रेकेट पकड़ने वाला अपने को रामानाथन कृष्णन समझता है। और भी कई नाम हैं, मिल्खा सिंह, पी. टी. उषा, प्रकाश पादुकोन, गीत सेठी, जो माप बन गये हैं खेलों की ऊंचाई के। नीरज भी आज माप बन गया है और जो माप बन जाता है वह मनुष्य के उत्थान और प्रगति की श्रेष्ठ स्थिति है। यह अनुकरणीय है। जो भी कोई मूल्य स्थापित करता है, जो भी कोई पात्रता पैदा करता है, जो भी कोई सृजन करता है, जो देश का गौरव बढ़ाता है, जो गीतों में गाया जाता है, उसे सलाम। नीरज के भाले को सलाम! उसके संकल्प को नमन!! उसके विश्वास का अभिनन्दन!!!

हॉकी के जादूगर थे ध्यानचंद

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष 29 अगस्त को भारत में हॉकी के पूर्व कप्तान मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन को 'खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 29 अगस्त 1905 को जन्मे ध्यानचंद हॉकी के ऐसे महान खिलाड़ी और देशभक्त थे कि उनके करिश्माई खेल से प्रभावित होकर जब एक बार जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने उन्हें अपने देश जर्मनी की ओर से खेलने का न्यौता दिया तो ध्यानचंद ने उसे विनम्रतापूर्वक ठुकराकर सदा अपने देश के लिए खेलने का प्रण लिया। हालांकि उन्हें बचपन में खेलने का कोई शौक नहीं था और साधारण शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे सोलह साल की आयु में दिल्ली में सेना की प्रथम ब्राह्मण रेजीमेंट में सिपाही के रूप में भर्ती हो गए थे। सेना में भर्ती होने तक उनके दिल में हॉकी के प्रति कोई लगाव नहीं था। सेना में भर्ती होने के बाद उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया हॉकी खिलाड़ी सूबेदार मेजर तिवारी ने, जिनकी देखरेख में ही ध्यानचंद हॉकी खेलने लगे और बहुत थोड़े समय में ही हॉकी के ऐसे खिलाड़ी बन गए कि उनकी हॉकी स्टिक मैदान में दनादन गोल दागने लगी। उनकी हॉकी स्टिक से गेंद अक्सर इस कदर चिपकी रहती थी कि विरोधी टीम के खिलाड़ियों को लगता था, जैसे ध्यानचंद किसी जादुई हॉकी स्टिक से खेल रहे हैं। इसी शक के आधार पर एक बार हॉलैंड में उनकी हॉकी स्टिक तोड़कर भी देखी गई कि कहीं उसमें कोई चुम्बक या गोंद तो नहीं लगा है लेकिन किसी को कुछ नहीं मिला। उन्हें अपने जमाने का हॉकी का सबसे बेहतरीन खिलाड़ी माना जाता है, जिसमें गोल करने की कमाल की क्षमता थी। भारतीय ओलम्पिक संघ द्वारा ध्यानचंद को शताब्दी का खिलाड़ी घोषित किया गया था।

1922 में सेना में भर्ती होने के बाद से 1926 तक ध्यानचंद ने केवल आर्मी हॉकी और रेजीमेंट गेम्स खेले। उसके बाद उन्हें भारतीय सेना टीम के लिए चुना गया, जिसे न्यूजीलैंड में जाकर खेलना था। उस दौरान हुए कुल 21 मैचों में से उनकी टीम ने 18 मैच जीते जबकि दो मैच ड्रा हुए और केवल एक मैच उनकी टीम हारी। मैचों में ध्यानचंद के सराहनीय प्रदर्शन के कारण भारत लौटते ही उन्हें लांस नायक बना दिया गया और उन्हें सेना की हॉकी टीम में स्थायी जगह मिल गई। 1928 में एम्सटर्डम में होने वाले ओलम्पिक के लिए भारतीय टीम का चयन करने हेतु भारतीय हॉकी फेडरेशन द्वारा टूनामेंट का आयोजन किया गया, जिसमें कुल पांच टीमों ने हिस्सा लिया। ध्यानचंद को सेना द्वारा यूनाइटेड प्रोविंस की ओर से टूनामेंट में खेलने की अनुमति मिल गई और अपने शानदार प्रदर्शन के चलते उन्हें ओलम्पिक में हिस्सा लेने वाली टीम में जगह मिल गई। 1928, 1932 और 1936 के ओलम्पिक खेलों में ध्यानचंद ने न केवल भारत का नेतृत्व किया बल्कि लगातार तीनों ओलम्पिक में भारत को स्वर्ण पदक भी दिलाए।

भारत सरकार द्वारा मेजर ध्यानचंद के सम्मान में वर्ष 2002 में नेशनल स्टेडियम का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम कर दिया गया। ध्यानचंद इतने महान हॉकी खिलाड़ी थे कि वियना के स्पोर्ट्स क्लब में उनकी चार हाथों में चार हॉकी स्टिक लिए एक मूर्ति लगाई गई है और उन्हें एक देवता के रूप में दशार्या गया है। भारत में उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' घोषित किया गया है और इसी दिन विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

दो बार के ओलम्पिक चैम्पियन केशव दत्त का ध्यानचंद के बारे में कहना था कि वह हॉकी के मैदान को उस ढ़ंग से देख सकते थे, जैसे शतरंज का खिलाड़ी चेस बोर्ड को देखता है। इसी प्रकार भारतीय ओलम्पिक टीम के कप्तान रहे गुरूबख्श सिंह का कहना था कि 54 साल की उम्र में भी ध्यानचंद से भारतीय टीम का कोई भी खिलाड़ी बुली में उनसे गेंद नहीं छीन सकता था। मेजर ध्यानचंद ने 43 वर्ष की उम्र में वर्ष 1948 में अंतर्राष्ट्रीय हॉकी को अलविदा कहा। हॉकी में बेमिसाल प्रदर्शन के कारण ही उन्हें सेना में पदोन्नति मिलती गई और वे सूबेदार, लेफ्टिनेंट तथा कैप्टन बनने के बाद मेजर पद तक भी पहुंचे और 1956 में 51 वर्ष की आयु में सेना से मेजर पद से सेवानिवृत्त हुए। उसी वर्ष उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। सेवानिवृत्ति के बाद वे माउंट आबू में हॉकी कोच के रूप में कार्यरत रहे और बाद में कई वर्षों तक पाटियाला के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स में चीफ हॉकी कोच बन गए। 3 दिसम्बर 1979 को उन्होंने दिल्ली के एम्स में अंतिम सांस ली। अपने कैरियर में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ एक हजार से भी ज्यादा गोल दागे। भारत सरकार द्वारा मेजर ध्यानचंद के सम्मान में वर्ष 2002 में नेशनल स्टेडियम का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम कर दिया गया। ध्यानचंद इतने महान हॉकी खिलाड़ी थे कि वियना के स्पोर्ट्स क्लब में उनकी चार हाथों में चार हॉकी स्टिक लिए एक मूर्ति लगाई गई है और उन्हें एक देवता के रूप में दशार्या गया है। भारत में उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' घोषित किया गया है और इसी दिन विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

(लेखक 33 वर्षों से साहित्य एवं पत्रकारिता में निरन्तर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार तथा कई पुस्तकों के लेखक हैं)

पुरूषों के हक में सोच बदलने का एक सार्थक प्रयास है- अनुच्चारित

रावेल पुष्प

यह बात सही है की एक समय महिलाएं उत्पीड़न का शिकार होती रही हैं और वे हाशिये पर भी रहीं,इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए तमाम कानून तथा महिला आयोग भी बना। लेकिन आज बहुत सारी महिलाएं उन कानूनों का दुरूपयोग कर पुरुषों को ही प्रताड़ित कर रही हैं। अब उचित तो ये है कि एक बार फिर उन कानूनों की आज के सन्दर्भ में समीक्षा की जाए और ऐसे भी कानून बनें ताकि पुरुषों के साथ भी न्याय हो सके।

यह बात मान ली जाती है कि मर्द को दर्द नहीं होता, लेकिन ऐसी बात नहीं है वे पारिवारिक कलह जिसमें पत्नी द्वारा प्रताड़ना मुख्य है, जिस पर वे खुलकर बात भी नहीं कर पाते, इसकी एक तरफ तो लोक-लाज का भय दूसरा कई बार पौरूष भी आड़े आता है ।

इन सबको दरकिनार कर भी दिया जाए तो पुरुष की आवाज को सुनने को कोई तैयार नहीं - चाहे पुलिस थाना या कोर्ट कचहरी हो सब जगह कोई भी पुरुष के पक्ष में नहीं। आज तो स्थितियां ऐसी हो गई हैं कि अधिकतर एक विवाहित पुरुष हमेशा हार्ट अटैक की जद में रहते हैं या फिर आत्महत्या करने को मजबूर हो जाते हैं। अगर हम 2021 के आंकड़े देखें तो उसमें आत्महत्या करने वालों में 72% पुरुष थे और 27% महिलाएं, यानि लगभग तीन गुना पुरुषों ने आत्महत्या की।

एक पुरुष है जो अपने परिवार के लिए ही जीता मरता है, चाहे घर हो या कार्यालय अगर उस पर झूठे आरोप लगा दिए जाते हैं तो वो निराशा और हताशा का जीवन जीने को अभिशप्त हो जाता है ।

पुरूषों के मानसिक उत्पीड़न के लिए महिलाओं की तर्ज पर एक पुरुष आयोग के गठन की मांग इधर कुछ वर्षों से लगातार की जा रही है, लेकिन हाल ही में एक जनहित याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने निरस्त कर दिया, जिसमें घरेलू हिंसा के शिकार प्रताड़ित विवाहित पुरुषों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं से निपटने के लिए दिशा निर्देश तैयार करने तथा उनके हितों के लिए राष्ट्रीय पुरुष आयोग गठित करने की मांग की गई थी।

सरकारी स्तर पर भले ही कुछ न हुआ हो, लेकिन गैर सरकारी स्तर पर कुछ प्रयास जरूर हुए हैं , जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर एक संस्था है - परिवार कल्याण समिति और अब तो इस विषय पर पुरुष अधिकारों के लिए काम करने वाली एक्टिविस्ट दीपिका नारायण भारद्वाज ने एक डॉक्यूमेंट्री बनाई है जिसका नाम है - मारटेयर्स ऑफ मैरिज यानि विवाह के शहीद !

अब कोलकाता में भी पुरुषों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक संस्था सक्रिय हुई है जिसका नाम है- ऑल बंगाल मेंस फोरम और इससे जुड़ी एक्टिविस्ट है - नंदिनी भट्टाचार्य !

इसी पुरूष उत्पीड़न का एक पक्ष दशार्ती एक बांग्ला लघु फिल्म हाल ही में कोलकाता रोटरी सदन में प्रदर्शित की गई है और इसकी लेखक और निर्देशिका हैं- भास्वती राय और फिल्म का नाम है - अनुच्चारित यानि अनटोल्ड मतलब अनकहा !

भास्वती राय इसी तरह की सामाजिक समस्याओं पर पहले भी 5 फिल्में बना चुकी हैं और यह उनकी छठवीं फिल्म है,जो इस साल एशियन फिल्म फेस्टिवल-2023 में प्रदर्शित की गई है और उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला निर्देशक का पुरस्कार भी मिल चुका है।

फिल्म के मुख्य पात्रों की भूमिका में रिजू सेन के रूप में तुहिन मुखर्जी, पूजा चौधरी के रूप में सुलग्ना मुखर्जी, पुलिस अधिकारी की भूमिका में डॉ गौतम साहा तथा मां की भूमिका में लवली देवनाथ ने अपनी-अपनी भूमिका को बखूबी अंजाम दिया है। फिल्म के बीच-बीच में पुरुष अधिकारों के लिए संघर्षरत एक्टिविस्ट, डॉक्टर तथा वकील वगैरह के वक्तव्य कुछ जरूरी होते हुए भी फिल्म की मूल कथा के प्रवाह को अवश्य बाधित करते हैं। वैसे जो भी हो, पुरुषों के हक में सोच बदलने का एक सार्थक प्रयास है- अनुच्चारित !

इस फिल्म में एक मॉडल रिजू सेन,जिसे हर साल उसके प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ मॉडल घोषित किया जाता है और लाखों का पुरस्कार गाड़ी वगैरह मिलते हैं, लेकिन वहीं एक महिला मॉडल पूजा चौधरी हमेशा पीछे रह जाती है। वो इर्ष्यावश एक प्लान के तहत उस पर एसिड अटैक करती है ,जिससे उसका चेहरा बुरी तरह झुलस जाता है। इसके अलावा वो निर्णायक मंडली को भी कमीशन देने की शर्तों पर अपने लिए सर्वश्रेष्ठ मॉडल का खिताब अपने नाम घोषित करवाने में कामयाब हो जाती है।

इस एसिड अटैक की घटना की पुलिस जांच की फाईल कुछ खानापूर्ति कर बंद कर दी जाती है। लेकिन उसी महिला मॉडल का पिता जो एक पुलिस अधिकारी है और अब व्हील चेयर पर है,वो इस घटना की अपने तईं तहकीकात करता है और सबूत इकट्ठे कर फाइल पुनः खुलवाता है और सारे सुबूत उपलब्ध करवाता है। उसके बाद पुलिस द्वारा उसे गिरफ़्तार करने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और यहीं होता है फिल्म का समापन!

इस बीच पुरुष मॉडल बिल्कुल टूट जाता है और बिल्कुल एक जिंदा लाश में तब्दील हो जाता है। उसकी मां भले ही उसके बाद उसे उस स्थिति से उबारने का भरसक प्रयास करती है।

इस फिल्म में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के चलते एक महिला मॉडल द्वारा एसिड अटैक,एक मां द्वारा अपने बेटे को फिर से स्थापित करने की जद्दोजहद और एक कर्त्तव्यपरायण पुलिस अधिकारी की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

फिल्म के मुख्य पात्रों की भूमिका में रिजू सेन के रूप में तुहिन मुखर्जी, पूजा चौधरी के रूप में सुलग्ना मुखर्जी, पुलिस अधिकारी की भूमिका में डॉ गौतम साहा तथा मां की भूमिका में लवली देवनाथ ने अपनी-अपनी भूमिका को बखूबी अंजाम दिया है।

फिल्म के बीच-बीच में पुरुष अधिकारों के लिए संघर्षरत एक्टिविस्ट, डॉक्टर तथा वकील वगैरह के वक्तव्य कुछ जरूरी होते हुए भी फिल्म की मूल कथा के प्रवाह को अवश्य बाधित करते हैं। वैसे जो भी हो, पुरुषों के हक में सोच बदलने का एक सार्थक प्रयास है- अनुच्चारित !

प्रत्युषा सुसाइड केस में आया नया मोड़, पिता का दावा- बेटी ने नहीं की आत्महत्या

रविवार दिल्ली नेटवर्क

'बालिका वधू' की 'आनंदी' बनकर लोगों के दिलों में पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस प्रत्युषा बनर्जी ने साल 2016 में इस दुनिया को अलविदा कह दिया था, लेकिन आज भी लोग उन्हें खूब याद करते हैं।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक्ट्रेस ने बॉयफ्रेंड से मिले धोखे की वजह से परेशान होकर खुदकुशी जैसा कदम उठाया था। प्रत्युषा बनर्जी की आत्महत्या का मामला आज भी कोर्ट में चल रहा है। अब इस पर उनके पिता ने चुप्पी तोड़ी है और दावा किया है कि उनकी बेटी आत्महत्या नहीं कर सकती थी। तो चलिए जानते हैं कि पूरा मामला क्या है।

प्रत्युषा बनर्जी की आत्महत्या का मामला आज भी कोर्ट में चल रहा है। अब इस पर उनके पिता ने चुप्पी तोड़ी है और दावा किया है कि उनकी बेटी आत्महत्या नहीं कर सकती थी। तो चलिए जानते हैं कि पूरा मामला क्या है।

प्रत्युषा के पिता ने तोड़ी चुप्पी

पिछले दिनों खबर आई थी कि मुंबई की एक अदालत ने अभिनेत्री को आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोपी राहुल राज सिंह की आरोपमुक्ति की अर्जी खारिज करते हुए कहा है। अदालत ने कहा कि प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट है कि राहुल द्वारा शारीरिक, भावनात्मक और वित्तीय उत्पीड़न और शोषण ने मृतक को डिप्रेशन में डाल दिया था। राहुल ने प्रत्युषा को डिप्रेशन से निकालने के लिए कोई कदम नहीं उठाया था। इसलिए यह उकसाने के दायरे में तो आता है।

पिता ने बेटी के लिए मांगा इंसाफ

अब प्रत्युषा के पिता शंकर बनर्जी ने एक इंटरव्यू में अपनी बेटी के लिए इंसाफ की गुहार लगाते हुए कहा, 'इस केस को शुरू होने में ही आठ साल लग गए हैं। हम लोग शुरू से ही चीख-चीख कर कह रहें है कि हमारी बेटी ने सुसाइड नहीं किया है बल्कि उसका मर्डर हुआ है। इन चीजों को सामने आने में इतना समय लग गया है कि हमें कुछ समझ नहीं आ रहा है कि क्या कहा जाए, लेकिन हमें इंसाफ की उम्मीद है।'

शंकर बनर्जी ने कहा कि सच जरूर बाहर आएगा

शंकर बनर्जी ने आगे कहा कि मेरी बेटी का सच बाहर निकल कर जरूर आएगा ही। कोर्ट किसी का नहीं होता है। वहां जो सच होगा वो सबके सामने आ ही जाता है। मेरी बेटी को जरूर इंसाफ मिलेगा।

स्वामी, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक प्रमोद कुमार शर्मा द्वारा अर्चना प्रिंटर्स, डी-127, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कराकर 10 टॉप फ्लोर, नेहरू रोड, अपोजिट रामलीला ग्राउंड, केवल पार्क, आजादपुर, दिल्ली-33 से प्रकाशित किया। संपादक : प्रमोद कुमार शर्मा
संपादकीय कार्यालय : एलजी-40, लूसा टॉवर, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, रिंग रोड, आजादपुर, दिल्ली-110033, मोबाईल : 7503333111, 9873161501
मुख्य कार्यालय : रविवार दिल्ली, 10 टॉप फ्लोर, नेहरू रोड, केवल पार्क, आजादपुर, दिल्ली-110033